THE BOOK WAS DRENCHED

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

शब्द-संग्रह

द्वितीय भाग

राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़, आगरा
ने
प्रकाशित किया।

राधास्वामी संवत् १२१
सन् १९३९ ई०

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

शब्द-संग्रह

द्वितीय भाग

राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग़, आगरा
ने
प्रकाशित किया।

राधास्वामी संवत् १२१
सन् १९३९ ई०

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

शब्द-संग्रह

सूचीपत्र

शब्द-संग्रह

सूचीपत्र

(अकारादि क्रम से)

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

शब्द - संग्रह

(द्वितीय भाग)

शब्द व शब्दस्वरूप सतगुरु की महिमा का वर्णन

१—शब्द १

धन्य धन्य धन धन्य पियारे ।
क्या कहुँ महिमा शब्द की ॥ १ ॥
जो परचे[1] हैं शब्द से ।
सो जानें महिमा शब्द की ॥ २ ॥
छिन छिन रच्छा हो रही ।
क्या उपमा कहुँ मैं शब्द की ॥ ३ ॥
बिन शब्द फिरें भरमातियाँ ।
नहिं जानी गति मति शब्द की ॥ ४ ॥
जिन गुरु पाया शब्द का ।
और प्रीति करी जिन शब्द की ॥ ५ ॥

१—परच गये हैं अर्थात् जिन्हें शब्द का चसका लग गया है ।

बड़भागी वह जीव हैं।
जो करें कमाई शब्द की ॥ ६ ॥
बिना शब्द मन बस नहीं।
तुम सुरत करो अब शब्द की ॥ ७ ॥
वह क्यों आये इस जगत में।
जिन मिली न पूँजी शब्द की ॥ ८ ॥
धुन घट में हर दम हो रही।
क्यों सुने न बानी शब्द की ॥ ९ ॥
तू बैठ अकेला ध्यान धर।
तो मिले निशानी शब्द की ॥ १० ॥
तज आलस निद्रा काहिली[१]।
तू लगन लगा ले शब्द की ॥ ११ ॥
पाँच शब्द घट में बजें।
यह निरनय कर ले शब्द की ॥ १२ ॥
गुरु ज्ञान बताया शब्द का।
तू हो जा ध्यानी शब्द की ॥ १३ ॥
मैं शब्द शब्द बहुतक कहा।
कोई न माने शब्द की ॥ १४ ॥
जन्म अकारथ[२] खो दिया।
जो चढ़े न घाटी शब्द की ॥ १५ ॥

१—सुस्ती। २—व्यर्थ।

राधास्वामी कह कह चुप हुए।
बिन भाग न धारा शब्द की ॥ १६ ॥

१–शब्द २

गुरु की दया ले शब्द सँभार।
गुरु के सँग कर शब्द अधार ॥ १ ॥
शब्द लगावे तुझको पार।
बिना शब्द चौरासी धार ॥ २ ॥
शब्द कमाई करनी सार।
शब्द चढ़ावे दसवें द्वार ॥ ३ ॥
शब्द गुरू सँग कर ले प्यार।
और कर्म सब त्यागो झाड़ ॥ ४ ॥
शब्द बिना नहिं खेवनहार।
शब्दहि करता सबकी सार ॥ ५ ॥
शब्द शब्द का भेद नियार।
सो गुरु तुम से कहें सँभार ॥ ६ ॥
तू तो सुरत जमा नभ द्वार।
शब्द मिले छूटे जंजार ॥ ७ ॥
शब्द करे अब जग से पार।
शब्द माहिं तुम रहो हुशियार ॥ ८ ॥
शब्दहि शब्द करो निरवार।
शब्द बिना कोइ बचे न यार ॥ ९ ॥

शब्द हटावे सब अहंकार ।
शब्द छुड़ावे सभी बिकार ॥ १० ॥
शब्द बिना कुछ और न सार ।
मैं तोहि कहूँ पुकार पुकार ॥ ११ ॥
शब्द लगो मत बैठो हार ।
शब्द नाव चढ़ पहुँचो पार ॥ १२ ॥
शब्द किया जिस घट उजियार ।
धन वे जन जिन शब्द अधार ॥ १३ ॥
तू भी सुन चढ़ शब्द पुकार ।
शब्द होय फिर गल का हार ॥ १४ ॥
शब्द पकड़ और सब तज डार ।
बिना शब्द नहिं होत उधार[१] ॥ १५ ॥
शब्द भेद तू जान गँवार ।
क्यों भरमे तू मन की लार[२] ॥ १६ ॥
सुरत खैंच तक[३] तिल का द्वार ।
दहिनी दिशा शब्द की धार ॥ १७ ॥
बाईं दिशा[४] काल का जार[५] ।
ताहि छोड़ कर सुरत सँभार ॥ १८ ॥
घंटा संख सुनो कर प्यार ।
तिस के आगे धुन ओंकार ॥ १९ ॥

१—उद्धार । २—साथ । ३—देख । ४—ओर । ५—जाल ।

सुन्न माहिं धुन ररंकार।
भँवरगुफा मुरली झनकार ॥२०॥
सत्तलोक धुन बीन सँभार।
अलख अगम धुन कहूँ न पुकार ॥२१॥
राधास्वामी भेद सुनाया झाड़।
पकड़ धरो अब हिये मँझार ॥२२॥

१–शब्द ३

शब्द बिना सारा जग अंधा।
काटे कौन मोह का फंदा ॥ १ ॥
शब्द बिना बिरथा सब धंधा[1]।
शब्द बिना जिव बंधन बंधा ॥ २ ॥
शब्दहि सूर शब्द ही चंदा।
शब्द बिना जिव रहता गंदा ॥ ३ ॥
शब्द बिना सब ही मतिमंदा[2]।
शब्दहि नासिह[3] शब्दहि पंदा[4] ॥ ४ ॥
शब्द कमावे मिले अनंदा।
शब्द बिना सब ही की निंदा ॥ ५ ॥
ता ते शब्दहि शब्द कमाओ।
शब्द बिना कोइ और न ध्याओ ॥ ६ ॥

१—काम। २—मूर्ख। ३—उपदेशक। ४—उपदेश।

शब्द भेद तुम गुरु से पाओ ।
शब्द माहिं फिर जाय समाओ ॥ ७ ॥
शब्द अधर में करे उजारा ।
शब्द नगर तुम झाँको द्वारा ॥ ८ ॥
शब्द रहे सब ही से न्यारा ।
शब्द करे सब जीव गुज़ारा[1] ॥ ९ ॥
शब्द जानियो सबका सारा ।
शब्द मानियो होय उबारा ॥ १० ॥
शब्द कमाई कर हे मीत ।
शब्द प्रताप काल को जीत ॥ ११ ॥
शब्द घाट तू घट में देख ।
शब्दहि शब्द पीव को पेख ॥ १२ ॥
शब्द कर्म की रेख कटावे ।
शब्द शब्द से जाय मिलावे ॥ १३ ॥
शब्द बिना सब झूठा ज्ञान ।
शब्द बिना सब थोथा[2] ध्यान ॥ १४ ॥
शब्द छोड़ मत अरे अजान ।
राधास्वामी कहें बखान ॥ १५ ॥

१—निर्वाह । २—नि:सार, व्यर्थ ।

१—शब्द ४

शब्द की करो कमाई दम दम ।
शब्द सा और न कोई हमदम[1] ॥ १ ॥
शब्द को सुनो बंद कर सरवन ।
शब्द की गहो जाय धुन झम झम ॥ २ ॥
शब्द तेरी दूर करे सब हमहम[2] ।
शब्द को पाय गहो वहाँ सम सम ॥ ३ ॥
देखियो जोति उजाला चम चम ।
रहो फिर धुन में छिन छिन रम रम[3] ॥ ४ ॥
भोग सब त्यागे हुआ मन उपसम[4] ।
सुनी अब चढ़कर धुन जहाँ घम घम ॥ ५ ॥
कहें गुरु रह तू उसमें जम जम ।
बहुर सुन पाई इक धुन बम बम ॥ ६ ॥
सुरत फिर चढ़ी वहाँ से धम धम ।
सुन्न में पहुँची लइ धुन छम छम ॥ ७ ॥
और भी सुनी एक धुन खम खम ।
कहूँ क्या महिमा शब्द अगम गम ॥ ८ ॥
करूँ मैं जितनी ही सब कम कम ।
खोल कस कहूँ बात यह मुबहम[5] ॥ ९ ॥

१—मित्र। २—अहंकार। ३—मिले हुए। ४—उपरत। ५—गुप्त।

सुरत को मिली अधर की गम गम ।
पिया सँग बैठी करत परम रम[1] ॥ १० ॥
मिटा सब घट का अब ही तम तम ।
बरसने लागीं झड़ियाँ रिमझिम ॥ ११ ॥
तेज अब फैला घट में इम इम[2] ।
अमीरस चुआ चुए ज्यों शबनम[3] ॥ १२ ॥
हुआ मन सभी जतन से बरहम[4] ।
सुरत के लागी अब धुन मरहम ॥ १३ ॥
गुरू पर तन मन करूँ समर्पन ।
कहें अस राधास्वामी बचन दमादम[5] ॥ १४ ॥

१—शब्द ५

धुन सुन कर मन समझाई ॥ टेक ॥
कोटि जतन से यह नहिं माने ।
धुन सुन कर मन समझाई ॥ १ ॥
जोगी जुक्ति कमावें अपनी ।
ज्ञानी ज्ञान कराई ॥ २ ॥
तपसी तप कर थाक रहे हैं ।
जती[6] रहे जत[7] लाई ॥ ३ ॥

१—बिलास । २—ऐसा । ३—ओस । ४—असंतुष्ट । ५—धड़ाधड़ ।
६—इन्द्रियों को दमन करने वाला । ७—इन्द्रियों को दमन करना ।

ध्यानी ध्यान मानसी लावें।
वह भी धक्का खाई ॥ ४ ॥
पंडित पढ़ पढ़ बेद बखानें।
बिद्या बल सब जाई ॥ ५ ॥
बुद्धि चतुरता काम न आवे।
आलिम[1] रहे पछताई ॥ ६ ॥
और अमल[2] का दख़ल नहीं है।
अमल शब्द लौ लाई ॥ ७ ॥
गुरू मिले जब धुन का भेदी।
शिष्य बिरह धर आई ॥ ८ ॥
सुरत शब्द की होय कमाई।
तब मन कुछ ठहराई ॥ ९ ॥
हिर्स[3] हवस से हाथ न आवे।
तन मन देव चढ़ाई ॥ १० ॥
बुलहवसी[4] और कपटी जन को।
नेक[5] न धुन पतियाई ॥ ११ ॥
यह धुन है धुर लोक अधर की।
कोइ पकड़ें संत सिपाही ॥ १२ ॥
मन को मार करें असवारी।
गगन कोट वह लेयँ घिराई ॥ १३ ॥

१—विद्यावान्। २—साधन। ३—देखा देखी उत्पन्न होने वाली इच्छा।
४—हिर्सी। ५—ज़रा भी।

खाई सुन्न पार मैदाना ।
महासुन्न नाका परमाना ॥ १४ ॥
भँवरगुफा का फाटक तोड़ा ।
शीशमहल सतगुरु दिखलाई ॥ १५ ॥
अद्भुत लीला अजब वहाँ की ।
किरन किरन सूरज दरसाई ॥ १६ ॥
सूरज सूरज जोति निरारी[1] ।
चंद्र चंद्र कोटिन छबि छाई ॥ १७ ॥
घट अकाश औघट परकाशा ।
लख अकाश कोटिन परसाई ॥ १८ ॥
यह लीला कुछ अजब पेच की ।
उलट पलट कोइ गुरुमुख पाई ॥ १९ ॥
कहाँ लग बरनूँ भेद अगाधा ।
जो कोइ लावे सुन्न समाधा ॥ २० ॥
समझ बूझ गूँगे गुड़ खाई ।
अकथ अकह की बात निराली
क्योंकर कहूँ बनाई ॥ २१ ॥
राधास्वामी राज़[2] छिपे को ।
परघट कर सरसाई ॥ २२ ॥

१—जुदा जुदा । २—भेद ।

१-शब्द ६

खोजत रही पियापंथ, मर्म कोइ नेक न गाया।
रैन दिवस बेचैन, तरसते जन्म बिताया ॥ १ ॥
करता रहा पुकार, दाद को कहीं न पाया।
भेष भिखारी जगत गुरू, सब भरमें माया ॥ २ ॥
शब्द बिना खाली फिरें, सब धोखा खाया।
अब मिल गये पूरे सतगुरू, उन भेद सुनाया ॥ ३ ॥
सुरत सार लखवाय के, फिर गगन चढ़ाया।
गगन मँडल में पहुँच कर, अनहद बजवाया ॥ ४ ॥
जपी तपी मौनी बकी जत[1] जोग चलाया।
यह मारग कोइ ना कहे, दुर्लभ दरसाया ॥ ५ ॥
धन्य संत और सतगुरू, जिन सार बुझाया।
मनमत जग में फैलिया, गुरुमत नहिं आया ॥ ६ ॥
सुरतवंत बिरले कोई, जिन शब्द कमाया।
राधास्वामी भेद दे, सब जीव चिताया ॥ ७ ॥

२-शब्द ७

उमँग कर सुनो शब्द घट सार ॥ टेक ॥
यह धुन है धुर लोक की धारा।
इसने रचन रचाई झार[2] ॥ १ ॥

१—यत्न। २—तमाम।

अगम रूप और अलख सरूपा ।
सत्त रूप सत शब्द बिचार ॥ २ ॥
शब्द हुआ तिरलोकी कारन ।
शब्दहि घट घट करे पुकार ॥ ३ ॥
शब्द डोर धुर पद से लागी ।
शब्द पकड़ सुर्त जावे पार ॥ ४ ॥
शब्द भेद और जुगत चलन की ।
सतगुरु तोहि बतावें यार ॥ ५ ॥
याते खोज करो सतगुरु का ।
उन मिल कर अभ्यास सँभार ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन सरन हिये धारो ।
पहुँचावें तोहि निज घरबार ॥ ७ ॥

२-शब्द ८

अरी हे सहेली प्यारी, घट में शब्द जगाओ,
शब्दहि करे निरवारा ॥ टेक ॥
सतगुरु खोज पड़ो उन चरना ।
सुन सुन बचन चित्त में धरना ॥
वे तोहि लेहिं सुधारा ॥ १ ॥
शब्द भेद गुरु देहिं बताई ।
धुन में मन और सुरत लगाई ॥
सुन अनहद झनकारा ॥ २ ॥

गुरु चरनन में प्रीति बढ़ाना।
उमँग सहित नित शब्द कमाना॥
घट में होत उजारा॥ ३॥
मन माया के बिघन हटाओ।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाओ॥
निरखो अजब बहारा॥ ४॥
राधास्वामी सूरत लीन सिंगारी।
तब भौसागर पार सिधारी॥
अस हुआ सहज उधारा॥ ५॥

परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी दयाल के चरणकमल में आरती

१–शब्द ६

हे राधा[1] तुम गति अति भारी।
हे स्वामी तुम धाम अपारी॥
राधास्वामी दोउ मोहिं गोद बिठारी॥ १॥
राधा चरन गहे मैं आ री।
स्वामी सरन हुई गति न्यारी॥
राधास्वामी की हुइ मैं प्यारी॥ २॥

१—आदि सुरत।

राधा अंतर दया बिचारी ।
स्वामी परगट किया उबारी[१] ॥
राधास्वामी मिल कर मोहिं सँवारी ॥ ३ ॥
राधा पल पल नाम रटा री ।
स्वामी तिल तिल रूप निहारी ॥
राधास्वामी मुझको किया अपना री ॥ ४ ॥
राधा गुन क्या कहूँ पुकारी ।
स्वामी महिमा अकह अपारी ॥
राधास्वामी अब मोहिं लीन सुधारी ॥ ५ ॥
राधा दरस कठिन गहिरा री ।
स्वामी बचन सुनत मोहा री ॥
राधास्वामी अब के लिया उबारी ॥ ६ ॥
राधा बल मन हार गया री ।
स्वामी बल में गगन चढ़ा री ॥
राधास्वामी कीन्ही मेहर करारी[२] ॥ ७ ॥
राधा आरत करूँ सिंगारी ।
स्वामी संग आरती धारी ॥
राधास्वामी आरत करन बिचारी ॥ ८ ॥
राधा चरन सिंघासन धारी ।
स्वामी चरन सँभार पखारी[३] ॥
राधास्वामी चरन अब मिला अधारी ॥ ९ ॥

१—उद्धार । २—गहिरी । ३—धोये ।

राधा दृष्टि दया कर डारी ।
स्वामी मेहर करी अब न्यारी ॥
राधास्वामी कीन मोर उपकारी ॥ १० ॥
राधा गल अब हार चढ़ा री ।
स्वामी सीतल तिलक लगा री ॥
राधास्वामी पूजन[1] आज करा री ॥ ११ ॥
राधा आगे भोग धरा री ।
स्वामी सन्मुख थाल भरा री ॥
राधास्वामी दोनों मान लिया री ॥ १२ ॥
राधा अमर चीर पहिना री ।
स्वामी अजर बस्त्र तन धारी ॥
राधास्वामी शोभा अगम अपारी ॥ १३ ॥
राधा आरत अब हुइ भारी ।
स्वामी चित में हर्ष बढ़ा री ॥
राधास्वामी चरनन आन पड़ा री ॥ १४ ॥
राधा दिया परशाद दया री ।
स्वामी मेहर करी कुछ न्यारी ॥
राधास्वामी पर मैं जाऊँ बलिहारी ॥ १५ ॥
परथम[2] आरत राधा धारी ।
फिर आरत मैं स्वामी सँभारी ॥
राधास्वामी आरत कर लइ सारी ॥ १६ ॥

१—पूजा । २—पहले ।

राधा अपना धाम दिया री ।
स्वामी चरनन माहिं लिया री ॥
राधास्वामी दोनों पार किया री ॥१७॥

१–शब्द १०

राधास्वामी मेरे सिंध[1] गंभीर ।
कोइ थाह न पावत बीर ॥ १ ॥
रतनन के भरे भंडार ।
जहाँ लाल अमोलक सार ॥ २ ॥
सुर्त मीन करे जहाँ केल[2] ।
कल काल धरे जहाँ पेल ॥ ३ ॥
घट प्रेम धार अब उमँगी ।
रस सार पिये कोइ संगी ॥ ४ ॥
तिल[3] उलट चली सुर्त प्यारी ।
देखी वहाँ जोति उजारी ॥ ५ ॥
दल द्वार खोल कर पैठी[4] ।
नल पार अविद्या ऐंठी ॥ ६ ॥
माया का चक्र हटाया ।
ब्रह्म दरस सहज में पाया ॥ ७ ॥
धुन अनहद सार बजाया ।
सुन भीतर शब्द जगाया ॥ ८ ॥

१—समुद्र । २—कुलेल । ३—तीसरा तिल । ४—घुसी ।

गुरु पर अब तन मन वारूँ ।
गुन गावत कभी न हारूँ ॥ ६ ॥
क्या महिमा गुरुपद गाऊँ ।
मैं नित नित बल बल जाऊँ ॥ १० ॥
गुरु मूरति रिदे[1] छिपाऊँ ।
मन अंदर द्वार खुलाऊँ ॥ ११ ॥
गुरु संग लिये मोहि जावें ।
सत रूप अधर दरसावें ॥ १२ ॥
कँवलन के बाग़ दिखावें ।
हंसन सँग केल करावें ॥ १३ ॥
वह आनँद कहत न जाई ।
सुर्त भीज रही छबि छाई ॥ १४ ॥
अमृत रस झड़ी[2] लगाई ।
छिन छिन पर धार चुवाई ॥ १५ ॥
मन ग़ोता खावत भारी ।
सुर्त जागी मिटी अँधियारी ॥ १६ ॥
कोइ सज्जन प्रेम बिलासी ।
देखत और खेलत पासी ॥ १७ ॥
गुरु बचन सुनत मैं हाँसी ।
हुइ राधास्वामी चरन निवासी ॥ १८ ॥

१—हृदय। २—वर्षा।

दम दम में प्रेम बढ़ाती ।
गुरु मूरति अजब दिखाती ॥ १९ ॥
मैं नैन परान गँवाती[1] ।
तन मन की सुधि बिसराती ॥ २० ॥
गुरु मूरति अधिक सुहाती ।
ज्यों चंद्र चकोर समाती ॥ २१ ॥
राधास्वामी मौज दिखाई ।
मैं चरन धूर होय धाई ॥ २२ ॥

१-शब्द ११

आज साज कर आरत लाई ।
प्रेमनगर बिच फिरी है दुहाई ॥ १ ॥
बिरह बिथा के लुट गये डेरे ।
मिल गये राधास्वामी बिछड़े मेरे ॥ २ ॥
हिरदा थाल सुरत की बाती ।
शब्द जोति में नित्त जगाती ॥ ३ ॥
आरत फेरूँ सन्मुख ठाढ़ी ।
प्रीति उमँग मेरी छिन छिन बाढ़ी ॥ ४ ॥
तन नगरी बिच बजत ढँढोरा ।
भागे चोर ज़ोर भया थोड़ा ॥ ५ ॥

१—प्राणों को वार देती हूँ ।

सील छिमा आय थाना[1] गाड़ा।
काम क्रोध पर पड़ गया धाड़ा[2] ॥ ६ ॥
स्वामी मेहर करी अब भारी।
मैं भी उन चरनन बलिहारी ॥ ७ ॥
अब तो सरन पड़ी राधास्वामी।
राखो सँग सदा अंतरजामी ॥ ८ ॥
मेरे और न कोई दूजा[3]।
मेरे निसदिन तुम्हरी पूजा ॥ ९ ॥
तुम बिन और न कोई जानूँ।
छिन छिन मन में तुमको मानूँ ॥ १० ॥
मैं मछली तुम नीर अपारा।
केल[4] करूँ मैं तुम्हरी लारा[5] ॥ ११ ॥
मैं पपिहा तुम स्वाँति के बादल।
सुख पाये दुख गये हैं रसातल[6] ॥ १२ ॥
तुम चंदा मैं कमोदन हीनी[7]।
तुम्हरी लगन[8] मैं निसदिन भीनी[9] ॥ १३ ॥
मैं धरनी तुम गगन बिराजे।
कैसे मिलूँ मैं तुम सँग आजे ॥ १४ ॥
सुरत निरत से चढ़ कर धाऊँ।
कभी न छोड़ूँ अस लिपटाऊँ ॥ १५ ॥

१—स्थान, अड्डा। २—डाका। ३—दूसरा। ४—क्रीड़ा, कुकेल। ५—साथ।
६—मिट्टी में मिल गये। ७—दीन, बेचारी। ८—प्रेम। ९—सरबोर हूँ।

मैं गुरुव्रतीं[1] राधास्वामी के चरन की ।
लाज रखो मेरी काल से अब की ॥ १६ ॥
तुम्हरे बल से भई हूँ निचिन्ती ।
अब मन में नहिं शंका धरती ॥ १७ ॥
सूर किया स्वामी खेत जिताया ।
मार लिया मैंने मन और माया ॥ १८ ॥
ख़ाक मिला सब कपट ख़ज़ाना ।
भाग गया दल मोह पुराना ॥ १९ ॥
गढ़[2] त्रिकुटी अब चढ़ कर लीन्हा ।
सुन्न शिखर पर डंका दीन्हा ॥ २० ॥
सिंध महासुन बीच में आया ।
सतगुरु कृपा ने दीन तराया[3] ॥ २१ ॥
भँवरगुफा के महल बिराजी ।
सत्तलोक चढ़ अचरज गाजी ॥ २२ ॥
अलख लोक में सूरत साजी ।
अगम लोक को छिन में भाजी[4] ॥ २३ ॥
पोहप[5] सिंहासन क्या कहूँ महिमा ।
जहाँ राधास्वामी ने धारे चरना ॥ २४ ॥
उन चरनन पर जाय लिपटानी ।
आगे अकह की क्या कहूँ बानी ॥ २५ ॥

१—गुरु की आज्ञा में चलने वाली । २—क़िला । ३—पार करा दिया ।
४—भागी । ५—पुष्प, फूल ।

अब आरत मैं कीन्ही पूरी।
भाषा[1] भेद अगम गम[2] मूरी[3] ॥२६॥
राधास्वामी की चरन धूर धर।
आय गई अपने मैं निज घर ॥२७॥

१-शब्द १२

यह आरत दासी रची, प्रेम सिंध की धार।
धारा उमँगी प्रेम की, जाका वार न पार ॥ १ ॥
सन्मुख ठाड़ी होय कर, बिनती करूँ पुकार।
भागहीन मैं क्यों हुई, स्वामी तुम दरबार ॥ २ ॥
तुम से दाता कोइ नहीं, सब को लीन्हा तार।
मुझ अपराधिन[4] हीन[5] की, अभी न आई बार[6] ॥ ३ ॥
मैं तड़पी तुम दरस को, जैसे चंद चकोर।
सीप चहै जिमि[7] स्वाँति को, मोर चहै घनघोर[8] ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

तुम दीपक मैं भइ हूँ पतंगा।
भस्म किया मन तुम्हरे संगा ॥ ५ ॥
तुम भृङ्गी मैं कीट अधीना।
मिल गये राधास्वामी अति परबीना ॥ ६ ॥

१—बयान किया। २—(मनुष्यों की) पहुँच के परे। ३—मूल, असली।
४—पापिन। ५—नीच। ६—बारी। ७—जैसे। ८—बादल की गरज।

तुम चंदन मैं भइ हुँ भुवंगन[1]।
सीतल भइ लग तुम्हरे चरनन ॥ ७ ॥
तुम समुद्र मैं लहर तुम्हारी।
तुम से उठ फिर तुमहिं सँभारी ॥ ८ ॥
तुम सूरज मैं किरनी आई।
तुमसे निकसी तुमहिं समाई ॥ ९ ॥
तुम मोती मैं भी भइ धागा।
संग तुम्हारा कभी न त्यागा ॥ १० ॥
अब तो कृपा करो राधास्वामी।
तुम हो घट घट अंतरजामी ॥ ११ ॥
तुम चंदा मैं कला तुम्हारी।
घाट बाढ़ तुम्हरो आधारी ॥ १२ ॥
मैं बाली तुम पित और माता।
तुम्हरी गोद खेलूँ दिन राता ॥ १३ ॥
नैन थाल और दृष्टी जोती।
पलकन छड़ी खड़ी कर लेती ॥ १४ ॥
प्रेम नीर का घी अब डारूँ।
आरत तुम्हरे सन्मुख वारूँ ॥ १५ ॥
घंटा संख नाद धुन गाजा।
बीन बाँसरी अचरज बाजा ॥ १६ ॥

१—साँपिन।

ताल मृदंग किंगरी धधकी[1] ।
ढोल पखावज छिन छिन खड़की[2] ॥ १७ ॥
सहस धार अमृत की बरखा ।
गगन मँडल फिरे जैसे चरख़ा ॥ १८ ॥
घुमँड़ घुमँड़ होवै बलिहारी ।
आरत शोभा अब भइ भारी ॥ १९ ॥
समा बँधा कुछ कहा न जाई ।
सतसंगी मिल आरत गाई ॥ २० ॥
हीरे लाल नौछावर होई ।
माणिक मोती लड़ियाँ पोई ॥ २१ ॥
फल और फूल जहाँ अति राजें[3] ।
राधास्वामी जहाँ बिराजें ॥ २२ ॥
मगन हुआ अब तन मन मेरा ।
राधास्वामी छिन छिन हेरा ॥ २३ ॥
आरत कीन्ही अब मैं पूरी ।
देओ परशाद अमी रस मूरी ॥ २४ ॥
प्रेम धजा[4] अब गगन फहराई ।
धुन धधकार अगम से आई ॥ २५ ॥

१—बजी। २—बजी। ३—शोभा देते हैं। ४—झंडा।

१-शब्द १३

सुरत सखी आज करत आरती ।
शब्द गुरू मन अपने धारती ॥ १ ॥
निरत[१] दीप का किया उजाला ।
रोई माया मुर गया[२] काला ॥ २ ॥
बिरत[३] बिबेक थाल लिया हाथा ।
मद और मोह झुकाया माथा ॥ ३ ॥
दीन ग़रीबी आन समाई ।
कुटिल कपट अब दूर बहाई ॥ ४ ॥
प्रेम भक्ति की जोति जगाई ।
लेकर सन्मुख स्वामी आई ॥ ५ ॥
फेरत आरत घेरत मन को ।
टेरत राधास्वामी चली धुन घन को ॥ ६ ॥
घोर[४] उठा घट भीतर भारी ।
उमँगा हिरदा चोट करारी[५] ॥ ७ ॥
जिगर फटा दिल टुकड़े हुआ ।
तब राधास्वामी का दर्शन लिया ॥ ८ ॥
ऐसे कठिन स्वामी दर्शन पाये ।
कर्म भर्म सब दूर नसाये ॥ ९ ॥

१—सुरत का निर्णय करने वाला अंग । २—मुरझा गया । ३—वृत्ति ।
४—शब्द । ५—तेज़ ।

प्रेम भक्ति की धारा छूटी।
काम क्रोध की गठरी लूटी ॥ १० ॥
मान मनी की मटकी फूटी।
जगत बासना सब ही छूटी ॥ ११ ॥
तत्त पाँच परकिर्त[1] पचीसा।
गुन तीनों धर पटको सीसा[2] ॥ १२ ॥
सुरत छूट चढ़ी गगनमँडल को।
घेर लिया जाय कालमँडल को ॥ १३ ॥
जीत लिया गढ़ सुन्नमँडल को।
धार लिया मन अगममँडल को ॥ १४ ॥
मैं लोहा पारस राधास्वामी।
पारस परस[3] गई निज धामी ॥ १५ ॥
मैं भुवंग[4] तुम हो मणि[5] मेरे।
तेज[6] तुम्हारे सुक्ख घनेरे[7] ॥ १६ ॥
मैं कँवला तुम सूर प्रकाशी।
दरस तुम्हारे पाऊँ हुलासी[8] ॥ १७ ॥
मैं सरवर[9] तुम कँवल अनूपा।
शोभा पाऊँ मैं तुम्हरे रूपा ॥ १८ ॥
तुम सरवर मैं भइ हूँ हंसला[10]।
मोती चुगूँ और देखूँ लीला ॥ १९ ॥

१—प्रकृतियाँ। २—सिर पीटें। ३—स्पर्श करके। ४—साँप। ५—साँप की मणि। ६—प्रकाश। ७—बहुत। ८—आनन्द। ९—तालाब। १०—हंस।

मैं प्यासी तुम अमृतधारा ।
मैं भूखी तुम्हरा अगम भँडारा ॥ २० ॥
अगम आरती ऐसी गाई ।
बिरह भाव की धार बहाई ॥ २१ ॥
कूड़ा करकट सभी जलाया ।
महल आपना साफ़ कराया ॥ २२ ॥
मुझ सी बिरहिन और न कोई ।
मैं सब अपनी गति मति खोई ॥ २३ ॥
घर फूँका और लीन्हा लूका[1] ।
तीन लोक को छिन में थूका ॥ २४ ॥
सत्तलोक का पाया कूका[2] ।
अब कीन्हा मैंने काल का टूका[3] ॥ २५ ॥
पाया सतगुरु चरन निवासा ।
होत सदा अब बिमल बिलासा ॥ २६ ॥
महिमा ताकी कही न जाई ।
गूँगे का गुड़ हो गया भाई ॥ २७ ॥

१-शब्द १४

तिल भीतर दिल जोड़ ।
कँवल में आसन करिये ॥ १ ॥

१—पलीता, जिससे आग लगाई जाती है । २—शब्द । ३—टुकड़े टुकड़े ।

दृष्टि उलट असमान ।
जोति फुलवारी खिलिये ॥ २ ॥
बाजे शब्द अनाहदी ।
घट मंगल भरिये ॥ ३ ॥
सुरत शिखर चढ़ गई ।
बंक में छिन छिन धरिये ॥ ४ ॥
कँवल तिरकुटी पाय ।
भँवर मन कारज सरिये ॥ ५ ॥
ररंकार धुन सुनी ।
काल दल मार गिरइये ॥ ६ ॥
संत कृपा अब हुई ।
घाट घट सब ही खुलिये ॥ ७ ॥
यह मारग निज पीव का ।
बिन भाग न मिलिये ॥ ८ ॥
कौतुक क़ुदरत धार ।
प्रेम का खेल खिलइये ॥ ९ ॥
घट पट लीला देख ।
अमीरस धार बहइये ॥ १० ॥
निज भक्तन के काज ।
पंथ यह नया चलइये ॥ ११ ॥
बेद न जाने भेद ।
कर्म बस यों ही बहिये ॥ १२ ॥

यह मारग निज संत का ।
सतसँग से पइये ॥ १३ ॥
सतगुरु की कर आरती ।
उन बहुत रिझइये ॥ १४ ॥
राधास्वामी दया से ।
पूरन पद पइये ॥ १५ ॥

१–शब्द १५

गुरु मिले परम पद दानी ।
क्या गति मति उनकी करूँ बखानी ॥ १ ॥
मैं अजान महिमा नहिं जानी ।
बिना मेहर क्योंकर पहिचानी ॥ २ ॥
गति अति गोप[1] न जाने बेदा ।
ज्ञान जोग कर मिले न भेदा ॥ ३ ॥
पद उनका इनसे रहे दूरी ।
यह तो थक रहे काल हज़ूरी ॥ ४ ॥
वह दयालपद अगम अपारा ।
तीन सुन्न आगे रहा न्यारा ॥ ५ ॥
संत बिना कोइ भेद न जाने ।
उस घर से वह आय बखानें ॥ ६ ॥

१—गुप्त ।

मैं भी उन चरनन कर दासा ।
भई परतीत बँधी पद आसा ॥ ७ ॥
सुरत शब्द मारग मोहि दीन्हा ।
किरपा कर अपना कर लीन्हा ॥ ८ ॥
नित अभ्यास करूँ मैं ये ही ।
इक दिन पाऊँ शब्द बिदेही[1] ॥ ६ ॥
सतगुरु मेरे परम दयाला ।
करूँ आरती होउँ निहाला ॥ १० ॥
आतम थाल परमातम जोती ।
सत्तनाम पद पोया मोती ॥ ११ ॥
भाव भक्ति से आरत कीनी ।
पद सतगुरु जल में भइ मीनी[2] ॥ १२ ॥
यह आरत अब पूरन भई ।
आगे कुछ कहनी नहिं रही ॥ १३ ॥

१–शब्द १६

आज मेरे आनँद होत अपार ।
आरती गावत हूँ गुरु सार ॥ १ ॥
किया मैं अचरज प्रेम सिंगार ।
बिराजे सतगुरु बस्तर धार ॥ २ ॥

१—सूक्ष्म, आकार रहित । २—मछली ।

दरस उन करूँ सँभार सँभार ।
गाऊँ गुन उनका बारंबार ॥ ३ ॥
आओ री सखियो जुड़ मिल झाड़[1] ।
गाओ और दरशन करो निहार ॥ ४ ॥
गुरू मेरे बैठे पलँग सँवार ।
आज मेरा जागा भाग अपार ॥ ५ ॥
रही मैं गुरु के सनमुख ठाड़[2] ।
करूँ मैं उन चरनन आधार ॥ ६ ॥
चाहूँ नहिं दूसर से उपकार ।
गुरू की बाँधी टेक सँभार ॥ ७ ॥
गुरू पर डारूँ तन मन वार ।
बचन पर उनके रहूँ हुशियार ॥ ८ ॥
कर्म सब दीन्हे गुरु ने जार ।
उतारा नौका दे भौ पार ॥ ९ ॥
सुरत को शब्द सुनाई धार ।
गगन चढ़ पहुँची घर करतार ॥ १० ॥
पिंड को छोड़ा चढ़ी मुनार[3] ।
हुई अति निरमल छुटा गुबार[4] ॥ ११ ॥
नाम की सुनी जाय धधकार ।
बाँसरी सुनी नई झनकार ॥ १२ ॥

१—सब । २—खड़ी । ३—चोटी पर । ४—गर्द, धूल ।

सुरत और निरत लगाया तार।
गई अब चौथे पद के पार ॥१३॥
मिला राधास्वामी का दीदार[1]।
करूँ अब निसदिन उन दरबार ॥१४॥

१-शब्द १७

उठी अभिलाषा इक मन मोर।
करूँ अब आरत गुरु की जोर ॥ १ ॥
प्रेम की थाली लूँगी हाथ।
शब्द की जोति जगाऊँ साथ ॥ २ ॥
सुरत को बाँधूँगी अब तान[2]।
रूप गुरु निरखूँगी अब आन[3] ॥ ३ ॥
बचन कर[4] महिमा करूँ बखान।
चरन गुरु हिरदे लाऊँ ध्यान ॥ ४ ॥
गुरू बिन और न काहू मान।
सरन में उनके पड़ी निदान[5] ॥ ५ ॥
करें गुरु खेवा[6] मेरा पार।
बचावें डूबत हूँ मँझधार ॥ ६ ॥
पकड़ अब लेना भुजा पसार।
जक्त का मेटो सभी गुबार ॥ ७ ॥

१—दर्शन। २—खींचकर। ३—आकर। ४—की। ५—आख़िर। ६—बेड़ा।

सुरत को लीजे आज सँभार ।
चढ़ूँ और झाँकूँ नभ का द्वार ॥ ८ ॥
निरंजन जोति लखूँ उजियार ।
सहसदल छोड़ बंक के पार ॥ ९ ॥
घाट फिर त्रिकुटी लेउँ निहार ।
सुन्न चढ़ खोलूँ बज्र किवाड़ ॥ १० ॥
महासुन पहुँचूँ सतगुरु लार[1] ।
भँवर चढ़ पकड़ूँ बंसी धार ॥ ११ ॥
सच्च खँड आई बीन सँभार ।
अलख और अगम किया दरबार ॥ १२ ॥
किया राधास्वामी मुझ से प्यार ।
हुई मैं उन पर अब बलिहार ॥ १३ ॥
करूँ मैं आरत लूँ आनंद ।
मिला मोहि आज परमानन्द ॥ १४ ॥

१-शब्द १८

सतगुरु की अब करूँ आरती ।
जगा भाग और रहूँ जागती ॥ १ ॥
दिन दिन प्रीति पदारथ लाती ।
बढ़ी उमँग अब कहाँ छिपाती ॥ २ ॥

१—साथ ।

देख सारदा[1] निपट[2] लजाती ।
सतगुरु महिमा कही न जाती ॥ ३ ॥
जब जब दरस गुरू का पाती ।
तन मन धन सब अर्प धराती[3] ॥ ४ ॥
अस आरत मैं करूँ बनाई ।
संत सरन मैं निज कर पाई ॥ ५ ॥
काल दुष्ट इक बिघन लगाई ।
उलटी मोको[4] देश पठाई ॥ ६ ॥
मैं गुरु मूरति हिरदे धारी ।
पल पल छिन छिन करूँ अधारी ॥ ७ ॥
तब तो काल रहे मुरझाई ।
बिरह प्रेम बल मार गिराई ॥ ८ ॥
दूर रहूँ सतगुरु उर धारूँ ।
काल बिघन सब दूर निकारूँ ॥ ९ ॥
मैं सतगुरु बल लीन्हा हाथा ।
फोड़ूँ काल करम का माथा ॥१०॥
अब छिन छिन यह आरत गाऊँ ।
सतगुरु चरनन नित बलि जाऊँ ॥११॥
तन तो रहे देश के माहीं ।
मन तो रहे चरन की छाहीं ॥१२॥

१—सरस्वती । २—अत्यन्त । ३—अर्पण करती । ४—मुझको ।

यों दम दम गुरु पास बसानी।
अब क्या बिघन करे मेरी हानी ॥१३॥
राधास्वामी मूरति हिरदे धारी।
छिन छिन देखूँ नैन उघारी[1] ॥१४॥

२—शब्द १६

सुरत सुहागिन करत आरती।
तन मन धन गुरु चरन वारती[2] ॥ १ ॥
कँवल कियारी थाल सजाती।
धुन फुलवार जोति जगवाती ॥ २ ॥
फूल फूल कर सन्मुख आती।
कली कली मन बिगस धराती ॥ ३ ॥
गुरु दरशन कर अति हरषाती।
भूषन बस्तर बहु पहिनाती ॥ ४ ॥
गुरु शोभा मन अधिक सुहाती।
उमँग बढ़ाय गगन को जाती ॥ ५ ॥
सहसकँवल फुलवार खिलाती।
त्रिकुटी चढ़ गुरु दरशन पाती ॥ ६ ॥
सुरत चमेली सुन में खिलाती।
भँवरगुफा चढ़ बंस[3] बजाती ॥ ७ ॥

१—खोल कर। २—न्यौछावर करती है। ३—बाँसुरी।

सूरजमुखी सेत दरसाती ।
सत्तलोक धुन बीन सुनाती ॥ ८ ॥
अलख अगम के पार पराती ।
परम पुरुष का दरशन पाती ॥ ९ ॥
आरत कर गुरु बहुत रिझाती[1] ।
दया मेहर परशादी पाती ॥ १० ॥
तन मन से नाता तुड़वाती ।
राधास्वामी चरनन माँहि समाती ॥ ११ ॥

२–शब्द २०

सखी री मेरे भाग जगे ।
मैंने सतगुरु पाये री ॥ १ ॥
करम भरम संशय सब काटे ।
मोहि चरन लगाये री ॥ २ ॥
प्रेम रूप प्यारे राधास्वामी मेरे ।
क्या महिमा गाये री ॥ ३ ॥
चरन सरन दे अपना कीन्हा ।
मेरा प्रेम बढ़ाये री ॥ ४ ॥
सब जग पड़ा काल के फंदे ।
नित करम चढ़ाये री ॥ ५ ॥

१—प्रसन्न करती ।

अंधाधुंध धरम के मारग ।
सब जीव फँसाये री ॥ ६ ॥
क्योंकर भाग सराहूँ अपना ।
मोहि सतगुरु लीन बचाये री ॥ ७ ॥
सच्चा मारग सुरत शब्द का ।
सो मोहि दीन लखाये री ॥ ८ ॥
गुरु का रूप निरखती घट में ।
प्रीति प्रतीति बढ़ाये री ॥ ६ ॥
उमँग सहित धुन डोर पकड़ के ।
मन और सूरत धाये री ॥ १० ॥
चित का थाल ध्यान की जोती ।
आरत प्रेम सजाये री ॥ ११ ॥
उमँग उमँग कर सन्मुख आई ।
राधास्वामी लीन रिझाये री ॥ १२ ॥
दया मेहर परशादी पाई ।
अब निज भाग जगाये री ॥ १३ ॥
राधास्वामी महिमा कही न जावे ।
सब रचना थाक रहाये री ॥ १४ ॥
मैं बलहीन नहीं गुन कोई ।
राधास्वामी लिया अपनाये री ॥ १५ ॥

२–शब्द २१

सखी री मेरे मन बिच उठत तरंग ।
करूँ गुरु आरत रंगा रंग ॥ १ ॥
प्रेम की थाली कर[1] बिच लाय ।
लाल और मोती संग सजाय ॥ २ ॥
बिरह की जोति जगाऊँ आज ।
कँवल फुलवारी चहुँ दिस साज ॥ ३ ॥
अनेक रँग अम्बर बस्तर लाय ।
अमी का भोग उमंग धराय ॥ ४ ॥
बिबिध अस आरत साज सजाय ।
सुरत मन नाचत हरखत गाय ॥ ५ ॥
हंस जहाँ मोहित देख बिलास ।
हिये बिच छिन छिन बढ़त हुलास ॥ ६ ॥
शब्द धुन झनकारत चहुँ ओर ।
अमी रस बरसावत घन घोर ॥ ७ ॥
भींज रही सुरत रँगीली नार ।
रहा मन ग़ोता खावत वार ॥ ८ ॥
धमक कर चढ़ गई फोड़ अकाश ।
चमक कर पहुँची सतगुरु पास ॥ ९ ॥
प्रेम रँग भींज रही स्रुत नार ।
पाइया पूरन अब सिंगार ॥ १० ॥

१—हाथ ।

हुए परसन गुरु दीनदयाल ।
लिया मोहि अपनी गोद बिठाल ॥ ११ ॥
भाग मेरा जागा आज अपार ।
मिले राधास्वामी निज दिलदार[1] ॥ १२ ॥

२—शब्द २२

काल ने जग में कीना ज़ोर ।
डालिया माया भारी शोर ॥ १ ॥
जीव सब भोगन में भरमात ।
नाम का भेद न कोई पात ॥ २ ॥
करम बस दुख सुख भोगें आय ।
गये सब जम के हाथ बिकाय ॥ ३ ॥
निडर होय जग में मारें मौज ।
करें नहिं सतगुरु का वह खोज ॥ ४ ॥
जीव का हित[2] नहिं दिल में लायँ ।
फ़िकर नहिं आगे क्या हो जाय ॥ ५ ॥
समझ जो उनको कोइ सुनाय ।
भरम बस चित में नहीं समाय ॥ ६ ॥
मान मद डाली भारी भूल ।
सहेंगे जम के कारी[3] सूल ॥ ७ ॥

१—प्रीतम । २—भलाई । ३—कठोर ।

बड़ा मेरा जागा भाग अपार ।
मिले मोहि सतगुरु परम उदार ॥ ८ ॥
अबल मैं कुछ करनी नहिं कीन ।
दया कर चरन सरन मोहि दीन ॥ ६ ॥
प्रेम की भारी कीन्ही दात ।
छुटाया करम भरम का साथ ॥ १० ॥
शुकर कर निस दिन उन गुन गाय ।
कुसँग से लीजे मोहि बचाय ॥ ११ ॥
रहूँ मैं निसदिन चरनन पास ।
प्रेमी जन सँग पाऊँ बास ॥ १२ ॥
करो अभिलाखा मेरी पूर ।
हुकम से तुम्हरे नहिं कुछ दूर ॥ १३ ॥
जीव हितकारी नाम तुम्हार ।
करो अब मुझ पर दया अपार ॥ १४ ॥
परम गुरु राधास्वामी दीनदयाल ।
दरस दे मुझको करो निहाल ॥ १५ ॥
मगन मन अभिलाखत दिन रात ।
करूँ गुरु आरत प्रेमी साथ ॥ १६ ॥
थाल सतसँग का लेउँ सजाय ।
बचन गुरु सरवन जोति जगाय ॥ १७ ॥
करूँ गुरु दरशन दृष्टि सँभार ।
गाऊँ अस आरत बारंबार ॥ १८ ॥

करत मन मेरा अस बिसवास ।
करें गुरु पूरन मेरी आस ॥ १९ ॥
पिया मेरे राधास्वामी प्रान अधार ।
दरस पर तन मन दूँगी वार ॥ २० ॥
मोहनी छबि नहिं बरनी जाय ।
नैन और तन मन रहे लुभाय ॥ २१ ॥
भाग बड़ प्रेमी जन हैं सोय ।
करें नित दरशन सुरत समोय[1] ॥ २२ ॥
भाग मेरा भी लेव जगाय ।
देव निज दरशन पास बुलाय ॥ २३ ॥
सोच मेरे निसदिन मन में आय ।
मोहि केहि[2] कारन दूर रखाय ॥ २४ ॥
कसर मेरी कीजे सब अब दूर ।
दिखाओ जल्दी अपना नूर ॥ २५ ॥
करूँ मैं बिनती दोउ कर जोर ।
सुनो प्यारे राधास्वामी सतगुरु मोर ॥ २६ ॥
मेहर अब पूरी करो दयाल ।
चरन में मुझको लेव सँभाल ॥ २७ ॥
गाऊँ गुन तुम्हरा दिन और रात ।
चरन में प्रेमी जन के साथ ॥ २८ ॥

१—लीन करके । २—किस ।

सुरत मन चढ़ें गगन पर घूम ।
सुन्न में पहुँचें वहाँ से झूम ॥ २९ ॥
गुफा चढ़ सतपुर पहुँचूँ धाय ।
अलख और अगम को निरखूँ जाय ॥ ३० ॥
अनामी धाम का दरशन पाय ।
चरन में राधास्वामी रहूँ समाय ॥ ३१ ॥

२-शब्द २३

चरन गुरु बढ़त हिये अनुराग ।
बासना जग की दीन्ही त्याग ॥ १ ॥
गुरू मोहि दीन्हा परम सुहाग ।
सुरत रही छिन छिन धुन रस लाग ॥ २ ॥
दया मोपै बिन माँगे अस कीन ।
दरश मोहिं घट में निसदिन दीन ॥ ३ ॥
कहूँ क्या महिमा राधास्वामी गाय ।
सुरत मेरी चरनन लीन लगाय ॥ ४ ॥
पड़ी थी निरबल भव के कूप ।
दिखाया मुझको अचरज रूप ॥ ५ ॥
चढ़ाया मुझको नभ के पार ।
दिखाई घट में अजब बहार ॥ ६ ॥
रहे मन इंद्री थक कर वार ।
सहज में पाया गुरु दीदार ॥ ७ ॥

छुड़ाए मन के सभी बिकार।
करम मेरे काटे सब ही झाड़ ॥ ८ ॥
कहूँ कस महिमा दया अपार।
लिया मोहि अपनी गोद बिठार ॥ ९ ॥
नहीं कोइ करनी मैंने कीन।
नहीं कोइ सेवा मुझसे लीन ॥ १० ॥
नहीं कोइ बचन सुने मैं आय।
नहीं मैं दरशन सन्मुख पाय ॥ ११ ॥
कुटुँब सँग घर में रही लिपटाय।
वहीं मोपै किरपा करी बनाय ॥ १२ ॥
सुरत रहे निसदिन रस माती।
दरश नित हिये अंतर पाती ॥ १३ ॥
शब्द सँग करती नित्त बिलास।
देखती घट में अजब उजास[1] ॥ १४ ॥
तड़प हिये उठती बारंबार।
करूँ मैं सतसँग गुरु दरबार ॥ १५ ॥
चरन में बिनती करूँ बनाय।
देव मोहि दरशन पास बुलाय ॥ १६ ॥
करूँ मैं आरत सन्मुख आय।
शुकर कर चरनन माथ नवाय ॥ १७ ॥

१—प्रकाश।

करो मेरी अभिलाखा पूरी ।
रहूँ सँग कोइ दिन तज दूरी ॥ १८ ॥
पाऊँ सतसँग का परम बिलास ।
शब्द का देखूँ घट परकाश ॥ १९ ॥
सुरत तब चढ़े गगन पर धाय ।
जोति लख गुरु पद परसे जाय ॥ २० ॥
सुन्न में तिरबेनी न्हावे ।
गुफा चढ़ मुरली धुन पावे ॥ २१ ॥
सुने धुन बीना सतपुर आय ।
अलख लख अगम का दर्शन पाय ॥ २२ ॥
चरन राधास्वामी कर दीदार ।
रहूँ मैं दम दम चरन अधार ॥ २३ ॥
दया बिन नहिं पावे यह धाम ।
चढ़े नहिं बिन डोरी निज नाम ॥ २४ ॥
मेहर कर राधास्वामी दिया बिसराम ।
सरन में उनके रहूँ मुदाम[1] ॥ २५ ॥

२—शब्द २४

सरन गुरु पाई जागे भाग ।
सुरत मन चरनन में रहे लाग ॥ १ ॥

१—हमेशा ।

दरश गुरु पावत हरखा मन ।
सेव गुरु चाहत धाया तन ॥ २ ॥
साध सँग करत बढ़ा बिस्वास ।
चरन गुरु रलत[1] भया परकाश ॥ ३ ॥
बचन गुरु सुनत अमी बरसाय ।
नाम गुरु सुमिरत प्रेम बढ़ाय ॥ ४ ॥
शब्द की महिमा निसदिन गाय ।
सुरत मन धुन रस छिन छिन पाय ॥ ५ ॥
भेद सतसँग का गुरु जब दीन ।
सुरत मेरी जागी हुआ मन लीन ॥ ६ ॥
शब्द धुन घट में नित सुनती ।
संख और घंटा नित गुनती ॥ ७ ॥
बंक का द्वारा लीन खुलाय ।
तिरकुटी चढ़ कर पहुँची धाय ॥ ८ ॥
मानसर किये जाय अश्नान ।
लगा फिर धुन मुरली से ध्यान ॥ ९ ॥
पुरुष का दरशन पाय हरखात ।
धुनन सँग अमृत रस बरसात ॥ १० ॥
गई फिर अलख अगम के पार ।
मिले मोहि राधास्वामी पुरुष अपार ॥ ११ ॥

१—मिल जाने पर ।

चरन में गुरु के रही लिपटाय ।
मेहर राधास्वामी छिन छिन पाय ॥१२॥
बेद मत नहिं जाने यह भेद ।
सकल जिव सहते करमन खेद ॥१३॥
संत बिन कौन करे उपकार ।
शब्द बिन कौन करे निरवार ॥१४॥
सरन राधास्वामी जो धारे ।
जाय घर भौसागर पारे ॥१५॥

२–शब्द २५

चरन गुरु दीन हुआ मन मोर ।
शब्द धुन सुनता सूरत जोड़ ॥ १ ॥
भरम तज हिये परतीत भई ।
प्रेम सँग सूरत शब्द गही ॥ २ ॥
छोड़ दिया मन से क्रोध और काम ।
सुमिरता हिये में राधास्वामी नाम ॥ ३ ॥
सरन गुरु हित चित से धारी ।
चरन में प्रीति लगी सारी ॥ ४ ॥
दरश गुरु जागत मन अनुराग ।
बचन सुन जगत बासना त्याग ॥ ५ ॥
साध सँग होवत कारज पूर ।
भक्ति गुरु धावत मन हुआ सूर ॥ ६ ॥

ध्यान गुरु धारत भागे चोर।
सुनत नित घट में अनहद शोर ॥ ७ ॥
शब्द की क्या कहुँ महिमा सार।
सहज में होवत जीव उधार ॥ ८ ॥
करम और धरम सभी त्यागे।
शब्द सँग मन सूरत जागे ॥ ९ ॥
नहीं कोइ जाने घट का भेद।
भरम कर सहते करम का खेद ॥ १० ॥
काल का जाल बिछा भारी।
जीव सब घेर लिये सारी ॥ ११ ॥
पड़े सब भरमें करमन में।
दुक्ख सुख भोगें जनमन में ॥ १२ ॥
सरन सतगुरु की जो आवे।
उलट कर वही निज घर जावे ॥ १३ ॥
होय माया से वह न्यारा।
चरन गह[1] संत जाय पारा ॥ १४ ॥
सराहूँ कस कस अपना भाग।
चरन में राधास्वामी के मन लाग ॥ १५ ॥
प्रेम सँग आरत उन गाऊँ।
दया पर छिन छिन बलि जाऊँ ॥ १६ ॥

१—पकड़ कर ।

सरन राधास्वामी हिरदे धार ।
रहूँ मैं छिन छिन चरन सँभार ॥ १७ ॥

२–शब्द २६

चरन गुरु निज हियरे धारे ।
लगे मोहि प्रानन से प्यारे ॥ १ ॥
देख सतसँग मन लागी प्रीत ।
सुनत गुरु बचन बढ़ी परतीत ॥ २ ॥
संग गुरु महिमा चित्त बसाय ।
सेव गुरु करता चित्त लगाय ॥ ३ ॥
मगन मन निरखत नित्त बिलास ।
सुखी होय रहता चरनन पास ॥ ४ ॥
प्रेम घट बढ़ता दिन और रात ।
शब्द गुरु महिमा कही न जात ॥ ५ ॥
बिना गुरु शब्द नहीं छुटकार ।
भरमते सब जिव माया लार ॥ ६ ॥
लगे नहिं उनका ठौर ठिकान ।
दुक्ख सुख भोगें चारों खान ॥ ७ ॥
भाग मेरे पूरबले[1] जागे ।
सुरत मन गुरु चरनन लागे ॥ ८ ॥

१—पुराने ।

शब्द का भेद मिला मोहि सार ।

सुनूँ नित घट में धुन झनकार ॥ ९ ॥

सहसदल घंटा संख सुनाय ।

तिरकुटी गुरुपद परसा जाय ॥ १० ॥

सुन्न में धुन रारँग जागी ।

गुफा चढ़ धुन मुरली साजी ॥ ११ ॥

सत्तपद बीन सुनी निज सार ।

पुरुष का दरशन करूँ सँभार ॥ १२ ॥

वहाँ से गई अलख दरबार ।

अगम गढ़ खोला सुरत सुधार ॥ १३ ॥

परे तिस निरखा सतगुरु धाम ।

पाइया अद्भुत राधास्वामी नाम ॥ १४ ॥

सरन गुरु पाई चरन समाय ।

नाम प्यारे राधास्वामी छिन छिन गाय ॥ १५ ॥

२–शब्द २७

करूँ क्या गुरु महिमा बरनन ।

सुरत मेरी लाग रही चरनन ॥ १ ॥

दूर मैं रहती सतसँग से ।

सुरत मेरी रँग रही गुरु रँग से ॥ २ ॥

नाम गुरु मन में जपत रहूँ ।

दरश गुरु घट में चहत रहूँ ॥ ३ ॥

मेहर बिन क्या मोसे[1] बन आय।
रहूँ मैं नित राधास्वामी गुन गाय ॥ ४ ॥
जीव सब भूल रहे तन में।
अटक रहे करमन भरमन में ॥ ५ ॥
क़दर परमारथ नहिं जानें।
प्रीति मन माया सँग ठानें ॥ ६ ॥
काल ने अपनी छाया डाल।
फाँस लिया इनको माया जाल ॥ ७ ॥
गुरू अब अमृत बचन सुनाय।
काल से लीजे बेग[2] बचाय ॥ ८ ॥
संग से उनके होवत हान[3]।
दीजिये उनको भी कुछ ज्ञान ॥ ९ ॥
चरन में गुरु के लागें आय।
भाव भय परमारथ का लाय ॥ १० ॥
सुनो मेरी बिनती गुरु दातार।
लीजिये जग जीव बेग सँभार ॥ ११ ॥
प्रेम की मुझको दीजे दात।
रहूँ मैं निसदिन चरन समात ॥ १२ ॥
चरन गुरु धार रहूँ उर[4] में।
शब्द धुन सुनत रहूँ सुर में ॥ १३ ॥

१—मुझसे। २—जल्दी। ३—हानि, नुक़सान। ४—हृदय।

चरन में होवे दृढ़ परतीत ।
बढ़त रहे निसदिन हियरे प्रीत ॥ १४ ॥
मगन रहूँ जब तब दरशन पाय ।
उमँग मेरे हिरदे रही समाय ॥ १५ ॥
प्रेम सँग आरत राधास्वामी धार ।
चरन पर डालूँ तन मन वार ॥ १६ ॥
दया मोपै राधास्वामी करी बनाय ।
मेहर से लीना मोहि अपनाय ॥ १७ ॥

२-शब्द २८

हे राधास्वामी सतगुरू दयारा ।
गति तुम्हरी अति अगम अपारा ॥
मोहि निरबल को लीन उबारा ॥ १ ॥
माया भाव हटाया सकला[1] ।
दरशन को मन तड़पत बिकला ॥
खैंच चरन में दिया सहारा ॥ २ ॥
गुरु संगत में लीन मिलाई ।
सुरत शब्द दिया भेद सुहाई ॥
साध संग मोहि लीन सुधारा ॥ ३ ॥

१—सारा ।

राधास्वामी मोहि अति दीन लखा री ।
दिन दिन मेरी दया बिचारी ॥
मेहर दया से लीन सँवारा ॥ ४ ॥
सतसँग करत हुआ मन चूरा ।
करम भरम सब कीने दूरा ॥
काल बिघन सब दीन निकारा ॥ ५ ॥
सेवा करत प्रीति नई जागी ।
सुरत निरत गुरु चरनन पागी[1] ॥
गुरु सरूप लागा अति प्यारा ॥ ६ ॥
गुरु छबि देख हुई मतवारी ।
तन मन धन चरनन पर वारी ॥
दरशन पर जाऊँ बलिहारा ॥ ७ ॥
गुरु की दया कहूँ कस गाई ।
बालक सम मोहि गोद बिठाई ॥
औगुन मेरे कुछ न बिचारा ॥ ८ ॥
गुरु परतीत हिये में छाई ।
दिन दिन होती प्रीति सवाई ॥
राधास्वामी सरन अब मिला अधारा ॥ ९ ॥
जग ब्यौहार लगा अब फीका ।
तज जग भोग प्रेम रस चीखा[2] ॥
झूठ लगा सब काल पसारा ॥ १० ॥

१—लीन हो गई । २—चखा ।

सुरत शब्द अभ्यास कराई ।
गुरु बल सूरत अधर चढ़ाई ॥
निरखी घट में अजब बहारा ॥ ११ ॥
राधास्वामी मेहर कहूँ मैं कैसे ।
सहजहि मोहि उबारा जैसे ॥
छिन छिन करती शुकर पुकारा ॥ १२ ॥
छिन छिन हियरे उमँग बढ़ावत ।
कर सिंगार करूँ गुरु आरत ॥
नइ नइ सामाँ कर बिस्तारा ॥ १३ ॥
भूषन बस्तर अजब बनाये ।
कर सनमान गुरू पहिनाये ॥
अचरज शोभा निरख निहारा ॥ १४ ॥
अनेक पदारथ किये तैयारा ।
गुरु आगे धरे साज सँवारा ॥
शोभा बाढ़ी गुरु दरबारा ॥ १५ ॥
बिंजन अनेक थाल भर लाई ।
सतगुरु सन्मुख भोग धराई ॥
मान लिया गुरु कर अति प्यारा ॥ १६ ॥
हंस हंसनी जुड़ मिल आये ।
देख समाँ[1] चित में हरखाये ॥
सब मिल गावें गुरु गुन सारा ॥ १७ ॥

१—हालत, कैफ़ियत ।

आरत धूम मची अब भारी ।
सतगुरु चरनन आरत धारी ॥
गगन मँडल में बजा नगारा ॥ १८ ॥
राधास्वामी दया सेव बन आई ।
भाग आपना कहा[1] सराही[2] ॥
राधास्वामी कीनी मेहर अपारा ॥ १९ ॥

२–शब्द २९

सरन गुरु सतसँग जिन लीनी ।
हुए मन सुरत चरन लीनी ॥ १ ॥
कहें सब महिमा सतसँग गाय ।
भेद निज वहाँ का कोइ नहिं पाय ॥ २ ॥
संत की महिमा जहाँ होई ।
भेद निज घर का कहें सोई ॥ ३ ॥
शब्द का मारग जो गावें ।
सुरत का रस्ता बतलावें ॥ ४ ॥
प्रेम गुरु देवें हिये दृढ़ाय[3] ।
सरन गुरु महिमा कहें सुनाय ॥ ५ ॥
सोई सतसँग सच्चा जानो ।
जीव का कारज वहाँ मानो ॥ ६ ॥

१—क्या । २—प्रशंसा करूँ । ३—पक्का कर देते हैं ।

मेहर से सतसँग अस मिलिया।
सुरत मन गुरु चरनन रलिया ॥ ७ ॥
सराहूँ भाग अपना दम दम।
नाम गुरु जपत रहूँ हर दम ॥ ८ ॥
कहूँ क्या मन मोहि धोखा दीन।
भोग रस इंद्री छिन छिन लीन ॥ ९ ॥
भूल कर अति दुख में पाया।
किए पर अपने पछताया ॥ १० ॥
इसी से रहता नित मुरझाय।
पुकारूँ गुरु चरनन में जाय ॥ ११ ॥
मेहर मोपै कीजै गुरू दयाल।
काट दो माया का जंजाल ॥ १२ ॥
शब्द रस पीवे मन होय लीन।
चरन में गुरु के दीन अधीन ॥ १३ ॥
रहूँ नित आरत गुरु की गाय।
सरन राधास्वामी हिये बसाय ॥ १४ ॥
दया से कीजे कारज पूर।
रहूँ नित चरन कँवल की धूर ॥ १५ ॥

२—शब्द ३०

गुरु परसाद प्रीति अब जागी।
उमँग उमँग सुर्त चरनन लागी ॥ १ ॥

मन हुआ मगन पाय गुरु दरशन ।
तन मन धन कीन्हा गुरु अरपन[1] ॥ २ ॥
गुरु का रूप अधिक मन भाता ।
कर सिंगार हिये हुलसाता ॥ ३ ॥
निसदिन गुरु सँग करत बिलासा ।
लीला देखत बढ़त हुलासा ॥ ४ ॥
आरत नई बिध[2] लीन सजाई ।
मन सूरत गुरु प्रेम रँगाई ॥ ५ ॥
सतसंगियन सँग गावत आरत ।
प्रीति प्रतीति हिये बिच धारत ॥ ६ ॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला ।
हुए प्रसन्न और किया निहाला ॥ ७ ॥

२–शब्द ३१

परम गुरु राधास्वामी दातारे ।
वही मेरे जिय के आधारे ॥ १ ॥
गाऊँ कस उन महिमा भारी ।
करी मोपै मेहर दया न्यारी ॥ २ ॥
सुरत मन चरनन खैंच लगाय ।
लिया मोहि किरपा कर अपनाय ॥ ३ ॥

१—समर्पण । २—तरह ।

धरी मेरे हिये में दृढ़ परतीत ।
दई चरनन में गहरी प्रीत ॥ ४ ॥
शब्द की गत मत अगम अपार ।
लखाई घट में किरपा धार ॥ ५ ॥
दिखा कर मन के सभी बिकार ।
दया कर देते सहज निकार ॥ ६ ॥
जगत के भोग सभी दिखलाय ।
भाव उन चित से दिया हटाय ॥ ७ ॥
पकड़[1] मेरी ढीली कर तन मन ।
कराये गुरु चरनन अरपन ॥ ८ ॥
दया मोपै अंतर जस कीनी ।
परख मोहि वाकी वहीं दीनी ॥ ९ ॥
घात माया ने की बहु भाँत ।
निरख[2] दे वोहीं बख़्शी शांत ॥ १० ॥
कहूँ क्या अस अस मेहर कराय ।
राह मेरी राधास्वामी दीन चलाय ॥ ११ ॥
शुकर उन क्योंकर गाऊँ मैं ।
चरन उन छिन छिन ध्याऊँ मैं ॥ १२ ॥
ग़ौर कर देखा जग का हाल ।
रहे फँस सब जिव माया जाल ॥ १३ ॥

१—बंधन । २—परख, पहचान ।

करम का नित्त बढ़ाते भार।
काल की खाते निसदिन मार ॥१४॥
सोचते कुछ नहिं लाभ और हान।
रहे सब माया सँग भरमान ॥१५॥
सुनें नहिं चित दे सतगुरु बात।
कहो कस[1] यह परमारथ पात ॥१६॥
संग इन जीवन नहिं चाहूँ।
सरन में राधास्वामी के धाऊँ ॥१७॥
भाग मेरा जागा अजब निदान।
मिला मोहि सतगुरु चरन ठिकान ॥१८॥
जिऊँ मैं नित गुरु शब्द सँभार।
पिऊँ मैं चरन अमीरस सार ॥१९॥
मगन रहूँ राधास्वामी के गुन गाय
चरन में छिन छिन सुरत समाय ॥२०॥
दयानिधि राधास्वामी गुरु प्यारे।
मेहर कर लीना मोहि तारे ॥२१॥

२—शब्द ३२

चलो री सखी सुनो अगम सँदेसा।
छोड़ देव अब जगत अँदेसा ॥ १ ॥

१—कैसे।

जग बिच नित दुख सुख सहना री ।
    जनम मरन से नहिं बचना री ॥ २ ॥
जग जीवन की प्रीति न साँची ।
    चाल ढाल उन सब है काँची ॥ ३ ॥
मन मग़रूर जगत में फंदे ।
    धन और नामवरी के बंदे ॥ ४ ॥
परमारथ की सार न जानें ।
    मान मनी घट माहिं बिराजे ॥ ५ ॥
उनसे प्रीति करत दुख पावे ।
    गुरु चरनन में चित्त न आवे ॥ ६ ॥
जो तुम चाहो अपन उधारा ।
    तज उन संग गहो गुरु द्वारा ॥ ७ ॥
भाग तुम्हारा नित नित जागे ।
    काम किरोध मोह मद भागे ॥ ८ ॥
परमारथ के बचन सँभारो ।
    मन से जग का भाव निकारो ॥ ९ ॥
करो प्रतीति प्रीति चरनन में ।
    राधास्वामी नाम पुकारो छिन में ॥ १० ॥
राधास्वामी रूप अनूप अपारा ।
    चित्त बसाओ हिये धर प्यारा ॥ ११ ॥
छिन छिन झाँक रहो हिये अंतर ।
    राधास्वामी नाम सुनो गुरु मंतर ॥ १२ ॥

सुनो प्रेम से सतगुरु बानी।
दया मेहर की परख निशानी ॥१३॥
गुरु दयाल नित दया बिचारें।
छिन छिन मन को आप सँभारें ॥१४॥
जगत भोग में रहे मलीना।
माया का रहे सदा अधीना ॥१५॥
सतसँग जल से साफ़ करावें।
प्रेम दात दे चरन लगावें ॥१६॥
बिरह बिना यह काज न होई।
मेहनत करे फल पावे सोई ॥१७॥
याते सतसँग सतगुरु धारो।
बचन सुनो हिये माहिं बिचारो ॥१८॥
दिन दिन चरनन प्रीति बढ़ाओ।
करम भरम सब दूर हटाओ ॥१९॥
मोह जगत तज चित को जोड़ो।
मन और सुरत शब्द सँग मोड़ो ॥२०॥
ऐसे कोइ दिन करो कमाई।
जग दुख सुख सब जाय नसाई ॥२१॥
सुमिरन ध्यान भजन रस पाई।
भाग आपना लेव सराही ॥२२॥
चित से यह उपदेश सँभारो।
राधास्वामी आरत नित प्रति धारो ॥२३॥

गुन गाओ तुम राधास्वामी निसदिन ।
सरन सँभार गिरो उन चरनन ॥ २४ ॥
राधास्वामी सब विधि करिहैं काज ।
सरन पड़े की राखें लाज ॥ २५ ॥

मन व इन्द्रियों के बिकारों व काल के विघ्नों का वर्णन और उनसे बचने के लिए सतगुरु के चरणकमल में प्रार्थना

१-शब्द ३३

छुटूँ मैं कैसे इस मन से ।
सुरत यह कहती निज मन से ॥ १ ॥
जाल इन डाला बहु रस से[1] ।
छुटाया मोहि धुर घर से ॥ २ ॥
बँधी मैं आय इन दस से[2] ।
किया परपंच[3] इन मुझसे ॥ ३ ॥
द्वार मैं आन नौ परसे[4] ।
गिराया मोहि दस दर से[5] ॥ ४ ॥
लगी अब लाग[6] भोगन से ।
छुटूँ क्यों हाय इस फँद से ॥ ५ ॥

१—भोगों से । २—दस इन्द्रियों से । ३—प्रपंच, छल, कपट । ४—छुए । ५—दसवें द्वार से । ६—लगन ।

गुरू बिन कोइ नहिं दरसे।
निकाले मोहि इस बन[1] से ॥ ६ ॥
काँपती मैं फिरूँ जम से।
छुड़ावे कौन इस डर से ॥ ७ ॥
पशू सम हो गई नर से।
करी नहिं प्रीति मैं गुरु से ॥ ८ ॥
डार ज्यों टूट गइ जड़ से।
पड़ी मैं दूर निज घर से ॥ ९ ॥
करूँ फ़र्याद सतगुरु से।
लगाओ मोहि चरनन से ॥ १० ॥
दूर करो मैल सतसँग से।
होय फिर भिन्न[2] इस तन से ॥ ११ ॥
मिले तब जाय सुन धुन से।
अमी रस पाय तब सरसे[3] ॥ १२ ॥
शब्द से जाय कर परसे[4]।
मिटे दुख फिर नहीं तरसे ॥ १३ ॥
लगूँ मैं आय राधा से।
करूँ मैं प्रीति स्वामी से ॥ १४ ॥
करो राधास्वामी तुम अपना।
पड़ी मैं आय तुम सरना ॥ १५ ॥

१—जंगल। २—अलग। ३—प्रसन्न हो। ४—जा के छुए।

१-शब्द ३४

मन चंचल कहा न माने।
मैं कौन उपाय करूँ ॥ १ ॥
गुरु नित समझावें साध बुझावें।
सतसँग में चित जोड़ धरूँ ॥ २ ॥
सुन सुन बचन बहुत पछताऊँ।
बहुरि[1] भुलावे भर्म रहूँ ॥ ३ ॥
अपनी सी बहु जुक्ति सँभारी।
कैसे मन को मार मरूँ ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का घाट न पाया।
फिर क्योंकर मैं गगन भरूँ[2] ॥ ५ ॥
डाँवाँडोल रहे संशय में।
जगत आस से नाहिं टरूँ[3] ॥ ६ ॥
सतगुरु सरन पकड़ कर बैठूँ।
तौ इस मन की ब्याधि[4] हरूँ ॥ ७ ॥
जगत जाल यह अति दुखदाई।
इसी अगिन में नित्त जरूँ ॥ ८ ॥
बिना मेहर कुछ काज न सरिहै[5]।
अब राधास्वामी की सरन पड़ूँ ॥ ९ ॥

१—फिर। २—धसूँ या उलटूँ। ३—हटूँ। ४—रोग। ५—बनेगा।

१-शब्द ३५

चमरिया[1] चाह बसी घट माहिं ।
गुरू अब कैसे धारें पायँ[2] ॥ १ ॥
दुक्ख सुख नित ही आवें जायँ ।
करमफल भोगत मन के माहिं ॥ २ ॥
शुद्धता सब ही भागी जाय ।
प्रेम और भक्ति नहीं ठहरायँ ॥ ३ ॥
बिरह अनुराग निकासे[3] जायँ ।
करूँ क्या कोइ जतन अब नाहिं ॥ ४ ॥
बहुरि फिर गुरु ही लेयँ बचाय ।
नाम बिन करे न कोइ सहाय ॥ ५ ॥
करूँ अब सतसँग सरन समाय ।
शब्द में निसदिन लगन लगाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी कीन्ही दृष्टि भुमाय ।
चमरिया घट से भागी जाय ॥ ७ ॥

१-शब्द ३६

गुज़र मेरी कैसे होय सहेली ।
इस मन साथ ॥ १ ॥

१—चमड़े से संबंध रखने वाली अर्थात् शरीर संबंधी । २—चरण ।
३—निकाले ।

यह तो चोर चुग़ल छल[१] कपटी ।
कभी न आवे हाथ ॥ २ ॥
गुरु समझावें मैं समझाऊँ ।
पुनि पुनि करता अपनी घात ॥ ३ ॥
काम न छोड़े क्रोध न छोड़े ।
लोभ मोह सँग अति दुख पात[२] ॥ ४ ॥
मान बड़ाई जक्त बासना ।
नित्त बढ़ावत जात ॥ ५ ॥
खान पान और भोग बिलासा ।
इनमें सदा फँसात ॥ ६ ॥
सतगुरु दाता शब्द लखावें ।
सो नहिं लेता दात[३] ॥ ७ ॥
ऐसा दुष्ट कहा[४] नहिं माने ।
छोड़त नहिं उतपात[५] ॥ ८ ॥
जमनगरी के दुक्ख सुनाऊँ ।
तो भी भय नहिं खात[६] ॥ ९ ॥
सत्तलोक के सुख दरसाऊँ ।
सो भी कुछ परतीत न लात ॥ १० ॥
कहूँ कहाँ लग नेक न माने ।
मैं तो हारा जात ॥ ११ ॥

१—छली । २—पाता है । ३—बख़्शिश । ४—कहना । ५—उपद्रव ।
६—नहीं डरता ।

कैसी करूँ उपाव न सूझे।
नहिं याते बसियात[1] ॥१२॥
जो कुछ करें करें राधास्वामी।
और न कोई दृष्टी आत[2] ॥१३॥

१–शब्द ३७

गुरू को ऊपर ऊपर गाता।
गुरू को दिल भीतर नहिं लाता ॥ १ ॥
गुरू का दर्शन बाहर करता।
चित्त में दर्शन कभी न धरता ॥ २ ॥
काज तेरा कैसे होवे भाई।
ऊपरी गुरु सँग लगन[3] लगाई ॥ ३ ॥
भीतरी धन और मान बिराजा[4]।
ऊपरी नाम ग़रीबी साजा ॥ ४ ॥
भीतरी काम और क्रोध बसाये।
ऊपरी सील छिमा दिखलाये ॥ ५ ॥
भीतरी लगन न गुरु से लागी।
ऊपरी लगन करे क्या पाजी ॥ ६ ॥
गुरू कस तेरे होयँ सहाई।
शब्द की प्रीति न अंतर आई ॥ ७ ॥

१—बस नहीं चलता है। २—नज़र आता है। ३—प्रीति। ४—रहते हैं।

कौन बिधि कहूँ तोहि समझाई ।
भाग कुछ ओछा[१] ही तैं[२] पाई ॥ ८ ॥
तमोगुन छाय रहा घट तेरे ।
सतोगुन कभी न आवे नेरे[३] ॥ ९ ॥
भजन तू करे न कबही सच्चा ।
सरन में गुरु की है तू कच्चा ॥ १० ॥
ज़रा सी ताड़ मार नहिं सहता ।
निरादर करें जगत में बहता[४] ॥ ११ ॥
दुखों से डर कर कुछ कुछ लगता ।
गये दुख वोहीं[५] तुर्त फड़कता ॥ १२ ॥
नाम रस पाया नहिं अबिनासी ।
जगत से हुआ न कभी उदासी ॥ १३ ॥
जतन कोइ समझ नहीं अब आता ।
गुरू की मेहर बिना क्या पाता ॥ १४ ॥
गुरू की मरज़ी कभी न परखी ।
मेहर कहो आवे कैसे धुर की ॥ १५ ॥
ख़बर नहिं पाई तैं निज घर की ।
शब्द में सुरत न तेरी सरकी[६] ॥ १६ ॥
मरम यह मन का सब ही गाया ।
सुनो राधास्वामी कहत सुनाया ॥ १७ ॥

१—तुच्छ । २—तू ने । ३—नज़दीक । ४—मारा मारा फिरता है । ५—वैसे ही । ६—खिसकी यानी आगे बढ़ी ।

१-शब्द ३८

अरे मन नहिं आई परतीत[1]।
गुरू की नहिं आई परतीत।
अब तक नहिं आई परतीत ॥ १ ॥
बहुतक भरमा जगत भर्म में।
नहिं कीन्हा मन मीत[2] ॥ २ ॥
गुरु सँग रहता सतसँग करता।
चरनामृत पी खाता सीत ॥ ३ ॥
अब जो देखी हालत मन की।
लगी न गुरु सँग प्रीत ॥ ४ ॥
धोखा देत रहा मन पाजी।
गही न गुरु की रीत ॥ ५ ॥
गुरु ने परख करी कुछ मन की।
छोड़ चला संगीत[3] ॥ ६ ॥
मन मूरख यह कहा न माने।
सोता रहे, कपट नहिं जीत[4] ॥ ७ ॥
क्योंकर मन को देउँ सचौटी।
कुटुँब जगत की लज्जा कीत[5] ॥ ८ ॥
कुटुँब जगत सँग सच्चा बरते।
झूठा सतसँग लीत ॥ ९ ॥

१—विश्वास। २—मित्र। ३—संग, सत्संग। ४—जीतता। ५—करता है।

जब देखो तब रूखा सूखा ।
गुरु दर्शन में नहिं हुलसीत[1] ॥ १० ॥
सतसँगियन से हेल मेल नहिं ।
जग जीवन सँग रखता प्रीत ॥ ११ ॥
दारा[2] सुत परिवार सकल सँग ।
हँस हँस खेलत नीत[3] ॥ १२ ॥
गुरु से सीधे मुँह नहिं बोले ।
सतसँगियन से टेढ़ा चीत[4] ॥ १३ ॥
गुरु सतसंगी दोउ हितकारी ।
तिन का हित जाने न पलीत[5] ॥ १४ ॥
जग बिच्छू तिरिया[6] है नागिन ।
इन सँग रहत मिलीत[7] ॥ १५ ॥
ज़हर हलाहल[8] नित ही खावत ।
डंक सहत फिर फिर पछतीत[9] ॥ १६ ॥
गुरु के बचन अमी की धारा ।
तिन में न्हात न हो मगनीत[10] ॥ १७ ॥
ऐसा नीच कुबुद्धी यह मन ।
गुरु को अपना जाने न मीत ॥ १८ ॥

१—प्रसन्न होता है। २—स्त्री। ३—नित्य। ४—चित्त। ५—फ़ारसी में पलीद यानी गंदा, अपवित्र और हिन्दी में पलीत यानी भूत-प्रेत। ६—स्त्री। ७—मिला। ८—तेज़ यानी मार डालने वाला। ९—पछताता है। १०—प्रसन्न होकर।

गुरु सँग प्रीति लगावत ऐसी ।
जस धागा कच्चा चटकीत[1] ॥ १६ ॥
जो कोइ बचन कहें वे कड़ुआ ।
और करें अपमान भलीत[2] ॥ २० ॥
तौ मन फेरे, घर को भागे ।
बैर करे कुछ करे अनीत[3] ॥ २१ ॥
गुरु को दुख पहुँचावन चाहे ।
क्यों नहिं मेरा आदर कीत[4] ॥ २२ ॥
जोरू लड़के गाली देवें ।
मूछ पकड़ वह खैंच खिंचीत ॥ २३ ॥
उनकी ताड़ मार नित सहता ।
उनसे तौ भी मन न फिरीत[5] ॥ २४ ॥
उनकी प्रीति लगी अस दृढ़ होय ।
लोहे की सँगलीत[6] ॥ २५ ॥
अब तो चेत ज़रा तू हे मन ।
त्याग पशू की रीत ॥ २६ ॥
खान पान और लोभ लहर में ।
क्यों बहता तज भीत[7] ॥ २७ ॥

१—चटक यानी टूट जाता है। २—भलाई के लिये। ३—शरारत। ४—किया। ५—फिरता है। ६—साँकल, ज़ंजीर। ७—भय, डर।

राधास्वामी कहत बुझाई ।
इससे बढ़ क्या गाऊँ गीत ॥ २८ ॥

१-शब्द ३६

गुरू मैं गुनहगार[1] अति भारी ॥ टेक ॥

काम क्रोध और छल चतुराई ।
इन सँग है मेरी यारी ॥ १ ॥
लोभ मोह अहंकार ईर्षा ।
मान बड़ाई धारी ॥ २ ॥
कपटी लम्पट[2] झूठा हिंसक[3] ।
अस अस पाप करा री ॥ ३ ॥
दुक्ख निरादर सहा न जाई ।
सुख आदर अभिलाष भरा री ॥ ४ ॥
बिंजन[4] स्वाद अधिक रस चाहे ।
मन रसना[5] यहि चाट पड़ा री ॥ ५ ॥
धन और कामिन चित्त बसाये ।
पुत्र कलित्तर[6] आस भरा री ॥ ६ ॥
नाना बिधि दुख पावत पापी ।
तौ भी यह करतूत न छाँड़ी ॥ ७ ॥

१—पापी । २—व्यभिचारी । ३—घातक, जीवों को मारने वाला । ४—व्यंजन, तरह तरह के भोजन । ५—ज़बान । ६—कलत्र यानी स्त्री ।

यह मन दुष्ट काल का चेरा[1]।
नित भरमावत निडर हुआ री ॥ ८ ॥
जब जब चोट पड़ी दुक्खन की।
तब डर डर कर भजन करा री ॥ ९ ॥
देखो दया मेहर सतगुरु की।
उसी भजन को मान लिया[2] री ॥ १० ॥
बुधि चतुराई बचन बनावट।
हार जीत की चरचा धारी ॥ ११ ॥
शेख़ी[3] बहुत प्रीति नहिं अंतर।
भोले भक्तन धोख[4] दिया री ॥ १२ ॥
नर नारी बहुतक बस कीन्हे।
मान प्रतिष्ठा भोग किया री ॥ १३ ॥
गुरु सँग प्रीति कपट कुछ डर की।
कभी थोड़ी कभी बहुत किया री ॥ १४ ॥
कहँ लग औगुन बरनूँ अपने।
याद न आवत भूल गया री ॥ १५ ॥
चोर चुग़ल इंद्री रस माता।
मतलब की सब बात बिचारी ॥ १६ ॥
ख़ुद-मतलबी निर्दई मानी।
बहुतन का अपमान किया री ॥ १७ ॥

१—ग़ुलाम। २—मंज़ूर कर लिया। ३—घमंड। ४—धोखा।

कोटिन पाप किये बहुतेरे ।
कहूँ कहाँ लग वार न पारी ॥ १८ ॥
हे सतगुरु अब दया बिचारो ।
क्या मुख ले मैं करूँ पुकारी ॥ १९ ॥
नहिं परतीत प्रीति नहिं रंचक[1] ।
कस कस मेरा करो उबारी ॥ २० ॥
मोसा[2] कुटिल और नहिं जग में ।
तुम सतगुरु मोहि लेव सुधारी ॥ २१ ॥
जतन करूँ तो बन नहिं आवत ।
हार हार अब सरन पड़ा री ॥ २२ ॥
यह भी बात कही मैं मुँह से ।
मन से सरना[3] कठिन भया री ॥ २३ ॥
सरना लेना यह भी कहना ।
झूठ हुआ मुँह का कहना री ॥ २४ ॥
तुम्हरी गति मति तुमहीं जानो ।
जस तस मेरा करो उबारी ॥ २५ ॥
मैं तो नीच निपट संशयरत[4] ।
लगे न चरनन प्रीति करारी[5] ॥ २६ ॥
मेरे रोग असाध[6] भरे हैं ।
तुम बिन को अस करे दवा री ॥ २७ ॥

१—थोड़ी सी भी । २—मेरे समान । ३—शरण ग्रहण करना ।
४—संशयात्मक । ५—तेज़ । ६—असाध्य, लाइलाज ।

जब चाहो जब छिन में टारो ।
मेहर दया की मौज निरारी[1] ॥ २८ ॥
बारंबार करूँ मैं बिनती ।
और प्रार्थना करूँ तुम्हारी ॥ २९ ॥
तुम बिन और न कोई दीखे ।
तुमहीं हो मेरे रखवारी[2] ॥ ३० ॥
बुरा बुरा फिर बुरा बुरा हूँ ।
जैसा तैसा आन पड़ा री ॥ ३१ ॥
अब तो लाज तुम्हें है मेरी ।
राधास्वामी खेवो[3] बला[4] री ॥ ३२ ॥

१—शब्द ४०

करत हूँ पुकार, आज सुनिये गुहार[5], मैं दीन हूँ अधीन तुम दाता दयार हो ॥ १ ॥

अब करिये सँभार, मेरी नाव है मँझधार, मैं दुखिया अति भार[6] तुम खेवट अगार[7] हो ॥ २ ॥

दूत और दुष्ट मोहि घेर लिया वार[8], दुख देत हैं अपार, भय दिखावत जमद्वार, तुम रक्षक हुशियार हो ॥ ३ ॥

१—निराली । २—रक्षक । ३—काटो । ४—मुसीबत, आफ़त । ५—टेर, दुहाई । ६—भारी । ७—बढ़कर, प्रधान । ८—इस ओर ।

लेना अब ख़बर मोर, मैं तो हूँ सरन तोर, काल किया बहुत ज़ोर, धूम धाम करत शोर, तुम सूरन[१] प्रधान हो ॥ ४ ॥

मेरी बुद्धि है मलीन, मन सुरत है अलीन[२], बल पौरुष सब छीन, तुम सतगुरु प्रबीन हो ॥ ५ ॥

मोहि दीजे इक दान, मैं माँगत हूँ निदान[३] सुर्त शब्द का निशान, तुम समरथ सुजान हो ॥ ६ ॥

बिरह नाहिं, प्रेम नाहिं, भक्ति भाव चाव[४] नाहिं, सरधा परतीत नाहिं, काम क्रोध लोभ माहिं कैसे करोगे निर्वाह हो ॥ ७ ॥

रोग सोग नित सतायँ, भजन सुमिरन बनत नाहिं, भोग बास घटत नाहिं, चिंता डर अधिक दाहिं[५], और कोई सुनत नाहिं तुम ही मेरे बैद[६] हो ॥ ८ ॥

संतन बिन कोइ नाहिं, सतगुरु बिन ठीक नाहिं, करम भरम नीक[७] नाहिं, शब्द बिना सीख[८] नाहिं, यही भीख दीजिये ॥ ९ ॥

सुरत को चढ़ाओ आज, शब्द का दिखाओ साज[९], सहसकँवल जाय भाज[१०], देखे वहँ का समाज, मन को तब होय लाज, यही काज कीजिये ॥ १० ॥

१—वीरों में । २—जो लीन न हो । ३—आख़िर । ४—शौक़, उमंग । ५—जलाते हैं । ६—वैद्य, हकीम । ७—अच्छे । ८—शिक्षा । ९—ठाट । १०—भाग कर ।

बंक परे त्रिकुट घाट, खुले फिर सुन्न बाट, महासुन्न खोल पाट, भँवरगुफा बाँध ठाट, सत्तशब्द पाय चाट[1], सतपुर पहुँचाइये ॥ ११ ॥

जहँ से परे अलख देख, लोक एक अगम पेख, राधास्वामी पद अलेख, पंडित न जाने भेख क़ाज़ी न मुल्ला शेख़, संत बिन न जाइये ॥ १२ ॥

एक कहूँ सीख मान, मन की तू छोड़ ठान[2], गुरु की गति अगम जान, शब्द भेद ले पहिचान, तेरी बुद्धि है अजान, काम क्रोध त्यागिये ॥ १३ ॥

सतसँग की क़दर जान, नरशरीर दुर्लभ मान, नाम-रस करो पान, गुरुस्वरूप धरो ध्यान, इंद्री मन कसो आन, पर्व पर्व चालिये ॥ १४ ॥

मित्र तेरा कोई नाहिं, कुल कुटंब लूट खाहिं, जोबन धन साथ नाहिं, जक्त भर्म फाँस माहिं काल कर्म खोस खाहिं, खान चार जाइये ॥ १५ ॥

जन्म जन्म नरक बास, जम दिखावे अधिक त्रास, तड़पे तू स्वाँस स्वाँस, पुजवे[3] न कहीं आस, पावे न सुख निवास, कष्ट बहु भोगाइये ॥ १६ ॥

जक्त भोग छोड़ चाह, सब से तू हो अचाह[4], संतन को खोज जाय, सतगुरु की सरन आय, बचन उनके मन समाय, बंद से छुड़ाइये ॥ १७ ॥

१—चसका। २—हठ, ज़िद। ३—पूरी होती। ४—निर्मोही।

गुरु का तू बचन पाल, मन की मति तुर्त टाल, बुद्धि के साँचे में ढाल, मनमुख का संग जाल[1], गुरुमुख की यही चाल, काल हाल[2] जारिये ॥ १८ ॥

सूरत नैना सँभाल, तिल अकाश फाड़ डाल, निरखो जोती जमाल[3], द्वारे धस बंकनाल, अनहद पर धरो ख़्याल, गगन में चढ़ाइये ॥ १९ ॥

सुन्न शिखर चंद्र देख, दसम द्वार सेत पेख, सरवर में मुक्ति लेख[4], किंगरी धुन सुन बिशेष, कर्म की मिटाओ रेख, हंस रूप धारिये ॥ २० ॥

महासुन्न अंध घोर, घाट अगम सुगम[5] तोड़, सूरत जहँ कीन पोढ़[6], सतगुरु सँग चली दौड़, भँवरगुफा सुना शोर, सोहँग में समाइये ॥ २१ ॥

आगे की गली लीन्ह, धुन अनंत शब्द चीन्ह, हंस मिले अति प्रबीन, प्रेम भाव बहुत कीन्ह, सत्तलोक द्वार लीन्ह, बीन धुन बजाइये ॥ २२ ॥

वहाँ से फिर चली पार, अलख लोक जा निहार[7], अलख पुरुष धुन सँभार, देखा अचरज उजार[8], किया जाय धुन अधार, अलख दर्श पाइये ॥ २३ ॥

अगम लोक ख़बर पाय ऊपर को चढ़ी धाय, अगम पुरुष दर्श पाय, तेजपुंज[9] अजब जाय, अमी सिंध पहुँची आय, अगम रूप धारिये ॥ २४ ॥

१—जला दो। २—तुरंत। ३—प्रकाश। ४—समझ। ५—सहज में। ६—मज़बूत। ७—देखा। ८—प्रकाश। ९—तेजसमूह।

यहँ से भी चली सुर्त, किया जाय वहाँ निर्त[1], जस समुद्र नदी रलत[2] चरनन पर सीस धरत, राधास्वामी संग मिलत, निज घर अपना पाइये ॥ २५ ॥

कहूँ कहा बहुत कही, यही बात है सही, जन्म जन्म भूल रही, चरन धूर धार लई, करम भरम सभी बही, राधास्वामी गाइये ॥ २६ ॥

लाओ अब प्रेम प्रीत, सतसँग में धरो चीत, पाओ फिर सत्त रीत, गाओ यह अगम गीत, बाज़ी यह लेव जीत, जग में कोइ नाहिं मीत, मेरी तू कर प्रतीत दिया सब बुझाइये[3] ॥ २७ ॥

१—शब्द ४१

घट का पट[4] खोल दिखाओ ॥ टेक ॥

यह मन जूझ जूझ कर हारा ।
लगे न एक उपाओ ॥ १ ॥
तुम समरत्थ कहा नहिं तुम्हरे ।
क्यों एती देर लगाओ ॥ २ ॥
मैं दुख सुख में खाउँ झकोले[5] ।
क्यों न पड़ा मेरा अब तक दाओ[6] ॥ ३ ॥

१—नृत्य, नाच । २—मिलती है । ३—सब समझा दिया । ४—परदा । ५—झोंके, झटके । ६—दाँव ।

अब ही दया करो मेरे दाता।
मन और सूरत गगन चढ़ाओ ॥ ४ ॥
मन तो दुष्ट बिरह नहिं लावे।
प्रेम प्रीति का दान दिलाओ ॥ ५ ॥
यह तो सुख झूठे ही चाहे।
सच्चे की परतीत न लाओ ॥ ६ ॥
भोग बिलास जगत के माँगे।
सुरत शब्द का रस नहिं पाओ ॥ ७ ॥
क्योंकर कहूँ किस बिधि समझाऊँ।
गुरु का बचन न हृदे समाओ ॥ ८ ॥
इस मन की कुछ गढ़त[1] अनोखी।
शब्द माहिं कुछ प्रेम न भावो ॥ ९ ॥
कैसे बचे पचे चौरासी।
यह नहिं चढ़ता गुरु की नावो ॥१०॥
संसारी के धक्के खावे।
फिर जमपुर में पिटता जाओ ॥११॥
ऐसे दुक्ख सहेगा बहुतक।
अब नहिं माने गया भुलाओ ॥१२॥
सब घट में गुरु तुम ही प्रेरक[2]।
मुझ दुखिया को क्यों न बुलाओ ॥१३॥

१—बनावट। २—प्रेरणा करने वाले।

तुम बिन और न कोई मेरा ।
चार लोक में तुमहिं दिखाओ ॥१४॥
अब तो दया करो राधास्वामी ।
जैसे बने तैसे घाट चढ़ाओ ॥१५॥

२—शब्द ४२

सखी री मैं कैसी करूँ ।
मेरा मन नहिं आवे हाथ ॥ १ ॥
सतसँग करे बचन नहिं धारे ।
संशय भरम रहे साथ ॥ २ ॥
भजन करूँ तो चित नहिं ठहरे ।
तन मन अति अकुलात ॥ ३ ॥
सुमिरन करूँ तो अधिक घुमावे ।
अनेक ख़्याल भरमात ॥ ४ ॥
ध्यान करूँ तो रूप न ठहरे ।
कुछ भी रस नहिं पात ॥ ५ ॥
सेवा करूँ तो होय अभिमानी ।
गुरु पै ज़ोर चलात ॥ ६ ॥
सतसँगियन से मान ईर्षा ।
सबको दुख पहुँचात ॥ ७ ॥
जब जब बचन सुने सतसँग के ।
तब कुछ कुछ पछतात ॥ ८ ॥

फिर फिर भूले समझ न लावे।
भरमन में भरमात ॥ ९ ॥
काम क्रोध की धारा भारी।
उन सँग सदा बहात ॥१०॥
रोग सोग अपमान दशा में।
गुरु से भरमा जात ॥११॥
कहा कहूँ कुछ पेश न जावे।
मैं तो हारा जात ॥१२॥
राधास्वामी बिन अब कौन सँभारे।
वे धरें मेहर का हाथ ॥१३॥
दया दृष्टि कर मोको हेरें।
देहैं प्रेम की दात ॥१४॥
तब सब कारज होवें पूरे।
छूटें सब उतपात ॥१५॥

२–शब्द ४३

सखी री क्यों सोच करे।
तोहि राधास्वामी मिल गए आय ॥ १ ॥
उमँग सहित सतसँग कर उनका।
बचन सार रस पीओ आय ॥ २ ॥

दृष्टि जमाय नैन नित निरखो ।
दरशन रस ले रहो अघाय[1] ॥ ३ ॥
जब जब सेव मिले भागन से ।
प्रेम अंग ले ताहि कमाय ॥ ४ ॥
सुमिरन भजन ध्यान रस माती ।
अमी धार में नित्त अन्हाय ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन ।
चरन कँवल में रहे लौ लाय[2] ॥ ६ ॥
गुरु चरनन बिन आस न कोई ।
गुरु प्रसन्नता नित्त कमाय ॥ ७ ॥
ऐसी रहनि रहो जो प्यारी ।
तब सुत निर्मल चरन समाय ॥ ८ ॥
दिन दिन आनँद बढ़ता दीखे ।
नित प्रति प्रेम उमँग अधिकाय ॥ ९ ॥
मन मूरख की पेश न जावे ।
काल रहे मुरझाय ॥ १० ॥
राधास्वामी परम दयाला ।
सब कारज किये पूरन आय ॥ ११ ॥
मैं तो नीच निकाम अनाड़ी ।
अपनी दया से लिया चरन लगाय ॥ १२ ॥

१—तृप्त हो जाओ । २—लगन लगा कर ।

२-शब्द ४४

सखी री मेरा मनुआँ निपट अनाड़ी ।
गुरु बचन चित्त नहिं धारी ॥ १ ॥
सोचत समझत फिर फिर भूलत ।
भगती रीति बिसारी ॥ २ ॥
क़ौल क़रार[1] किये मैं बहुतक ।
लज्जित नहिं निज बचन तुड़ारी ॥ ३ ॥
ऐसा ढीठ निलज्ज भोग बस ।
गुरु का नहिं भय भाव रखा री ॥ ४ ॥
कैसी करूँ कुछ बस नहिं चाले ।
गुरु दयाल बिन कौन सँभारी ॥ ५ ॥
परस[2] चरन अब करूँ बीनती ।
हे राधास्वामी मोहि लेउ सुधारी ॥ ६ ॥
मेरा बल कछु पेश न जावे ।
हार हार इस मन से हारी ॥ ७ ॥
तुम बिन और न कोई समरथ ।
तुम राखो राखनहारी[3] ॥ ८ ॥
चरन सरन ले आरत धारूँ ।
थाली प्रीति सजा री ॥ ९ ॥
दीन अधीन होय चरनन में ।
माँगूँ मेहर दया री ॥१०॥

१—वादे । २—छूकर । ३—रक्षा करने वाले ।

प्रीति प्रतीति देव अब पूरी ।
काटो मन के बंधन भारी ॥११॥
राधास्वामी दीनदयाला ।
सुनिये अरज़ हमारी ॥१२॥

२-शब्द ४५

क्यों घबराओ प्रानपियारी ।
राधास्वामी जल्दी लेहैं सुधारी ॥ १ ॥
चरन सरन चित में दृढ़ करना ।
सुरत डोर लागे गुरु चरना ॥ २ ॥
काल करम की पेश न जावे ।
मन माया फिर नहिं भरमावे ॥ ३ ॥
सतगुरु दया रहे तुम संगा ।
निसदिन बाढ़े प्रेम उमंगा ॥ ४ ॥
मन और सुरत उलट नभ धावें ।
मेहर दया की बरखा पावें ॥ ५ ॥
राधास्वामी पिता करें अति प्यारा ।
छिन में तुमको लेहैं उबारा ॥ ६ ॥
यह कहना मेरा साँचा मानो ।
राधास्वामी को निज प्रीतम जानो ॥ ७ ॥
जीव दया निज हिरदे धारें ।
बल अपना दे सुरत उबारें ॥ ८ ॥

अब चिंता मन में मत राखो ।
राधास्वामी २ छिन छिन भाखो ॥ ९ ॥
संशय भरम न लाओ जिय में ।
आस भरोस धरो दृढ़ हिय में ॥ १० ॥
राधास्वामी काज करें सब पूरे ।
सुरत होय उन चरनन धूरे ॥ ११ ॥

२—शब्द ४६

डगर मेरी रोक रहा मन जार ॥ टेक ॥
इंद्रियन सँग यह हुआ दिवाना ।
भरम रहा भोगन की लार ॥ १ ॥
नित नई तरंग उठावत छिन छिन ।
जग में बहावत सूरत धार ॥ २ ॥
समझ बूझ कुछ चित नहिं धारे ।
ढीठ हुआ मन निपट गँवार ॥ ३ ॥
मेरी कहन नेक नहिं माने ।
सरन गहूँ सतगुरु दरबार ॥ ४ ॥
जो निज मेहर करें गुरु अपनी ।
तब यह मन हो जावे यार ॥ ५ ॥
परमारथ की रीति समझ कर ।
नित्त कमावे उसकी कार[1] ॥ ६ ॥

१—कमाई करे ।

उलट जगत से पलटे घट में ।
मगन होय सुन धुन झनकार ॥ ७ ॥
तजत पिंड रस पियत अधर में ।
राधास्वामी चरन निहार ॥ ८ ॥

२-शब्द ४७

अरी हे सहेली प्यारी, दूत बिरोधी भारा
गुरु बल इनको मारो ॥ टेक ॥
काम क्रोध और मोह और लोभा ।
मद और मान बड़ाई शोभा ॥
इनसे सब कोइ हारो ॥ १ ॥
गुरु की दया ले इनसे लड़ना ।
सुरत शब्द ले ऊपर चढ़ना ॥
या बिधि इनको टारो[1] ॥ २ ॥
जब लग घट में घाट न बदले ।
मन और सुरत रहें यहाँ गदले[2] ॥
फिर फिर भरमें वारो ॥ ३ ॥
जिस पर मेहर गुरू की होई ।
पार जाय निरमल होय सोई ॥
काल जाल से न्यारो ॥ ४ ॥

१—हटाओ । २—मैले ।

डरत रहो बैरियन से भाई ।
राधास्वामी चरन ओट[1] गहो आई ॥
सहज करें निरवारो ॥ ५ ॥

२–शब्द ४८

अरी हे सहेली प्यारी, हँगता बैरिन भारी ।
दीन ग़रीबी धारो ॥ टेक ॥
जब लग मन में मान समाना ।
घट अंतर में दख़ल न पाना ॥
मद और मोह बिसारो ॥ १ ॥
बिना दीनता दया न पावे ।
बिना दया नहिं शब्द समावे ॥
जाय न भौ के पारो ॥ २ ॥
नीच निकाम जान अपने को ।
निपट अजान मान अपने को ॥
तब पाय मेहर अपारो ॥ ३ ॥
अस घट प्रेम गुरू का जागे ।
झीनी सुरत चरन में लागे ॥
सुन अनहद झनकारो ॥ ४ ॥

१—शरण ।

सुन सुन शब्द गगन को धावे।
वहँ से सतपुर जाय समावे॥
राधास्वामी चरन निहारो॥ ५॥

२-शब्द ४६

अरी हे सहेली प्यारी, मन से क्यों तू हारे।
गुरु हैं तेरे सहाई॥ टेक॥
राधास्वामी को तुम समरथ मानो।
प्रीति प्रतीति चरन में आनो॥
काल से लेहिं बचाई॥ १॥
दृढ़ कर उनकी सरन सँभारो।
हानि लाभ जग कुछ न बिचारो॥
घट में प्रेम जगाई॥ २॥
राधास्वामी तेरी दया बिचारें।
काल बिघन वे सब ही टारें॥
मन से खूँट छुड़ाई॥ ३॥
मेहर से घट में दरस दिखावें।
शब्द शब्द धुन अजब सुनावें॥
सूरत अधर चढ़ाई॥ ४॥
गुरु पद परस अधर को धावे।
सत्तपुरुष का दरशन पावे॥
राधास्वामी धाम लखाई॥ ५॥

२—शब्द ५०

कैसे चलूँ री अधर चढ़ सुन नगरी ॥ टेक ॥
मन मेरा चंचल चित्त मलीना ।
गैल कठिन कस धरूँ पग[1] री ॥ १ ॥
गुरु दयाल बिन कौन सहाई ।
उनके चरन में रहूँ लग री ॥ २ ॥
वे दयाल जब दया बिचारें ।
तब स्रुत चढ़े अधर डगरी[2] ॥ ३ ॥
काल करम को दूर हटावें ।
और निकारें माया मगरी ॥ ४ ॥
सहसकँवल चढ़ त्रिकुटी धाई ।
सुन में हंसन सँग पग री ॥ ५ ॥
मुरली धुन सुन आगे चाली ।
महाकाल भी रहा थक री ॥ ६ ॥
पुरुष दया ले अधर सिधारी ।
राधास्वामी चरन माहिं जकड़ी ॥ ७ ॥

२—शब्द ५१

कैसे गहूँ री सरन गुरु बिन परतीत ॥ टेक ॥
मन इंद्री भोगन में अटके ।
नेक न छोड़ें जग की प्रीत ॥ १ ॥

१—पैर। २—मार्ग।

बचन सुनत और फिर बिसरावत ।
चित्त न धारें भक्ती रीत ॥ २ ॥
काल करम मोहि नित भरमावें ।
बिन गुरु दया इन्हें कस जीत ॥ ३ ॥
मेहर करें सतगुरु जब अपनी ।
दूर हटावें सभी अनीत[1] ॥ ४ ॥
हे राधास्वामी अब दया बिचारो ।
मेरे हिये में बसाओ चरन पुनीत ॥ ५ ॥

२-शब्द ५२

हठीला मनुआँ माने न बात ॥ टेक ॥
अपनी ओछी समझ न त्यागे ।
सतसँग बचन न चित्त समात ॥ १ ॥
बारंबार जगत सँग लिपटै ।
भोगन में रहे सदा भुलात ॥ २ ॥
जग को सत्त जान कर पकड़ा ।
निज करता[2] की सुद्धि न लात ॥ ३ ॥
साध गुरू सँग प्रीति न करता ।
जग जीवन सँग मेल मिलात ॥ ४ ॥
हित का बचन दया कर बोलें ।
यह मूरख परतीत न लात ॥ ५ ॥

१—शरारत, अंधेर । २—कर्त्ता ।

जग बंधन हित चित से चाहे।
छूटन की नहिं सुनता बात ॥ ६ ॥
ऐसे मूरख मन के मौजी।
फिर फिर जग में भटका खात ॥ ७ ॥
जो चाहें यह जीव गुज़ारा।
तो सतगुरु का पकड़ें हाथ ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरन बसाय हिये में।
भेद पाय फिर सरन समात ॥ ९ ॥

२–शब्द ५३

कठोरा मनुआँ सुने न बैन ॥ टेक ॥
जगत भोग में रहे भुलाना।
घट अंतर की परखे न सैन[1] ॥ १ ॥
दम दम दुखी बिकल रहे तन में।
नहिं पावे सुख चैन ॥ २ ॥
साध गुरू बहु बिधि समझावें।
नहिं माने उन कहन ॥ ३ ॥
करम धरम में निसदिन खपता[2]।
पाप और पुन्न भार सिर लेन ॥ ४ ॥
जब लग सतसँग संत न पावे।
खुलै नहीं कभी हिरदे नैन ॥ ५ ॥

१—इशारा। २—परेशान होता है।

नाम बिना उद्धार न होवे ।
राधास्वामी नाम सुमिर दिन रैन ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन गहो मेरे प्यारे ।
छूटे काल करम का देन ॥ ७ ॥

२–शब्द ५४

मूरख मनुआँ भोग न छोड़े ।
याहि कस समझाऊँ री ॥ १ ॥
बहु बिधि याहि समझौती दीन्ही ।
देख भोग ललचाऊँ री ॥ २ ॥
भोग करे बहु बिधि दुख पावे ।
फिर फिर में पछताऊँ री ॥ ३ ॥
बिन गुरु कौन करे मेरी रच्छा ।
उन चरनन में धाऊँ री ॥ ४ ॥
मेहर करें या मन को सँभालें ।
तब निज घर में जाऊँ री ॥ ५ ॥
सतसँग करूँ बचन उर धारूँ ।
शब्द में सुरत लगाऊँ री ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला ।
मैं तो तुमहीं नित्त मनाऊँ री ॥ ७ ॥

२-शब्द ५५

हमें घर जाने दे
मन क्यों तू बिघन कराय ॥ टेक ॥
जनम जनम जग में भरमाया ।
भोगन संग रहा अटकाय ॥ १ ॥
अबके तैं भल[1] औसर पाया ।
गुरु चरनन में प्रीति लगाय ॥ २ ॥
जो यह कहन न मानो मेरी ।
बार बार चौरासी धाय ॥ ३ ॥
बिषयन का तुम संग तियागो ।
भोग बासना दूर हटाय ॥ ४ ॥
गुरु की दया ले घट में चालो ।
चढ़ो अधर तुम धुन रस पाय ॥ ५ ॥
निरमल होय मिलै जाय गुरु से ।
नित्त नवीन पिरेम जगाय ॥ ६ ॥
सतगुरु संग चढ़त ऊँचे को ।
सत्तलोक में आरत लाय ॥ ७ ॥
चरन सरन राधास्वामी हिये धर ।
आज लिया निज काज बनाय ॥ ८ ॥

१—अच्छा ।

२-शब्द ५६

सखी री मैं निसदिन रहूँ घबरानी ॥ टेक ॥
मन इंद्री की चाल निरख कर ।
बहु बिधि रहूँ पछतानी ॥
भोग बासना छोड़त नाहीं ।
उन सँग रहे अटकानी ॥
दरद कस कहूँ बखानी ॥ १ ॥
बहु बिधि याहि समझौती दीन्ही ।
नेक कहन नहिं मानी ॥
मैं तो हार हार अब बैठी ।
गुरु बिन कौन बचानी ॥
कहो मेरी कहा बसानी ॥ २ ॥
सुमिरन ध्यान में ठहरे नाहीं ।
थोथा भजन करानी ॥
बहु बिधि अपना ज़ोर लगाऊँ ।
छोड़े न भरम कहानी ॥
छीर तज पीवे पानी ॥ ३ ॥
गुरु दयाल की मेहर परखती ।
तो भी धुन में प्रीति न आनी ॥
घट में चंचल नेक न ठहरे ।
चिंता में रहे नित्त भुलानी ॥
कहो कस जुगत कमानी ॥ ४ ॥

अब थक कर मैं करूँ बीनती।
हे गुरु दृष्टि मेहर की आनी॥
छिमा करो और दया उमँगाओ।
हे राधास्वामी पुरुष सुजानी॥
प्रेम का देवो दानी॥ ५॥

२–शब्द ५७

मनुआँ हठीला कहन न माने।
भोगन में रस लेत॥ १॥
गली गली में भरमत डोले।
करे न गुरु सँग हेत[१]॥ २॥
सतगुरु दाता भेद बतावें।
सुरत शब्द रस देत॥ ३॥
यह मूरख भरमन में अटका।
निस दिन रहे अचेत॥ ४॥
माया सँग नित रहत भुलाना।
कस पावे पद सेत॥ ५॥
कुटुँब जगत की प्रीति न छोड़े।
मर मर होय पिरेत॥ ६॥

१—प्रेम।

राधास्वामी जब निज दया बिचारें ।
तब छूटे जम खेत[1] ॥ ७ ॥

२—शब्द ५८

मनुआँ कहन न माने सखी ।
मैं कौन उपाय करूँ ॥ टेक ॥
बहु बिधि रहा समझाय ।
भरमता फिर फिर भोगन में ॥
गुरु की कान न माने मूरख ।
क्योंकर बाँध रखूँ ॥ १ ॥
निरभय होय तरंग उठावत ।
रोक टोक माने नाहीं ॥
मैं तो कीन्हे जतन अनेका ।
कैसे इसको मार मरूँ ॥ २ ॥
सतसँग करता नित्त ।
शब्द का करता अभ्यासा ॥
अपनो हठ नहिं छोड़े ।
कहो फिर कैसे पार पड़ूँ ॥ ३ ॥
गुरु की दया ले संग ।
सुरत रहे चरनन में राती ॥

१—वह लोक जहाँ जम का राज्य है ।

राधास्वामी सरन सँभार ।
जगत से या विधि आज तरूँ ॥ ४ ॥

२-शब्द ५६

अहो मेरे सतगुरु अहो मेरी जान ।
अहो मेरे प्यारे अहो मेरे प्रान ॥ १ ॥
नज़र मेहर की मुझपै अब कीजिये ।
मुझे अबके जम से छुड़ा लीजिये ॥ २ ॥
निकालो मुझे काल के जाल से ।
बचा लेव माया के जंजाल से ॥ ३ ॥
तड़पता हूँ दर्शन को दिन रात में ।
सहूँ दुक्ख मन इंद्री साथ में ॥ ४ ॥
जगत भोग देवें झकोले सदा ।
पंच दूत फोड़ें फफोले जुदा ॥ ५ ॥
बिना दर्श तुम्हरे बने कैसे काम ।
मेहर बिन करे कौन मेरी सहाम[1] ॥ ६ ॥
सुनो बीनती मेरी दाता दयाल ।
दरश दे करो आज मुझको निहाल ॥ ७ ॥
जो चाहो करो मुझपै छिन में दया ।
नहीं कुछ कठिन तुम्हरे आगे मया[2] ॥ ८ ॥

१—सहायता । २—कृपा ।

मेरे वास्ते अब हुए क्यों कठोर।
मैं क़ुरबान जाऊँ तुमपै हे बंदीछोड़ ॥ ९ ॥
सदा से तुम्हारा दयालू है नाम।
करो क्यों नहीं मेरा अब पूरा काम ॥ १० ॥
चरन में करूँ बीनती बार बार।
सुनो हे दयाल मेरी जल्दी पुकार ॥ ११ ॥
दरश देके सूरत चढ़ा दीजिये।
मुझे रस भरी धुन सुना दीजिये ॥ १२ ॥
मिटाओ मेरे अब सभी दुक्ख साल[1]।
करो मुझको निरभय हे दाता दयाल ॥ १३ ॥
सरन में पड़ा तुम्हरे दुनिया से भाज[2]।
मेरे काज की अब है तुमही को लाज ॥ १४ ॥
तुम्हारा हि हूँ जैसा तैसा कपूत।
बना लीजिये मुझको अपना सपूत ॥ १५ ॥
सरापा[3] भरा हूंगा मैं खोट[4] से।
बचाओ मुझे अपनी अब ओट दे ॥ १६ ॥
करो राधास्वामी मेहर की निगाह।
लेवो मुझको अब जैसे तैसे निबाह ॥ १७ ॥
बिना तुम चरन कोइ दीखे न ठौर[5]।
बिना तुम सहाई नहीं कोइ और ॥ १८ ॥

१—कष्ट। २—भाग कर। ३—पूर्ण रूप से। ४—बुराई। ५—जगह।

मैं बालक पड़ा हूँ तुम्हारी सरन।
　सँभालो दिखाओ मुझे निज चरन ॥ १९ ॥
बिरह में रहूँ मैं तपत रात दिन।
　दरश बिन नहीं चैन मोहि एक खिन[1] ॥ २० ॥
गुनाहों से अपने मैं शरमिंदा हूँ।
　छिमा कर छिमा मैं तेरा बंदा हूँ ॥ २१ ॥
नहीं बनते मुझसे जो पाप और क़सूर।
　छिमा की तेरी होती फिर क्या ज़रूर ॥ २२ ॥
मैं नालायक़ हूँ इसमें कुछ शक नहीं।
　दया जो करे प्यार अचरज नहीं ॥ २३ ॥
क़सूरों को बख़्शो मेरे हे दयाल।
　ग़रीबी पै मेरे धरो अब ख़्याल ॥ २४ ॥
दया के भरोसे बने सब क़सूर।
　मेहर से देओ बख़्श आली हज़ूर ॥ २५ ॥
मैं तुम्हरा हूँ और तुम हो मेरे सही।
　पिता पुत्र का नाता पूरा यही ॥ २६ ॥
पिता तुम हो और मैं हूँ बालक समान।
　करो मेहर दीन और निबल मोहि जान ॥ २७ ॥
लगाया जिसे तुमने चरनों के साथ।
　सँभाला उसे मेहर से देके हाथ ॥ २८ ॥

१—छण, लमहा।

करो जब कि तुम निंदकों का उधार ।
मुझे कैसे छोड़ोगे अब नौ के वार ॥ २९ ॥
मेहर माँगूँ फिर मेहर माँगूँ दयार ।
लेवो प्यारे राधास्वामी जल्दी उबार ॥ ३० ॥

दया व मेहर की प्राप्ति के लिए सतगुरु से फ़रियाद और पुकार

१—शब्द ६०

रोम रोम मेरे तुम आधार ।
रग रग मेरी करत पुकार ॥
अंग अंग मेरा करे गुहार[1] ।
बंद बंद से करूँ जुहार[2] ॥
हे राधास्वामी अधम उधार ।
मैं किंकर[3] तुम दीनदयार ॥ १ ॥
इंद्री मन मेरे भरे बिकार ।
तन भी बँधा जगत की लार ॥
मैं सब बिधि बहता भौ धार ।
तुम ही पार उतारनहार ॥

१—पुकार । २—प्रणाम । ३—तुच्छ सेवक ।

हे राधास्वामी सुख भंडार।
मैं अति दीन फँसा संसार ॥ २ ॥
काढ़ि निकारो मोहि दातार।
दात तुम्हारी अगम अपार ॥
दयासिंध जीवन आधार।
तुम बिन कोइ न सँभारनहार[1] ॥
हे राधास्वामी सरन तुम्हार।
गही आन मैं नीच नकार[2] ॥ ३ ॥
सदा रहूँ तुम चरन अधार।
कभी न बिछड़ूँ यही पुकार ॥
निसदिन राखूँ हिये सँभार।
चरन तुम्हार मोर आधार ॥
हे राधास्वामी अपर अपार।
मोहि दिखाओ निज दरबार ॥ ४ ॥
मम करनी कहिं करो बिचार।
तो मैं ठहरन जोग[3] न द्वार ॥
तुम गंभीर धीर जग पार।
मैं डूबत हूँ भौजल वार ॥
हे राधास्वामी लगाओ किनार।
तुम खेवटिया[4] सबसे न्यार ॥ ५ ॥

१—सँभालने वाला। २—निकम्मा। ३—योग्य, लायक़। ४—नाव चलाने वाले।

चोर चुग़ल बरतूँ अहंकार ।
कपट कुटिलता बड़ा लबार ॥
काम क्रोध और मोह पियार ।
क्या क्या बरनूँ भरा बिकार ॥
हे राधास्वामी छिमा सँभार ।
लीजै मुझको अभी उबार ॥ ६ ॥
तुम महिमा का वार न पार ।
शेष गनेश रहे सब हार ॥
माया ब्रह्म नहीं औतार ।
कर न सके बहे काली[1] धार ॥
हे राधास्वामी सब के पार ।
इन सबके तुमहीं आधार ॥ ७ ॥
मैं तुम चरन जाउँ बलिहार ।
देख न सकूँ रूप उजियार ॥
तेजपुंज[2] तुम अगम अपार ।
चाँद सूर की जहाँ न शुमार ॥
हे राधास्वामी तुम दीदार ।
बिना मेहर को करे अधार ॥ ८ ॥
राधास्वामी राधास्वामी नाम तुम्हार ।
यही मेरा कुल और यही परिवार ॥

१—काल की । २—प्रकाश के समूह ।

राधास्वामी राधास्वामी बारंबार ।
कहत रहूँ और रहूँ हुशियार ॥
हे राधास्वामी मर्म तुम्हार ।
तुम्हरी दया से पाऊँ सार ॥ ९ ॥
गुरु स्वरूप धर लिया औतार ।
जीव उबारन आये संसार ॥
नर स्वरूप धर किया उपकार ।
तुम सतगुरु मेरे परम उदार ॥
हे राधास्वामी शब्द दुवार ।
खोल दिया तुम बज्र किवाड़ ॥ १० ॥
लीला तुम्हरी अजब बहार ।
कह न सके कोइ वार न पार ॥
जिसे दिखाओ सो देखनहार ।
तुम बिन कोइ न परखनहार ॥
हे राधास्वामी गुरू हमार ।
तुम बिन कौन करे निरवार ॥ ११ ॥

१–शब्द ६१

मेरी पकड़ो बाँह हे सतगुरु ।
नहिं बह्यो धार भवसागर ॥ १ ॥

मैं बचूँ जाल से क्योंकर ।
तुम बिन कोइ और न आसर[1] ॥ २ ॥
अब मिला अजायब औसर ।
जम काल बड़ा है फनधर[2] ॥ ३ ॥
कोइ मंत्र सिखाओ आकर ।
लो चरन ओट किरपा कर ॥ ४ ॥
मैं थका चौरासी फिर फिर ।
अब कैसे मिले अमर घर ॥ ५ ॥
तब सतगुरु कहा दया कर ।
अब सुरत चढ़ाओ गगन पर ॥ ६ ॥
वह घाटी है अति अड़बड़ ।
मन इंद्री खैंच उधर धर ॥ ७ ॥
तब मिले शब्द तोहि अस्थिर[3] ।
तन मन धन आज अरप धर ॥ ८ ॥
गुरु प्रीति करो चित सम[4] कर ।
यह आरत करो अधर चढ़ ॥ ९ ॥
राधास्वामी सरन तू दृढ़ कर ।
फिर छोड़ न कभी उमर भर ॥ १० ॥

१—आसरा, सहारा । २—साँप । ३—ठहराऊ । ४—शांत ।

१-शब्द ६२

अब मन आतुर[१] दरस पुकारे ।
कल नहिं पकड़े, धीर न धारे ॥ १ ॥
दम दम छिन छिन दर्द दिवानी ।
सोऊँ न जागूँ, अन्न न पानी ॥ २ ॥
बेकल तड़पूँ पिया तुम कारन[२] ।
डस डस खावत चिंता नागिन ॥ ३ ॥
कौन उपाय करूँ अब सजनी ।
भौजल से अब काहे को[३] तरनी ॥ ४ ॥
याहि सोच में दिन दिन जलती ।
कोइ न सँभारे आली पल पल गलती ॥ ५ ॥
पिया तो बसें मेरे लोक चतुर[४] में ।
मैं तो पड़ी आय मृत्युनगर[५] में ॥ ६ ॥
बिन मिलाप प्रीतम दुख भारी ।
राह चलूँ नहिं जात चला री ॥ ७ ॥
घाट बाट जहँ अति अँधियारी ।
कोइ न सुने मेरी बहुत पुकारी ॥ ८ ॥
जतन न सूझे हिम्मत हारी ।
अपने पिया की मैं ना हुइ प्यारी ॥ ९ ॥

१—व्याकुल, अधीर । २—तुम्हारे लिये । ३—क्योंकर । ४—चौथे । ५—मर्त्यलोक ।

जो पिया चाहें तो दम[1] में बुलावें ।
शब्द डोर दे अभी चढ़ावें ॥ १० ॥
भागहीन मैं धुन नहिं पकड़ी ।
काम क्रोध माया रही जकड़ी ॥ ११ ॥
सुरत शब्द मारग जो पाया ।
सो भी मुझसे गया न कमाया ॥ १२ ॥
मैं तो सब बिधि हीन अधीनी ।
मन नहिं निर्मल सुरत मलीनी ॥ १३ ॥
तुम समरथ स्वामी अति परबीना[2] ।
मैं तड़पूँ जैसे जल बिन मीना ॥ १४ ॥
काज करो मेरा आज सँभारी ।
तुम्हरी सरन स्वामी मैं बलिहारी ॥ १५ ॥
हार पड़ी अब तुम्हरे द्वारे ।
तुम बिन अब मोहि कौन निहारे ॥ १६ ॥
तब स्वामी बोले अस बानी ।
मौज निहारो रहो चुप ठानी ॥ १७ ॥
धीरज धरो करो बिस्वासा ।
अब करूँ पूरन तुम्हरी आसा ॥ १८ ॥
सुनत बचन अब सीतल भई ।
चरन सरन स्वामी निश्चल गही ॥ १९ ॥

१—छिन । २—चतुर ।

१–शब्द ६३

अब मैं कौन कुमति उरझानी[1]।
देश पराया भई हूँ बिगानी[2] ॥ १ ॥
अब की बार मोहि लेव सुधारी।
मैं चरनन पर निसदिन वारी[3] ॥ २ ॥
रहुँ पछताय झुरूँ मन अपने।
कैसे लगूँ मैं सँग पिया अपने ॥ ३ ॥
मैं धरती पिया बसें अकासा।
बिन पाये पिया रहूँ उदासा ॥ ४ ॥
हे सतगुरु सुनो मेरी टेरा[4]।
काल करम अब मारो घेरा ॥ ५ ॥
दीन दुखी होय करत पुकारी।
सुन स्वामी यह बिनती हमारी ॥ ६ ॥
तुम दयाल सबको देओ दाना।
मैं ही अभागिन भइ दुखखाना[5] ॥ ७ ॥
क्या कहुँ अब मैं अपनी पीर[6] की।
जस कोइ छेदत भाल[7] तीर की ॥ ८ ॥
तब स्वामी ने दियो दिलासा।
प्रेम पंख ले उड़ो अकासा ॥ ९ ॥

१—फँसी। २—पराई। ३—बलिहारी। ४—पुकार। ५—दुख की खान।
६—पीड़ा। ७—नोक।

दया हुई अब मिली पिया से ।
हरी पीर दुख दूर जिया[1] से ॥ १० ॥

१-शब्द ६४

गुरु गहो आज मेरी बहियाँ ।
मैं बसूँ तुम्हारी छैयाँ ॥ १ ॥
कलमल[2] सब मेरे दहियाँ[3] ।
मैं छोड़ी मन परछैयाँ ॥ २ ॥
फिर चलूँ तुम्हारी रहियाँ ।
तुम बिन मेरा कोइ न गुसैयाँ[4] ॥ ३ ॥
उजड़ा घर तुमहिं बसैयाँ ।
दुख जन्म जन्म में सहियाँ ॥ ४ ॥
अब करूँ सोइ तुम कहियाँ ।
मेटो जग भूलभुलैयाँ ॥ ५ ॥
कर्मन से खूँट[5] छुड़ैयाँ ।
शब्दारस सार पिलैयाँ ॥ ६ ॥
मैं दुख सुख बहुतक सहियाँ ।
कुल लाज तजी नहिं जैयाँ ॥ ७ ॥
इंद्री बस आन पड़ैयाँ ।
भोगन में बहुत फँसैयाँ ॥ ८ ॥

१—हृदय । २—पाप । ३—जल गये । ४—मालिक । ५—पल्ला ।

ऐसी कोइ कहन न कहियाँ।
जैसी तुम बात सुनैयाँ ॥ ९ ॥
गगना में सुरत चढ़ैयाँ।
मन माया दोऊ पचैयाँ[1] ॥१०॥
सतपुरुष भेद बतलैयाँ।
चौथा पद अगम दिखैयाँ ॥११॥
नैया मेरी पार लगैयाँ।
फिर अलख अगम दरसैयाँ ॥१२॥
राधास्वामी चरन समैयाँ।
छिन छिन में लेउँ बलैयाँ ॥१३॥

१–शब्द ६५

नाम दान अब सतगुरु दीजे।
काल सतावे स्वाँसा छीजे[2] ॥ १ ॥
दुख पावत मैं निसदिन भारी।
गही आय अब ओट[3] तुम्हारी ॥ २ ॥
तुम समान कोइ और न दाता।
मैं बालक तुम पित और माता ॥ ३ ॥
मोको दुखी आप कस देखो।
यह अचरज मोहि होत परेखो[4] ॥ ४ ॥

१—नष्ट हों। २—घटती है। ३—सरन, आसरा।
४—विचार करने से।

मैं हूँ पापी अधम विकारी।
भूला चूका छिन छिन भारी ॥ ५ ॥
औगुन अपने कहँ लग बरनूँ।
मेरी बुधि समझे नहिं मरमू ॥ ६ ॥
तुम्हरी गति मति नेक न जानूँ।
अपनी मति अनुसार बखानूँ ॥ ७ ॥
तुम समरथ और अंतरजामी।
क्या क्या कहूँ मैं सतगुरु स्वामी ॥ ८ ॥
मौज करो दुख अंतर हरो[1]।
दयादृष्टि अब मोपै धरो ॥ ९ ॥
माँगूँ नाम, न माँगूँ मान।
जस जानो तस देव मोहि दान ॥ १० ॥
मैं अति दीन भिखारी भूखा।
प्रेम भाव नहिं सब विधि रूखा ॥ ११ ॥
कैसे दोगे नाम अमोला।
मैं अपने को बहु बिधि तोला[2] ॥ १२ ॥
होय निरास सबर[3] कर बैठा।
पर मन धीरज धरे न नेका[4] ॥ १३ ॥
शायद कभी मेहर हो जावे।
तो कहुँ नाम नोक[5] मिल जावे ॥ १४ ॥

१—दूर करो। २—जाँच लिया। ३—सब्र, संतोष। ४—ज़रा।
५—ज़रा सा।

बिना मेहर कोइ जतन न सूझे ।
बख़्शिश होय तभी कुछ बूझे ॥१५॥
किनका नाम करे मेरा काज ।
हे सतगुरु मेरी तुमको लाज ॥१६॥
अब तो मन कर चुका पुकार ।
राधास्वामी करो उधार ॥१७॥

१–शब्द ६६

गुरु करो मेहर की दृष्टि, दास पल पल दुख पावत ।
मैं आरत करूँ बनाय, रोग सब ही घट जावत ॥ १ ॥
निज औगुन देखूँ आय, मनहिं मन में पछतावत ।
क्योंकर करूँ पुकार, काल अब बहु भरमावत ॥ २ ॥
काम क्रोध अति ज़ोर, जीव इनमें झख मारत[1] ।
राधास्वामी लेव बचाय, रहूँ मैं अति घबरावत ॥ ३ ॥
सुनिये दीनदयाल, तुम्हें मैं टेर[2] सुनावत ।
तुमको समरथ जान, कहूँ यह दर्द बुझावत ॥ ४ ॥
खोलो प्रेम दुआर, नहीं मोहि कर्म बहावत ।
शब्द माहिं दृढ़ करो, रहूँ छिन छिन गुन गावत ॥ ५ ॥
रसिक रहूँ[3] धुन माहिं, और कछु नाहिं सुहावत ।
दुख पाये मैं बहुत, नीच मन कहा मनावत ॥ ६ ॥

१—अपनी मिट्टी ख़राब करता है । २—पुकार । ३—रस या आनंद लेता रहूँ ।

कैसे करूँ पुकार, शब्द में नहीं लगावत ।
आज बने तो बने, बहुरि यह दाव[1] न पावत ॥ ७ ॥
मैं हूँ दीन अधीन, ईर्षा बहुत जरावत ।
मेटो कलह[2] अपार, काहे को नित्त बढ़ावत ॥ ८ ॥
तुमहीं करो सहाय, मोर कुछ नाहिं बसावत[3] ।
डरत रहूँ दिन रात, काल से जान छिपावत ॥ ९ ॥
मैं नित करूँ पुकार, ख़्याल तुम क्यों नहिं लावत ।
मर्म न जानूँ नेक[4], मौज तुम कहा[5] करावत ॥ १० ॥
कहँ लग कहूँ जनाय, नेक मन बस नहिं आवत ।
सदा रही तुम साथ, तऊ तुम क्यों न बचावत ॥ ११ ॥
अचरज भारी होत, समझ में नेक न आवत ।
गुरु बिन रक्षक नाहिं, कहें सब यही कहावत ॥ १२ ॥
कौन कर्म मैं किये, नित्त यह भुगतूँ आफ़त ।
हार पड़ी अब द्वार, बहुरि मैं तुमहिं मनावत ॥ १३ ॥
जस तस दीजे दान, और कोइ चित न समावत ।
राधास्वामी नाम, पहर आठों अब गावत ॥ १४ ॥

१–शब्द ६७

तुम धुर से चल कर आये ।
अब क्यों ऐसी ढील[6] लगाये ॥ १ ॥

१—अवसर । २—झगड़ा । ३—बस चलता है । ४—ज़रा । ५—क्या ।
६—सुस्ती, देरी ।

जल्दी से काज सँभारो ।
तुम दाता देर न धारो ॥ २ ॥
मैं आतुर[1] तुम्हें पुकारूँ ।
चित में कोइ और न धारूँ ॥ ३ ॥
मेरा जीवन मूर अधारा[2] ।
जस सीपी स्वाँति निहारा ॥ ४ ॥
अब मुक्ता[3] नाम जमाओ ।
मेरे जी की आस पुराओ ॥ ५ ॥
मत सूरत अधर चढ़ाओ ।
अबके मेरी खेप निबाहो ॥ ६ ॥
भौसागर वार न पारा ।
डूबे सब उसकी धारा ॥ ७ ॥
है मिथ्या झूठ पसारा ।
धोखे को सच सा[4] धारा ॥ ८ ॥
सतगुरु बिन धोख न जाई ।
बिन शब्द सुरत भरमाई ॥ ९ ॥
याते तुम सरना ताकूँ ।
सोवत मैं क्योंकर जागूँ ॥ १० ॥
बिन मेहर जतन सब थाके ।
मैं कर कर बहु बिधि त्यागे ॥ ११ ॥

१—व्याकुल । २—मूल यानी असली आसरा । ३—मोती ।
४—सत्य के समान ।

बल पौरुष मोर न चाले ।
मैं पड़ी काल जंजाले ॥ १२ ॥
विनती अब करूँ बनाई ।
तुम सतगुरु करो सहाई ॥ १३ ॥
मैं दीन अधीन तुम्हारी ।
तुम बिन अब कौन सँभारी ॥ १४ ॥
कुछ करो दिलासा[1] मेरी ।
भरमों की पड़ी अँधेरी ॥ १५ ॥
परकाश करो घट भाना ।
मिटे भर्म तिमिर अज्ञाना ॥ १६ ॥
तुम तज अब किसपै जाऊँ ।
मैं कह कह तुम्हें सुनाऊँ ॥ १७ ॥
जब चाहो जब ही देना ।
तुम बिन मोहि किससे लेना ॥ १८ ॥
मैं द्वारे पड़ी तुम्हारे ।
धीरज धर रहूँ सँभारे ॥ १९ ॥
मन आतुर दुख न सहारे ।
उठ बारंबार पुकारे ॥ २० ॥
मैं सरन दयाल तुम्हारी ।
कर जल्दी लो निस्तारी ॥ २१ ॥

१—ढाढ़स ।

घर तुम्हरे कमी न कोई ।
कहिं भाग ओछ[1] मेरा होई ॥२२॥
यह भी सब तुम्हरे हाथा ।
तुम चाहो करो सनाथा[2] ॥२३॥
अब कहँ लग करूँ पुकारी ।
मैं हार हार अब हारी ॥२४॥
तुम दाता दीनदयाला ।
राधास्वामी करो निहाला ॥२५॥
मैं आरत कीन्ह अधारी ।
तुम राधास्वामी सब पर भारी[3] ॥२६॥

१—शब्द ६८

मैं लिखूँ गुरू को पाती[4] ।
मन कीन्ही बहु उतपाती ॥ १ ॥
मेरी धड़के छिन छिन छाती ।
नहिं धीरज, बहु दुख पाती ॥ २ ॥
बिरह अगिन मोहि नित्त जलाती ।
मैं पल पल गुरु गुन गाती ॥ ३ ॥
मेरे दर्द उठा बहु भाँती ।
मैं किसको बरन सुनाती ॥ ४ ॥

१—छोटा, तुच्छ । २—भाग्यवान । ३—बड़े हो । ४—पत्र, ख़त ।

अब छोड़ी कुल और ज़ाती ।
गुरु चरन सुरत मेरी राती[1] ॥ ५ ॥
मैं रहूँ लगन विच माती[2] ।
अब सुरत गगन को जाती ॥ ६ ॥
वहँ शब्द अमी रस खाती ।
गुरु प्रेम हिये में लाती ॥ ७ ॥
दर्शन बिन होय न शांती ।
उलटी फिर तन में आती ॥ ८ ॥
कोइ सुने न मेरी बाती ।
मैं रहूँ सदा घबराती ॥ ९ ॥
मैं रोती दिन और राती ।
मन मारे बहु बिधि लाती[3] ॥१०॥
गुरु करो दया की दाती ।
तो टले[4] काल की घाती ॥११॥
मन आवे मेरे हाथी ।
तो मारे सिंघ[5] को हाथी[6] ॥१२॥
मेरे लगी प्रेम की काती[7] ।
हिरदे में धीर न लाती ॥१३॥
अब हर दम उमँग जगाती ।
मैं देखूँ गुरू करान्ती[8] ॥१४॥

१—लीन । २—मतवाली । ३—लात । ४—दूर हो । ५—काल । ६—मन ।
७—छुरी या छोटी तलवार । ८—प्रकाश ।

मारूँ अब माया ताती[1]।
　　गुरु मूरति चित में ध्याती ॥ १५ ॥
अब छूटी सकल भरांती[2]।
　　मैं पाई नाम दराँती[3] ॥ १६ ॥
अब काटूँ कर्म सनाती[4]।
　　गुरु बिन क्यों और मनाती ॥ १७ ॥
गुरु को सब भेद जनाती।
　　मैं पाये दुख बहु भाँती ॥ १८ ॥
कस मानसरोवर न्हाती।
　　मैं उलटी धार बहाती ॥ १९ ॥
जुग[5] बँधे जो गुरु के साथी।
　　तो मर्म सभी दरसाती ॥ २० ॥
गुरु चरन सदा परसाती[6]।
　　मैं सुरत पतंग उड़ाती ॥ २१ ॥
मन चादर नाम रँगाती।
　　घट भीतर नाद बजाती ॥ २२ ॥
जन्म मरन दुख दूर कराती।
　　ममता मैं सकल खपाती[7] ॥ २३ ॥

१—तपन देने वाली। २—भ्रम, धोखा। ३—हँसिया, काटने वाला औज़ार। ४—आदि का, आदिकर्म। ५—जोड़ा। ६—छूती। ७—नाश करती।

राधास्वामी सरन पराती[1] ।
राधास्वामी दास कहाती ॥ २४ ॥

१-शब्द ६६

गुरू मोहि दीजे अपना धाम ॥ टेक ॥
मैं तो निकाम भर्म बस रहता ।
तुम दयाल लो मोको थाम[2] ॥ १ ॥
ना जानूँ क्या पाप कमाये ।
गहे न सूरत नाम ॥ २ ॥
कैसी करूँ ज़ोर नहिं चाले ।
मन नहिं पावे दृढ़ बिसराम ॥ ३ ॥
हे दयाल अब दया बिचारो ।
मैं दुख में रहूँ आठो जाम[3] ॥ ४ ॥
ना स्रुत चढ़े न मन ठहरावे ।
शब्द महातम[4] नहिं पतियाम[5] ॥ ५ ॥
संत मता ऊँचा सुन पकड़ा ।
क्यों नहिं संत करें मेरी साम[6] ॥ ६ ॥
संत मते को लज्जा आवे ।
जो मेरा नहिं पूरन काम ॥ ७ ॥

१—पड़ती हूँ । २—सँभाल । ३—पहर । ४—बड़ाई । ५—पतियाता, विश्वास करता । ६—सहायता ।

अपनी मति ले करूँ पुकारा ।
मौज तुम्हारी मैं नहिं जाम[1] ॥ ८ ॥
बार बार मैं बिनय पुकारूँ ।
जस जानो तस देव निज नाम ॥ ९ ॥
राधास्वामी कहें निज नामी ।
दरदी को चहिये आराम ॥१०॥

१–शब्द ७०

गुरू मोहि अपना रूप दिखाओ ॥ टेक ॥
यह तो रूप धरा तुम सरगुन ।
जीव उबार कराओ ॥ १ ॥
रूप तुम्हारा अगम अपारा ।
सोई अब दरसाओ ॥ २ ॥
देखूँ रूप मगन होय बैठूँ ।
अभय दान दिलवाओ ॥ ३ ॥
यह भी रूप पियारा मोको ।
इस ही से उसको समझाओ ॥ ४ ॥
बिन इस रूप काज नहिं होई ।
क्योंकर वाहि लखाओ ॥ ५ ॥
ताते महिमा भारी इसकी ।
पर वह भी लखवाओ ॥ ६ ॥

१—जानता ।

वह तो रूप सदा तुम धारो।
याते जीव जगाओ ॥ ७ ॥
यह भी भेद सुना मैं तुमसे।
सुरत शब्द मारग नित गाओ ॥ ८ ॥
शब्द रूप जो रूप तुम्हारा।
वामें भी अब सुरत पठाओ[1] ॥ ९ ॥
डरता रहूँ मौत और दुख से।
निर्भय कर अब मोहि छुड़ाओ ॥ १० ॥
दीनदयाल जीव हितकारी।
राधास्वामी काज बनाओ ॥ ११ ॥

१–शब्द ७१

देख पियारे मैं समझाऊँ।
रूप हमारा न्यारा ॥ १ ॥
वह तो रूप लखे नहिं कोई।
जब लग देउँ न सहारा ॥ २ ॥
करनी करो मार मन डालो।
इंद्री रोक दुआरा[2] ॥ ३ ॥
सुरत चढ़ाय गगन पर धाओ।
सुन्न शिखर के पारा ॥ ४ ॥

१—पहुँचाओ। २—द्वार।

सत्तपुरुष का रूप दिखाऊँ ।
अलख अगम दर सारा ॥ ५ ॥
ताके आगे राधास्वामी ।
वह निज रूप हमारा ॥ ६ ॥
धीरज धरो करो सतसंगत ।
मेहर दया से लेउँ सुधारा ॥ ७ ॥
वह तो रूप दिखा कर छोड़ूँ ।
तुम जल्दी क्यों करो पुकारा ॥ ८ ॥
तुम्हरी चिंता मैं मन धारी ।
तुम अचिंत रह धरो पियारा ॥ ९ ॥
संशय छोड़ करो दृढ़ प्रीती ।
और परतीत सँवारा ॥१०॥
यह करनी मैं आप कराऊँ ।
और पहुँचाऊँ धुर दरबारा ॥११॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
जब जब जैसी मौज बिचारा ॥१२॥

१–शब्द ७२

सतगुरु से करूँ पुकारी ।
संतन मत[1] कीजे जारी ॥ १ ॥

१—संतों का मज़हब ।

जीवन का होय उधारी।
मैं देखूँ यही बहारी ॥ २ ॥
मैं मौज करूँ फिर भारी।
सब आरत करें तुम्हारी ॥ ३ ॥
मैं हरखूँ खेल निहारी।
मानो यह अर्ज़ हमारी ॥ ४ ॥
मैं राखूँ पच्छ[1] तुम्हारी।
अब कीजे दया बिचारी ॥ ५ ॥
मैं बालक सरन अधारी।
मैं करूँ बीनती भारी ॥ ६ ॥
जो मौज न हो यह न्यारी।
तो फेरो सुरत हमारी ॥ ७ ॥
घट भीतर होय क़रारी[2]।
शब्दारस करे अहारी ॥ ८ ॥
दोउ में से एक सुधारी।
जो दोनों करो दया री ॥ ९ ॥
मैं राज़ी रज़ा[3] तुम्हारी।
मैं राधास्वामी गोद पड़ा री ॥१०॥

१—टेक। २—धीरज। ३—मरज़ी, मौज।

१-शब्द ७३

लगाओ मेरी नैया सतगुरु पार ।
　　मैं बही जात जग धार ॥ १ ॥
तुम बिन नाहीं को[1] कढ़ियार[2] ।
　　लगा दो डूबी खेप किनार ॥ २ ॥
सहेली[3] मत तू मन में हार ।
　　दिखाऊँ जग का वार और पार ॥ ३ ॥
चढ़ाऊँ सूरत उलटी धार ।
　　शब्द सँग खेय उतारूँ पार ॥ ४ ॥
गुरू को धरले हिये मँझार ।
　　नाम धुन घट में सुन झनकार ॥ ५ ॥
तरंगें उठतीं बारंबार ।
　　भँवर जहँ पड़ते बहुत अपार ॥ ६ ॥
मेहर से पहुँची दसवें द्वार ।
　　राधास्वामी दीन्हा पार उतार ॥ ७ ॥

१-शब्द ७४

दर्शन की प्यास घनेरी[4] ।
　　चित तपन समाई ॥ १ ॥

१—कोई । २—काढ़ने यानी निकालने वाला । ३—ऐ सखी ।
४—घनी, बहुत ।

जग भोग रोग सम दीखें।
सतसँग में सुरत लगाई ॥ २ ॥
गति अगम तुम्हारी समझी।
पर दरस बिना तिरपति[1] नहिं आई ॥ ३ ॥
गुरुमुखता बन नहिं पड़ती।
फिर कैसे प्रत्यक्ष पाई ॥ ४ ॥
तुम गुप्त रहो जीवन से।
सँग सबके दूर न भाई ॥ ५ ॥
बिन किरपा सतगुरु पूरे।
निज रूप न तुम दिखलाई ॥ ६ ॥
अब तरसूँ तड़पूँ बहु बिधि।
तुम निकट न होत रसाई[2] ॥ ७ ॥
हो समरथ दाता सबके।
मुझको भी खैंच बुलाई ॥ ८ ॥
मैं कैसे देखूँ तुमको।
कोइ जतन न अब बन आई ॥ ९ ॥
घट का पट खोलो प्यारे।
यह बात न कुछ कठिनाई ॥ १० ॥
तुम चाहो तो छिन में कर दो।
नहिं जन्म जन्म भटकाई ॥ ११ ॥

१—तृप्ति, संतोष। २—पहुँच।

अब दरस दिखादो जल्दी ।
मैं रहूँ नित्त मुरझाई ॥ १२ ॥
अब दया बिचारो ऐसी ।
मैं रहूँ चरन लौ लाई ॥ १३ ॥
तुम बिन कोइ और न जानूँ ।
तुमहीं से रहूँ लिपटाई ॥ १४ ॥
यह आरत अद्भुत गाई ।
सूरत मेरी शब्द समाई ॥ १५ ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
मैं दासन दास कहाई ॥ १६ ॥

१-शब्द ७५

सोचत रही री बेचैन, रैन[1] दिन बहु पछतानी ।
मेरी लगी न प्रीति सँग शब्द, कहन मेरी सभी कहानी[2] ॥ १ ॥
झुरत[3] रहूँ मन माहिं, कौन से करूँ बखानी ।
सुननहार नहिं सुने, कहो मेरी कहा बसानी[4] ॥ २ ॥
मौज बिना क्या होय, मौज का सार न जानी ।
सबर[5] न आवे चित्त, दर्द में रैन बिहानी[6] ॥ ३ ॥
दिवस करूँ फ़रियाद, गुरू मेरे अंतरजामी ।
अपनी चूक बिचार, रहूँ मैं अति घबरानी ॥ ४ ॥

१—रात । २—क़िस्सा । ३—पछताती, मुरझाती । ४—बस चले ।
५—शान्ति, धीरज । ६—रात बीती ।

दीनानाथ दयाल, सुनो जल्दी मेरी बानी ।
चरन पकड़ हठ करूँ, मेहर कर देवो दानी ॥ ५ ॥
मैं तो अजान अभाग कुटिल, मोहि सब जग जानी ।
जो अपना कर लिया, लाज अब तुम्हें समानी ॥ ६ ॥
राधास्वामी कह रहे, यह अचरज बानी ।
सौदा पूरा मिले, होय नहिं तेरी हानी ॥ ७ ॥

१–शब्द ७६

धीरज धरो बचन गुरु गहो ।
अमृत पियो गगन चढ़ रहो ॥ १ ॥
दूर न जानो सतगुरु पास ।
निस दिन करो चरन बिस्वास ॥ २ ॥
सागर मेहर दया की मौज ।
राधास्वामी दीन्ही अचरज चौज[1] ॥ ३ ॥
खेल खिलावें बाल समान ।
देखे मात हरष मन आन ॥ ४ ॥
रच्छक शब्द जान और प्रान ।
सो पहलू छोड़े न निदान ॥ ५ ॥
मन की गढ़त करावें दम दम ।
वह हैं मित्र वही हैं हमदम[2] ॥ ६ ॥

१—विलास । २—गहरे साथी ।

भूल चूक बख़्शें वह छिन छिन ।
　　संग रहें इसके वह निसदिन ॥ ७ ॥
यह मन कच्चा बूझ न जाने ।
　　उनकी गति कैसे पहिचाने ॥ ८ ॥
जक्त जाल में रहा भुलाई ।
　　सुरत शब्द में नहीं जमाई ॥ ९ ॥
यासे सोग बिजोग[1] सतावे ।
　　मन का घाट हाथ नहीं आवे ॥ १० ॥
गुरु कुंजी जो बिसरे नाहीं ।
　　घट ताला छिन में खुल जाई ॥ ११ ॥
खुले घाट तब सुन में देखे ।
　　धुन की ख़बर, रूप निज पेखे ॥ १२ ॥
चढ़े अधर जब नाम समावे ।
　　रस पावे सूरत घर आवे ॥ १३ ॥
रतन खान घट में जब खुले ।
　　दुक्ख दर्द और दुर्मति टले ॥ १४ ॥
मौज निहारो सबर सँभारो ।
　　भर्म अँधेरा कौतुक[2] टारो ॥ १५ ॥
अमल[3] अचल पकड़ो गुरुचरना ।
　　सुक्ख परापत दुख सब हरना ॥ १६ ॥

१—वियोग, जुदाई । २—खेल । ३—निर्मल, पवित्र ।

यह संसार अगिन-भंडार ।
सीतल जल सतगुरु आधार ॥१७॥
बड़े भाग जिन सतगुरु पाये ।
चौरासी से तुरत हटाये ॥१८॥
दुक्ख सुक्ख जो ब्यापत होई ।
पिछले कर्म भोग हैं सोई ॥१९॥
कोइ दिन सोग रोग हट जावें ।
देर नहीं जल्दी भुगतावें ॥२०॥

॥ दोहा ॥

राधास्वामी रच्छक जीव के, जीव न जाने भेद ।
गुरु चरित्र[1] जाने नहीं, रहे कर्म के खेद ॥२१॥
खेद मिटे गुरु दरस से, और न कोई उपाय ।
सो दर्शन जल्दी मिलें, बहुत कहा मैं गाय ॥२२॥

॥ दोकड़िया छन्द ॥

धीरज धरना, मत घबराना, चित ठहराना,
रूप समाना, नित गुन गाना, नहीं बहाना,
यही निशाना, ज्यों पपिहा स्वाँती आस ॥२३॥
घट में रहना, कहीं न बहना, मन में सहना,
रस ही लेना, धीरज गहना, मर्म न कहना,
ज्यों जल मीना राधास्वामी पास ॥२४॥

१—लीला ।

आगे दया मेहर सतगुरु की ।
　　वहीं दरसावें वह अब धुर की ॥ २५ ॥
राधास्वामी बचन सुनाया ।
　　जीवन[1] की हठ से लिखवाया ॥ २६ ॥

२–शब्द ७७

आओ मेरे सतगुरु हे मेरी जान ।
　　नैना दरस को तरस रहे ॥ टेक ॥
आओ प्यारे राधास्वामी हे मेरे प्रान ।
　　जीव बिकल अब तड़प रहे ॥ १ ॥
आओ मेरे सतगुरु दाता दयाल ।
　　दरशन देकर करो निहाल ॥ २ ॥
आओ मेरे सतगुरु हे बंदीछोड़ ।
　　काल करम का काटो ज़ोर ॥ ३ ॥
आओ मेरे सतगुरु परम उदार ।
　　जीवन को अब लेव उबार ॥ ४ ॥
आओ मेरे सतगुरु क्यों एती देर ।
　　काल लिया जीवन को घेर ॥ ५ ॥
अब बरसाओ प्रेम का रंग ।
　　सुरत चढ़ाओ जैसे पतंग ॥ ६ ॥

१—जीवों या जीवनलाल (हुज़ूर स्वामी जी महाराज के समय के एक सतसंगी)।

सुनो मेरे सतगुरु बिनती मोर।
प्रेम रंग से करो सरबोर ॥ ७ ॥
आओ प्यारे राधास्वामी काटो जाल।
चरन सरन दे करो निहाल ॥ ८ ॥

२–शब्द ७८

मेरे प्यारे रँगीले सतगुरु।
मेरी सुरत चुनरिया रँग दो ॥ १ ॥
प्रेम सिंध तुम अगम अपारा।
मोहि प्रेम दिवानी कर दो ॥ २ ॥
रंग भरे रँग ही बरसावो।
मेरे मन की कलसिया भर दो ॥ ३ ॥
मन मोहन निज रूप तुम्हारा।
मेरे हिये मुकर[1] में धर दो ॥ ४ ॥
मन माया से अलग बचा कर।
मोहि अजर अमर धुर घर दो ॥ ५ ॥
बहु दिन बीते करत पुकारा।
मेरि आसा पूरन कर दो ॥ ६ ॥
काल करम मोहि बहु भरमावत।
पाँचों चोर पकड़ दो ॥ ७ ॥

१—शीशा।

जित[1] जाऊँ तित[2] काल भुलावत।
　　चरनन में चित मोर जकड़ दो ॥ ८ ॥
तुम दाता क्यों देर लगावो।
　　अब तो जल्दी कर दो ॥ ९ ॥
कहाँ लग कहूँ कहन नहिं आवे।
　　माँगूँ सो मोहि बर[3] दो ॥ १० ॥
राधास्वामी प्रीतम प्यारे।
　　मोहि नित नित अपना सँग दो ॥ ११ ॥

२–शब्द ७९

मेरे दाता दयाल गुसाईं।
　　मोहि नीच अधम को तारो ॥ १ ॥
मैं नख सिख[4] भरा बिकारो।
　　तुम अपनी ओर निहारो ॥ २ ॥
मैं औगुन कीने बहुतक।
　　मन इंद्री से मैं हारो ॥ ३ ॥
बहु बिधि समझौती दीन्ही।
　　चित में कोइ नेक न धारो ॥ ४ ॥
बारंबार चेत पछतावत।
　　फिर फिर भूल भटक में डारो ॥ ५ ॥

१—जिधर। २—उधर। ३—वरदान। ४—सिर से पैर तक।

निरभय होय भोगन में बरते ।
सतगुरु का भय भाव न प्यारो ॥ ६ ॥
कभी मसलहती समझ सुनावे ।
कभी कभी गुरु की मौज निहारो ॥ ७ ॥
अस छल बल कर देवत धोखा ।
सतसँग बानी कुछ न बिचारो ॥ ८ ॥
बचन कहैं तो नेक न माने ।
हुकम करें उसको भी टारो[1] ॥ ९ ॥
अपनी घाट बाढ़ नहिं बूझे ।
फिर फिर भरमें भोगन लारो ॥ १० ॥
ऐसा नीच कुबुद्धी यह मन ।
रोस करे जो इसको ताड़ो ॥ ११ ॥
साधगुरू में औगुन देखे ।
भजन सेव सतसंग बिसारो ॥ १२ ॥
मेरा बल कुछ पेश न जावे ।
तुम बिन कौन करे निरवारो ॥ १३ ॥
याते बिनय करूँ चरनन में ।
जैसे बने तैसे मोहि उबारो ॥ १४ ॥
डरत रहूँ दुक्खन के डर से ।
त्राहि त्राहि कर करूँ पुकारो ॥ १५ ॥

१—टाल देता है ।

हे दयाल मेरे औगुन बख़्शो ।
चरन सरन में देव सहारो ॥ १६ ॥
तुम समान कोइ समरथ नाहीं ।
जीव निबल क्या करे बिचारो ॥ १७ ॥
काल करम दोउ बैरी भारी ।
खूँदत खूँदत जीव पछाड़ो ॥ १८ ॥
बिना मेहर सतगुरु पूरे के ।
कोइ न जावे इनके पारो ॥ १६ ॥
याते फिर फिर करूँ बीनती ।
मैं पापी दोषी अति भारो ॥ २० ॥
छिमा करो और दया उमँगाओ ।
चरन ओट दे मोहि अब तारो ॥ २१ ॥
देरहि देर अकाज हुआ है ।
अब जल्दी से मोहि निस्तारो ॥ २२ ॥
राधास्वामी दयाल कृपाल हमारे ।
दया दृष्टि अब मोपर[1] डारो ॥ २३ ॥
प्रेम दान दीजे मोहि दाता ।
अपना कर मोहि अभी सुधारो ॥ २४ ॥
सुरत जगाय लेव चरनन में ।
काल करम को छिन में जारो ॥ २५ ॥

१—मुझपर ।

पिंड ब्रह्मंड के पार चढ़ाओ।
सत्तलोक पाऊँ घर न्यारो ॥ २६ ॥
राधास्वामी चरनन जाय समाऊँ।
अलख अगम के पारो ॥ २७ ॥

२—शब्द ८०

मेरे प्यारे गुरू दातार।
मँगता द्वारे खड़ा ॥ १ ॥
मैं रहा पुकार पुकार।
मेहर कर देखो ज़रा ॥ २ ॥
मोहि दीजे भक्ती दान।
काल दुख बहुत दिया ॥ ३ ॥
मेरे तड़प उठी हिय माहिं।
दरस को तरस रहा ॥ ४ ॥
बरषावो घटा अपार।
प्रेम रँग दीजे बहा ॥ ५ ॥
सुत भींजे अमी रस धार।
तन मन होवे हरा ॥ ६ ॥
मेरा जन्म सुफल हो जाय।
तुम गुन गाऊँ सदा ॥ ७ ॥
मैं नीच अधम नाकार।
तुम्हरे द्वारे पड़ा ॥ ८ ॥

मेरी बिनती सुनो धर प्यार ।
घट उमँगावो दया ॥ ९ ॥
राधास्वामी पिता हमार ।
जल्दी पार किया ॥ १० ॥

२–शब्द ८१

करूँ बीनती राधास्वामी आगे ।
गहिरी प्रीति चरन में लागे ॥ १ ॥
मन चंचल को थिर कर लीजे ।
दृढ़ परतीत चरन में दीजे ॥ २ ॥
भोग बासना सब छुट जावे ।
करम भरम संशय हट जावे ॥ ३ ॥
मन होय दीन सुरत लौलीना ।
गुरु चरनन में सदा अधीना ॥ ४ ॥
नित्त नवीन प्रीति हिये आवे ।
सेवा भजन करत रस पावे ॥ ५ ॥
सतसँग को चाहत रहे निसदिन ।
हरख हरख नित गावे तुम गुन ॥ ६ ॥
काल करम से लेव बचाई ।
सुरत शब्द की करूँ कमाई ॥ ७ ॥
यह अरज़ी मेरी सुन लीजे ।
किरपा कर मोहि बख़्शिश दीजे ॥ ८ ॥

राधास्वामी दाता दीनदयाला ।
अपनी दया से करो निहाला ॥ ९ ॥
मैं बलहीन नहीं गुन कोई ।
चरन तुम्हारे पकड़े सोई ॥१०॥
सरन अधार जिऊँ दिन राती ।
राधास्वामी २ हिये बिच गाती ॥११॥
राधास्वामी मात पिता पति मेरे ।
राधास्वामी चरनन सुक्ख घनेरे ॥१२॥
राधास्वामी बिना कोइ नहिं बाचे ।
राधास्वामी हैं गुरु सतगुरु साँचे ॥१३॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर ।
सोई बचे शब्द धुन सुन कर ॥ १४ ॥
दीनदयाल जीव हितकारी ।
राधास्वामी पर छिन छिन बलिहारी ॥ १५ ॥

२—शब्द ८२

गुरू मोहि लेओ आज अपनाई ॥ टेक ॥
जब से तन मन संग बँधाना ।
निज घर गया भुलाई ॥ १ ॥
माया बहु बिधि भोग रचाये ।
तामें रहा लुभाई ॥ २ ॥

मन मूरख जग सँग लिपटाना ।
　　गुरु बचन नहीं पतियाई ॥ ३ ॥
सुरत शब्द मारग जो पाया ।
　　तामें नहीं लगाई ॥ ४ ॥
बिना मेहर यह बस नहीं आवे ।
　　कस घट में उलटाई ॥ ५ ॥
दया करो हे गुरू दयाला ।
　　प्रेम की धार बहाई ॥ ६ ॥
काँपत रहूँ काल के डर से ।
　　निरभय कर मोहि अधर चढ़ाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल जीव उपकारी ।
　　जल्दी काज बनाई ॥ ८ ॥

२-शब्द ८३

सुन प्यारे मैं कहूँ बुझाई ॥ टेक ॥
सतसँग करो चित्त दे गुरु का ।
　　हिरदे बचन समाई ॥ १ ॥
या जग को परदेश समाना ।
　　समझ भाव बरताई ॥ २ ॥
मन चित जोड़ गुरू चरनन में ।
　　दिन दिन प्रीति बढ़ाई ॥ ३ ॥

राधास्वामी चरनन धर बिश्वासा ।
निसदिन भक्ति कमाई ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग ले गुरु से ।
नित अभ्यास कराई ॥ ५ ॥
तन मन धन से सेवा करके ।
गुरु को लेओ रिझाई ॥ ६ ॥
चरनामृत परशादी लेकर ।
हिरदा शुद्ध कराई ॥ ७ ॥
भय और भाव जगत का छोड़ो ।
लज्जा दूर हटाई ॥ ८ ॥
अस गुरु भक्ति कमाय उमँग से ।
नइ नइ प्रीति जगाई ॥ ९ ॥
परम पुरुष राधास्वामी दयाला ।
तब तोहि लें अपनाई ॥ १० ॥
करम काट तोहि अधर चढ़ावें ।
काल को मार गिराई ॥ ११ ॥
काज करें तेरा सब बिधि पूरा ।
सूरत चरन समाई ॥ १२ ॥
राधास्वामी दया करें अस सब पर ।
जो आवें सरनाई ॥ १३ ॥
याते प्यारे कहना मानो ।
पकड़ो उन चरनाई ॥ १४ ॥

२-शब्द ८४

सुरतिया झुरत रही।
　　कस लगूँ शब्द सँग जाय ॥ १ ॥
नित फ़र्याद करूँ सतगुरु से।
　　घट में दीजे दर्शन आय ॥ २ ॥
एक चित होय लगूँ घट अंतर।
　　शब्द अमीरस पिऊँ अघाय[1] ॥ ३ ॥
सुननहार नहिं सुनै पुकारा।
　　कैसी करूँ मेरी कहा बसाय ॥ ४ ॥
रैन दिवस रहुँ सोचत मन में।
　　कस भौसागर पार पराय[2] ॥ ५ ॥
बिरह अगिन मोहि नित्त सतावे।
　　बेकल रहूँ मोहि कछु न सुहाय ॥ ६ ॥
आस आस में बहु दिन बीते।
　　योंही उमरिया बीती जाय ॥ ७ ॥
मन इंद्री सँग जूझत रहती[3]।
　　बहु बिधि भय और आस दिखाय ॥ ८ ॥
काज बना नहिं पूरा अब तक।
　　मन भी कुछ मेरे बस नहिं आय ॥ ९ ॥

१—तृप्त होकर। २—पार जाऊँ। ३—लड़ती रहती।

जब तब माया ओर लुभावे ।
घट में चालन को अलसाय ॥१०॥
आस निरास संग दिन बीतत ।
मनहीं मन में रहूँ अकुलाय ॥११॥
भूल चूक और कसर अनेका ।
सोचत मन में रहूँ शरमाय ॥१२॥
बिन राधास्वामी कोइ और न दीसे[1] ।
उनहीं से कहूँ बिपत सुनाय ॥१३॥
मेहर दृष्टि से अब मोहि हेरो ।
जल्दी देव निज शब्द सुनाय ॥१४॥
किरपा कर निज रूप दिखाओ ।
तब मन मेरा तृप्त अघाय ॥१५॥

२–शब्द ८५

सुरतिया सोच भरी ।
गुरु चरनन करत पुकार ॥ १ ॥
जगत जाल जंजाल लगाया ।
नित्त करे मन उसकी कार ॥ २ ॥
भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवे ।
क्योंकर होवे जीव उबार ॥ ३ ॥

१—दिखलाई देता है ।

रोग दुक्ख मोहि नित्त सतावें ।
चिंता सँग रहे मन बीमार ॥ ४ ॥
कैसी करूँ कुछ बस नहिं चाले ।
गुरु बिन कौन करे निरवार ॥ ५ ॥
राधास्वामी चरनन करूँ पुकारा ।
बेग लेव मोहि अधम सुधार ॥ ६ ॥
मेहर दया से बिघन हटाओ ।
मन के देव बिकार निकार ॥ ७ ॥
सतसँग करूँ प्रेम से निसदिन ।
भजन करूँ मन सुरत सँभार ॥ ८ ॥
मन और सुरत सिमट कर घट में ।
चढ़ कर देखें बिमल बहार ॥ ९ ॥
मैं अति दीन निबल नाकारा ।
सरन पड़ी अब सब बल हार ॥ १० ॥
मोपै मेहर दृष्टि अब कीजे ।
सहज उतारो भौजल पार ॥ ११ ॥
राधास्वामी बिन कोइ और न सूझे ।
राधास्वामी हैं मेरे कुल करतार ॥ १२ ॥
बिनती सुनो दया कर प्यारे ।
काज करो मेरा किरपा धार ॥ १३ ॥
नित नित मैं गुन गाऊँ तुम्हारे ।
राधास्वामी राधास्वामी रहूँ पुकार ॥ १४ ॥

२–शब्द ८६

सुरतिया दूर बसे ।
हर दम गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
जगत जाल जंजाल तोड़ कर ।
आई गुरु दरबार ॥ २ ॥
सर्व अंग से गुरु चरनन में ।
लागी धर कर प्यार ॥ ३ ॥
मन की तरंग उचँग सब त्यागी ।
एक आस बिश्वास सँभार ॥ ४ ॥
सत्तपुरुष राधास्वामी चरनन में ।
मोह रही सब बिघन निकार ॥ ५ ॥
निज स्वरूप के दर्शन कारन ।
गुरु चरनन में रही पुकार ॥ ६ ॥
बेकल तड़प उठत हिये माहीं ।
नैनन से बहती जल धार ॥ ७ ॥
मौज बिचार सबर नहिं आवत ।
बिरह अगिन भड़कत हर बार ॥ ८ ॥
करूँ फ़रियाद दाद[1] नहिं पाऊँ ।
भारी दुख नहिं जात सहार[2] ॥ ९ ॥
फिर फिर करूँ बीनती गहिरी ।
हे राधास्वामी पिता दयार ॥१०॥

१—बख़्शिश । २—सहा नहीं जाता ।

दर्शन दे काटो दुख मेरा ।
　　मैं अति निरबल पड़ा दुआर ॥११॥
बिन दर्शन मोहि चैन न आवे ।
　　धीर न धारे मन बीमार ॥१२॥
टेरत टेरत बहु दिन बीते ।
　　अब तो राधास्वामी सुनो पुकार ॥१३॥
घट में मोहि निज दर्शन दीजे ।
　　शब्द सुनाओ अमृतधार ॥१४॥
देव मेरी माँग देर मत धारो ।
　　राधास्वामी प्यारे गुरु दातार ॥१५॥

२–शब्द ८७

मेरे उठी कलेजे पीर घनी[1] ॥ टेक ॥
बिन दरशन जियरा नित तरसे ।
　　चरन ओर रहे दृष्टि तनी ॥ १ ॥
नित्त पुकार करूँ चरनन में ।
　　दरस देव मेरे पूरन धनी ॥ २ ॥
घट का पाट खोलिये प्यारे ।
　　जल्दी करो हुई देर घनी ॥ ३ ॥
जब लग दरस न पाऊँ घट में ।
　　तब लग नहिं मेरी बात बनी ॥ ४ ॥

१—बहुत ।

हरख हुलास न आवे मन में।
चिंता में रहे बुद्धि सनी ॥ ५ ॥
अब तो मेहर करो राधास्वामी।
चरनन की रहूँ सदा रिनी[1] ॥ ६ ॥

२–शब्द ८८

दयाला मोहि लीजै तारी ॥ टेक ॥
तुम्हरी दया की महिमा भारी।
मैं हूँ पतित अनाड़ी ॥ १ ॥
जग में सारी बैस[2] बिताई।
भरमत रहा उजाड़ी ॥ २ ॥
मेहर करो मोहि चरन लगावो।
शब्द भेद देव सारी ॥ ३ ॥
तुम्हरी गति है अगम अपारा।
छिन में कर दो पारी ॥ ४ ॥
मैं बलि जाउँ चरन पर तुम्हरे।
तन मन धन सब वारी ॥ ५ ॥
राधास्वामी प्यारे सतगुरु पूरे।
लीना मोहि उबारी ॥ ६ ॥

१—कर्ज़दार, अनुगृहीत। २—उम्र।

२–शब्द ८९

गुरु प्यारे दया करो आज नई ॥ टेक ॥
मन और सुरत चढ़ाओ घट में ।
　निज सरूप का दरस दई ॥ १ ॥
शब्द रूप तुम्हरा अगम अपारा ।
　तिससे मिल आनंद लई ॥ २ ॥
नौ द्वारन में चैन न पाऊँ ।
　अनेक प्रकार के कष्ट सही ॥ ३ ॥
जब स्रुत चढ़ै अधर दस द्वारे ।
　शब्द अमीरस चाख चखी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया करो अब पूरी ।
　मैं ग़रीब तुम सरन पई[1] ॥ ५ ॥

२–शब्द ९०

गुरु प्यारे सुनो फ़रियाद मेरी ॥ टेक ॥
इस मन से मैं हार गई अब ।
　वचन सुने नहिं चित्त धरी ॥ १ ॥
फिर फिर मोहि जग में भरमावत ।
　भोग बासना नाहिं जरी[2] ॥ २ ॥

१—पड़ी । २—नाश हुई ।

मन को मारो इंद्री जारो ।
आसा मनसा सकल हरी ॥ ३ ॥
करम काट निज घर पहुँचाओ ।
सुफल होय मेरी देह नरी[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी बिन कोइ नाहिं सहाई ।
उनके चरन लग आज तरी[2] ॥ ५ ॥

२–शब्द ६१

गुरु प्यारे सुनो इक अरज़ मेरी ॥ टेक ॥
जब से दर्शन पायो तुम्हारा ।
चरनन में रहे सुरत अड़ी ॥ १ ॥
मन भी मोह रहा दर्शन में ।
नैनन में छबि रहे भरी ॥ २ ॥
पर बिन दर्शन शब्द सरूपा ।
मन और सुत नहिं शांति धरी ॥ ३ ॥
मेहर से देव अंतर दीदारा ।
चिंता बिपता सकल हरी ॥ ४ ॥
तुम्हरी दया का वार न पारा ।
अब क्यों एती देर करी ॥ ५ ॥

१—मनुष्य-शरीर । २—पार हुई ।

हे दयाल मेरी अरज़ी मानो ।
　　मैं हठ कर अब चरन पड़ी ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्यारे परम उदारा ।
　　गाऊँ तुम गुन घड़ी घड़ी ॥ ७ ॥

२–शब्द ६२

गुरु प्यारे करो अब मेहर बनाय ॥ टेक ॥
मैं तो अजान लिपट रही जग में ।
　　सतसँग बचन न चित ठहराय ॥ १ ॥
सुरत शब्द की जुगती भारी ।
　　सो भी मुझसे गई न कमाय ॥ २ ॥
मैं तो सब बिधि हीन अधीनी ।
　　चरन सरन गही तुम्हरी आय ॥ ३ ॥
जैसे बने मोहि लेव सुधारी ।
　　चरनन में लेव सुरत लगाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल जीव हितकारी ।
　　जस तस देव मेरा काज बनाय ॥ ५ ॥

२–शब्द ६३

गुरु प्यारे करें तेरी आज सहाय ॥ टेक ॥
क्यों घबरावे मन में प्यारी ।
　　गुरु परताप रहा हिये छाय ॥ १ ॥

सब बिधि तेरा काज बनावें।
तू उन चरनन प्रीति बढ़ाय ॥ २ ॥
संशय छोड़ करो बिस्वासा।
जैसी बने तैसी जुगत कमाय ॥ ३ ॥
सतसँग कर उन सेवा धारो।
प्रेमी जन से मेल मिलाय ॥ ४ ॥
अपनी दया से राधास्वामी प्यारे।
इक दिन देंगे घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

२—शब्द ६४

अहो मेरे प्यारे सतगुरु, अमृत धार बहा दो,
तन मन स्रुत भींजे ॥ टेक ॥
प्रेम बिना सब करनी फीकी।
नेकहु[1] मोहि न लागे नीकी[2] ॥
घट धुन रस दीजे ॥ १ ॥
मैं हूँ नीच अधम नाकारा।
तुम चरनन का लीन सहारा ॥
मोहि अपना कीजे ॥ २ ॥

१—ज़रा भी। २—अच्छी।

दीन अधीन पड़ा तुम द्वारे ।
तुम बिन को मेरी दया बिचारे ॥
मोहि सरना लीजे ॥ ३ ॥
तुम समरथ क्यों देर लगावो ।
दरशन दे मेरी सुरत चढ़ावो ।
आयू छिन छिन छीजे ॥ ४ ॥
प्रेम भंडार तुम्हारे भारी ।
मेहर से खोलो गगन किवाड़ी ॥
मन और स्रुत रीझे ॥ ५ ॥
आवो रे जीव सरन में आवो ।
सतगुरु से अब प्रीति लगावो ॥
अमृत रस पीजे ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेरा काज सँवारा ।
खोला आदि शब्द भंडारा ॥
स्रुत धुन सँग सीझे ॥ ७ ॥

२–शब्द ६५

गुरु दरशन बिन चैन न आवे ।
मैं कौन उपाय करूँ ॥ १ ॥

काल करम बहु बिघन लगाये।
कैसे उनको दूर करूँ ॥ २ ॥
मोर जतन कोइ पेश न जावे।
अब चरनन में बिनय करूँ ॥ ३ ॥
हे सतगुरु मोहि दरस दिखाओ।
निसदिन तुम्हरे बचन सुनूँ ॥ ४ ॥
बिन सतसँग कुछ काज न सरिहै।
सतसँग में चित जोड़ धरूँ ॥ ५ ॥
शब्द अभ्यास सँभार मेहर से।
सुरत गगन में नित्त भरूँ ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्यारे दया बिचारो।
मैं अब तुम्हरी सरन पड़ूँ ॥ ७ ॥

२-शब्द ६६

मोहि दरस देव गुरु प्यारे।
क्यों एती देर लगइयाँ ॥ १ ॥
मैं माँगत माँगत थकियाँ।
कोइ जतन पेश नहिं जइयाँ ॥ २ ॥
बिन दया तुम्हारी दाता।
यह जीव कहा कर सकियाँ ॥ ३ ॥
अब परदा देव उठाई।
तुम दरशन छिन छिन तकियाँ ॥ ४ ॥

मन इंद्री ज़ोर चलावत ।
जब तब मोहि नाच नचइयाँ ॥ ५ ॥
दूतन से बस नहिं चालत ।
मैं रहूँ नित्त मुरझइयाँ ॥ ६ ॥
निज मन से खूँट छुड़ाओ ।
मेरी सूरत गगन चढ़इयाँ ॥ ७ ॥
सुन में लख चंद्र उजारा ।
हंसन सँग केल करइयाँ ॥ ८ ॥
मुरली धुन गुफा सँभालूँ ।
सतपुर जाय बीन बजइयाँ ॥ ९ ॥
लख अलख अगम दरबारा ।
राधास्वामी चरन समइयाँ ॥ १० ॥

२–शब्द ९७

राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती ।
जल्दी दरस दिखावो हो ॥ टेक ॥
तड़प रही मैं बहुत दिनों से ।
अब घट द्वार खुलावो हो ॥ १ ॥
तुम समरथ क्यों देर लगाई ।
जल्दी मेहर करावो हो ॥ २ ॥
मैं अति दीन पड़ी तुम द्वारे ।
तुम बिन कोइ न सहारो हो ॥ ३ ॥

सारी बैस[1] आस में बीती ।
अब तो दया बिचारो हो ॥ ४ ॥
बिन दरशन निज रूप अपारा ।
नहिं मेरा होत उधारो हो ॥ ५ ॥
जब लग सुरत चढ़े नहिं घट में ।
मन से नहिं छुटकारो हो ॥ ६ ॥
चढ़ कर पहुँचूँ दसवें द्वारा ।
निरखूँ भँवर उजारो हो ॥ ७ ॥
सत्तपुरुष के चरन परस[2] के ।
निज घर जाय सिहारो हो ॥ ८ ॥
परम शाँति में जाय समाऊँ ।
सबसे होय नियारो हो ॥ ९ ॥
तब आसा पूरन होय मोरी ।
तुम्हरे चरन बलिहारो हो ॥ १० ॥
राधास्वामी प्यारे दया उमँगाओ ।
कीजे मम उपकारो हो ॥ ११ ॥

२–शब्द ९८

स्वामी प्यारे क्यों नहिं दरशन देत ॥ टेक ॥
प्रथम दया मोपे कीन्ही भारी ।
दिया चरनन में हेत ॥ १ ॥

१—उम्र । २—स्पर्श करके ।

अब तक़सीर[1] बनी क्या मोसे ।
नेक सुद्ध[2] नहिं लेत ॥ २ ॥
मैं बलि जाउँ चरन पर तुम्हरे ।
डारूँ तन मन रेत[3] ॥ ३ ॥
तुम्हरी दया होय जब न्यारी ।
काल करम रहें खेत[4] ॥ ४ ॥
करूँ पुकार सुनो मेरे प्यारे ।
सुरत चढ़ाओ आज पद सेत ॥ ५ ॥
वहिं मोहि दरस देव स्वामी प्यारे ।
जहँ राधास्वामी की अचरज नेत ॥ ६ ॥

२—शब्द ६६

तड़पत रही बेहाल दरस बिन मन नहिं माने ॥
कासे कहूँ बिथाय दरद मेरा कोइ नहिं जाने ॥ १ ॥
निस दिन हर बार सोच यहि मोहि सतावत ॥
गुरु से कैसे मिलूँ जतन कोइ बन नहिं आवत ॥ २ ॥
बिन अंतर दीदार मोर मन शाँति न लावे ॥
जग के भोग विलास नहीं मोहि नेक सुहावे ॥ ३ ॥
छिन छिन घटत शरीर उमर योंही बीती जावे ॥
कस पाऊँ दीदार सोच यही मन में आवे ॥ ४ ॥

१—क़सूर । २—सुध, ख़बर । ३—पीस डालूँ । ४—नाश हों ।

बिन सतगुरु की मेहर बने नहिं कोई काजा ॥
याते करूँ पुकार दया का दीजे साजा ॥ ५ ॥
राधास्वामी सुनो पुकार पाट घट खोल दिखाओ ॥
दरशन देकर आज हिये की तपन बुझाओ ॥ ६ ॥

२–शब्द १००

मेरे तपन उठत हिय भारी ।
गुरु प्रेम की बरषा कीजै ॥ टेक ॥
बिरह अगिन सुलगत नित घट में ।
कस निरखूँ छबि तिल पट[1] में ॥
मेरी उमर गई खट पट में ।
अब तो गुरु दरशन दीजै ॥ १ ॥
बिन दरशन जिय घबरावे ।
जग भोग नहीं अब भावे ॥
कोइ बात न मोहि सुहावे ।
अस काया[2] छिन छिन छीजै ॥ २ ॥
गुरु मेहर करो अब भारी ।
देव चरनन प्रीति करारी ॥
तुम दरशन नित्त निहारी ।
तब सुरत प्रेम रँग भींजै ॥ ३ ॥

१—तिल के परदे में । २—शरीर ।

तुम राधास्वामी समरथ दाता ।
　　मुझको भी करो सनाथा ॥
तुम चरनन रहूँ रस राता[1] ।
　　मेरी सुरत सरन में लीजै ॥ ४ ॥

२–शब्द १०१

प्रेम दात गुरु दीजिये ।
　　मेरे समरथ दाता हो ॥ १ ॥
दरस पाय नित मगन रहूँ ।
　　मेरे यही अभिलाषा हो ॥ २ ॥
प्रेम रंग भींजत रहूँ ।
　　नित तुमहिं धियाता हो ॥ ३ ॥
मेरे सर्ब अंग में बसि रहो ।
　　नित तुम गुन गाता हो ॥ ४ ॥
माया के सब बिघन हटाओ ।
　　काल रहे मुरझाता हो ॥ ५ ॥
मन इंद्री का ज़ोर न चाले ।
　　नित्त रहूँ रँग राता हो ॥ ६ ॥
भोग बिलास जगत के सारे ।
　　मोको[2] कुछ न सुहाता हो ॥ ७ ॥

१—लीन। २—मुझको।

यह बख़्शिश करो राधास्वामी प्यारे ।
अब क्यों देर लगाता हो ॥ ८ ॥
देर देर में होत अकाजा ।
योंहिं दिन बीते जाता हो ॥ ९ ॥
यह बिनती मानो मेरे प्यारे ।
राधास्वामी पित और माता हो ॥ १० ॥
प्रेम दात बिन सुनो मेरे प्यारे ।
यह मन नाच नचाता हो ॥ ११ ॥
मेरा बस यासे[1] नहिं चाले ।
भोगन में मद माता हो ॥ १२ ॥
दया करो मेरी सुरत चढ़ाओ ।
घट में शब्द बजाता हो ॥ १३ ॥
जो तुम दया करो मेरे प्यारे ।
फूला अँग न समाता हो ॥ १४ ॥
नाम तुम्हार सुनाऊँ सबको ।
जग में धूम मचाता हो ॥ १५ ॥
बल बल जाउँ चरन पर तुम्हरे ।
छिन छिन तुम्हें रिझाता हो ॥ १६ ॥
खुल खुल खेलूँ सुन में प्यारे ।
काटूँ कर्म बिधाता हो ॥ १७ ॥

१—इससे ।

खेलूँ बिगसूँ संग तुम्हारे।
दया पाय इतराता हो ॥१८॥
मगन रहूँ नित घट में अपने।
चरनन सँग इठलाता हो ॥१९॥
सुन सुन शब्द होय मतवाला।
छिन छिन अमी चुआता हो ॥२०॥
ऐसी मौज करो अब प्यारे।
दम दम बिनय सुनाता हो ॥२१॥
होय निचिंत[1] मेरे प्यारे राधास्वामी।
तुम चरनन माहिं समाता हो ॥२२॥

२–शब्द १०२

घट में दर्शन दीजिये।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥ १ ॥
बिन दर्शन मोहि चैन न आवे।
मेरी आँखों के तारे हो ॥ २ ॥
बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ।
मेरे प्रान अधारे हो ॥ ३ ॥
बिन दर्शन मोहि कछु न सुहावे।
मेरे जग उजियारे हो ॥ ४ ॥

१—बेफ़िक्र।

बिन दर्शन तुम्हरे मेरे प्यारे ।
सहत रहूँ दुख भारे हो ॥ ५ ॥
बिन दर्शन मोहि नेक न भावे ।
यह जग संसारे हो ॥ ६ ॥
दर्शन देव और बचन सुनाओ ।
गुरु मेरे अगम अपारे हो ॥ ७ ॥
सुनो पुकार मेरी अब जल्दी ।
सतगुरु दीनदयारे हो ॥ ८ ॥
मेहर करो मानो मेरी बिनती ।
कीजै मम उपकारे हो ॥ ९ ॥
रहूँ अचिंत मगन निज मन में ।
नित तुम दरस निहारे हो ॥ १० ॥
अब ही दया करो मेरे दाता ।
मैं चरनन बलिहारे हो ॥ ११ ॥
शुकर करूँ और नित गुन गाऊँ ।
घट में देख बहारे हो ॥ १२ ॥
दरस अधार जियत रहूँ प्यारे ।
राधास्वामी सत करतारे हो ॥ १३ ॥

२—शब्द १०३

बिन दर्शन कल नाहिं पड़े ।
मेरे गुरु प्यारे हो ॥ टेक ॥

जब से मैं बिछड़ी चरन कँवल से ।
चैन न पाया नहिं धीर धरे ॥ १ ॥
निस दिन सोच रहे यहि मन में ।
भौसागर अब कैसे तरे ॥ २ ॥
काल अनेकन बिघन लगाये ।
चिंता में दिन रात जरे ॥ ३ ॥
भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवे ।
मन माया से नित्त डरे ॥ ४ ॥
हे सतगुरु सब बिघन हटाओ ।
तुम बिन को अस दया करे ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से दर्शन दीजै ।
तब मेरा सब काज सरे ॥ ६ ॥

२–शब्द १०४

सुरतिया धूम मचाय रही ।
करें गुरु क्यों नहिं दया बिचार ॥ १ ॥
बिनय करत मोहि बहु दिन बीते ।
सहत रहे दुख मन बीमार ॥ २ ॥
बिन गुरु दरस दवा नहिं कोई ।
माँग रहा दर्शन हर बार ॥ ३ ॥
जस होय मौज तुम्हारी प्यारे ।
अंतर बाहर देव दीदार ॥ ४ ॥

जो अभी मेल न हो सतसँग में ।
घट में दरशन रहूँ निहार ॥ ५ ॥
चाहे अपना रूप दिखाओ ।
चाहे सुनाओ शब्द अपार ॥ ६ ॥
जस तस मन कुछ शान्ती पावे ।
सोई जुगत करो दातार ॥ ७ ॥
तुम्हरे घर कुछ कमी न होई ।
खोलो दया मेहर भंडार ॥ ८ ॥
किनका प्रेम का बख़्शिश दीजे ।
निसदिन तड़प रहूँ लाचार ॥ ६ ॥
पिरथम दया करी मोपै भारी ।
अब क्यों हुए कठोर दयार ॥१०॥
मेहर करो मोपै जल्दी प्यारे ।
जस तस मन को लेव सँभार ॥११॥
दीनदयाल जीव हितकारी ।
प्यारे राधास्वामी मेरे प्राण अधार ॥१२॥

४–शब्द १०५

दर्शन कैसे पाऊँ घट में ।
यह तो बात कठिन अति भारी ॥ टेक ॥
सतसँग करूँ नेम से निसदिन ।
गाऊँ महिमा चरनन छिन छिन ॥

सुमिरन ध्यान भजन भी पुन पुन ।
कर कर सभी जतन मैं हारी ॥ १ ॥
मन से जूझूँ अपने बल भर ।
दाता दया मेहर निज हिय धर ॥
जग से भागूँ नित ही डर कर ।
पर कुछ चले न पेश हमारी ॥ २ ॥
दीन दुखी होय नित्त पुकारूँ ।
तन मन धन सब चरनन वारूँ ॥
भक्तन सेवा सद ही धारूँ ।
तो भी पुजे न आस हमारी ॥ ३ ॥
अब क्या करूँ तुम्हीं बतलाओ ।
करूँ जतन क्या वह सिखलाओ ॥
मिलो कौन बिधि सो जतलाओ ।
मेटो तफ्न हमारी सारी ॥ ४ ॥
जब जब दया से सतसँग दीना ।
दुख सब पल छिन में हर लीना ॥
जान पड़ी अस किरपा कीना ।
बन गई अब सब बात हमारी ॥ ५ ॥
मूँदत नैन अँधेरा वो ही ।
मानो तिमिरखंड है घट ही ॥
नेकहु झलक रूप का नाहीं ।
सूझत नहिं वह मूरति प्यारी ॥ ६ ॥

सुनिए कंत सुजान हमारे ।
    या बिधि मम जीवन बिरथा रे ॥
घट में जब लग दरश न पा रे
    नइया लगे न घाट हमारी ॥ ७ ॥
जग से डरूँ सदा मैं प्यारे ।
    राखो चरनन ओट सदा रे ॥
बिनती करूँ पुकार पुकारे ।
    घट में दर्शन दीजे आ री ॥ ८ ॥
अंतर दया बिचारो ऐसी ।
    मिटे तपन घट जैसी तैसी ॥
टिके सुरत निज चरनन वैसी ।
    जैसे सुत माता लिपटा री ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरनन बासा ।
    अकह अगम सत अलख निवासा ।
पाई मैं होय दासन दासा ।
    बन गई सचमुच बात हमारी ॥ १० ॥

४—शब्द १०६

दर्शन दीजै दीनदयाला ।
    दाता दासन के हितकारी ॥ टेक ॥
जब ते चरन सरन तुम लीनी ।
    मन बुधि सुरत हुए लवलीनी ॥

तुम्हरी किरपा घट में चीन्ही ।
हो गई जीवनि सुफल हमारी ॥ १ ॥
मैं हूँ बाल अनाड़ी प्यारे ।
तुम हो दाता अपर अपारे ॥
राखो चरनन मोहि सदा रे ।
मेरी निसदिन यही पुकारी ॥ २ ॥
यह जग विष की खान अपारा ।
बहती प्रबल अनल की धारा ॥
तुम मोहि लीनी अधम उबारा ।
गाऊँ कैसे महिमा भारी ॥ ३ ॥
बिछड़ूँ नहीं चरन से कबही ।
जनम जनम मेरी बिनती एही ॥
तन बिच दर्शन पाऊँ नित ही ।
सुन लो अर्ज़ ग़रीब भिखारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्रान पियारे ।
हम सब दासन के आधारे ॥
सब जग (हमको) सहजहि लीनी तारे ।
अचरज अचरज अचरज भारी ॥
(लीला अचरज अगम अपारी) ॥ ५ ॥

सतगुरु के प्रेम और बिरह का वर्णन

१-शब्द १०७

राधास्वामी दया प्रेम घट आया ।
बंधन छूटे भर्म गँवाया ॥ १ ॥
सीतल शब्द जोति लख पाई ।
गगनमँडल में सुरत समाई ॥ २ ॥
उमँगा हिरदा सुधि बिसराई ।
तन मन धन सब भेंट चढ़ाई ॥ ३ ॥
अब रच्छा मेरी तुम्हरे हाथा ।
चरन तुम्हार मोर रहे माथा ॥ ४ ॥
सुमिरन नाम करूँ निस बासर[1] ।
शब्द जोग का पाया औसर[2] ॥ ५ ॥
देखत रहूँ रूप गुरु प्यारा ।
काम बाम[3] को धर धर मारा ॥ ६ ॥
आरत करूँ प्रेम रँग पूरी ।
पास रहूँ गुरु के तज दूरी ॥ ७ ॥
प्रेम उमँग धारा घट बढ़ती ।
सुरत निरत नित ऊँचे चढ़ती ॥ ८ ॥

१—रात दिन । २—मौक़ा । ३—विरोधी, शत्रु ।

भूल भरम धोखा सब भागा ।
　　राधास्वामी चरन बढ़ा अनुरागा ॥ ६ ॥

१-शब्द १०८

गुरु प्रीति बढ़ी चितवन[1] में ।
　　सुर्त खैंच धरी चरनन में ॥ १ ॥
मेरी दृष्टि हरी दरशन में ।
　　अब प्रेम बढ़ा छिन छिन में ॥ २ ॥
सतगुरु पर जाऊँ बलिहारी ।
　　सतगुरु मेरी सुद्धि सँभारी ॥ ३ ॥
लीन्हा मोहि भुजा पसारी ।
　　दीन्ही मोहि भक्ति करारी[2] ॥ ४ ॥
आरत अब उनकी करहूँ ।
　　तन मन धन सभी अरपहूँ ॥ ५ ॥
बिन गुरु कोइ और न मानूँ ।
　　बिन नाम ठौर[3] नहिं जानूँ ॥ ६ ॥
गुरु करें होयगा सोई ।
　　गुरु बिन कोइ और न होई ॥ ७ ॥
गुरु करता सब जग कारज ।
　　गुरु ही सब जीव अचारज[4] ॥ ८ ॥

१—दृष्टि डालने में । २—तीव्र । ३—ठिकाना । ४—आचार्य ।

गुरु तो मेरे प्रान अधारा ।
गुरु ही मेरा करें उधारा ॥ ९ ॥
गुरु सम कोइ और न प्यारा ।
गुरु ही मोहि लेयँ सुधारा ॥१०॥
मेरे हिरदे गुरु ही बिराजें ।
जम काल लजावत भाजें ॥११॥
छाया घट गुरु परतापा ।
रद्द[1] बलाय[2] दूर त्रय तापा[3] ॥१२॥
आरत गुरु कर कर भीजूँ ।
उमँग बढ़ाय प्रेम धुर खींचूँ ॥१३॥
मीना सम लई गुरु सरना ।
अब रहा न मोहि कुछ करना ॥१४॥
राधास्वामी गुरु हम पाये ।
पी चरन-अम्बु[4] तृप्ताये[5] ॥१५॥

१-शब्द १०९

मैं सतगुरु सँग करूँगी आरती ।
मो[6] बिरहिन को कोइ मत हटको[7] ॥ १ ॥

१—नाश । २—मुसीबत, कष्ट । ३—तीन ताप—आध्यात्मिक, आधिदैविक, और आधिभौतिक । ४—चरणामृत । ५—अघाये ।
६—मुझ । ७—मना करो ।

जिगर जले का दीपक बारूँ।
मन बट कर मैं बाती डारूँ ॥ २ ॥
जोति जगाऊँ दर्द प्रेम की।
आरत फेरूँ सोज़[1] मरम की ॥ ३ ॥
बेदन[2] मेरी सतगुरु जानें।
बिन दीदार[3] नहीं मन माने ॥ ४ ॥
दुष्ट दूत अब अधिक सतावें।
दर्शन राधास्वामी नाहिं दिखावें ॥ ५ ॥
कौन उपाव करूँ मैं सजनी।
ज़ोर ज़ुलम इन कब लग सहनी ॥ ६ ॥
जल बल ख़ाक किया मैं अंगा।
जस जोती पर जले पतंगा ॥ ७ ॥
कौन सुने मेरी किसपै रोऊँ।
जैसी बिथा[4] मेरी मैं ही सहऊँ ॥ ८ ॥
आह आह कर निस दिन दैहूँ[5]।
सबर न आवे फिर पछतैहूँ ॥ ९ ॥
बिन राधास्वामी अब कोइ नहिं मेरा।
दुक्ख दर्द ने अति कर घेरा ॥ १० ॥
अब घबराय करूँ मैं बिनती।
पल पल राधास्वामी चित में धरती ॥ ११ ॥

१—तपन। २—वेदना, कष्ट। ३—दर्शन। ४—व्यथा, तकलीफ़।
५—जलती हूँ।

दाद फ़र्याद[1] सुनो मेरी सतगुरु ।
कँवल बिना जैसे तड़पे मधुकर[2] ॥ १२ ॥
मैं तड़पूँ जस जल बिन मीना ।
जिगर फटे को कैसे सीना ॥ १३ ॥
तुम सब बिधि हो समरथ स्वामी ।
तुम ही जतन करो अंतरजामी ॥ १४ ॥
मैं अजान कुछ जानत नाहीं ।
जैसे बने तैसे काटो फाही[3] ॥ १५ ॥
तब सतगुरु इक जुक्ति बताई ।
सुरत शब्द की करो कमाई ॥ १६ ॥
और आरत यह नित प्रति गाओ ।
घर में बैठो सुरत लगाओ ॥ १७ ॥
मौज निहारो करो बिश्वासा ।
इक दिन होगी पूरन आसा ॥ १८ ॥
अस अस सतगुरु दीन्ह दिलासा[4] ।
अब मन अंतर होत हुलासा ॥ १९ ॥
यह अरज़ी अब मानो मेरी ।
मैं दुखिया तुम चरनन चेरी ॥ २० ॥
उमँग उमँग कर आरत गाई ।
नित्त करूँ अस आरत आई ॥ २१ ॥

१—किसी अत्याचार के प्रतीकार की प्रार्थना । २—भँवरा । ३—फाँसी, बंधन । ४—ढाढ़स, धीरज ।

१-शब्द ११०

दर्द-दुखी मैं बिरहिन भारी ।
दर्शन की मोहि प्यास करारी[1] ॥ १ ॥
दर्शन राधास्वामी छिन छिन चाहूँ ।
बार बार उनपर बलि जाऊँ ॥ २ ॥
वह तो ताड़ मार फटकारें[2] ।
मैं चरनन पर सीस चढ़ाऊँ ॥ ३ ॥
निरधन निरबल क्रोधिन मानी ।
मैं गुन अपने अब पहिचानी ॥ ४ ॥
स्वामी दीनदयाल हमारे ।
मो सी[3] अधम को लीन्ह उबारे ॥ ५ ॥
मैं ज़िद्दिन[4] दम दम हठ करती ।
मौज हुकम में चित नहिं धरती ॥ ६ ॥
दया करो राधास्वामी प्यारे ।
औगुन बख़्शो[5] लेव उबारे ॥ ७ ॥

१-शब्द १११

कैसी करूँ कसक[6] उठी भारी ।
मेरी लगी गुरू सँग यारी[7] ॥ १ ॥

१—तेज़ । २—डाँट डपट करें । ३—मुझ जैसी । ४—हठ करने वाली ।
५—क्षमा करो । ६—पीर । ७—प्रेम ।

दम दम तड़पूँ छिन छिन तरसूँ।
चढ़ रही मन में बिरह खुमारी[1] ॥ २ ॥
सुलगत जिगर फटत नित छाती।
उठन लगी हिये से चिनगारी ॥ ३ ॥
नैनन नीर बहत जस नदियाँ।
डूब मरी माया मतवारी ॥ ४ ॥
ठंडी आह उठे पल पल में।
छाय गई अब प्रीति करारी[2] ॥ ५ ॥
तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे।
काल करम पच[3] हारी ॥ ६ ॥
सुरत निरत दोउ क़ासिद[4] कीन्हे।
बिथा[5] लिखूँ अब सारी ॥ ७ ॥
पतियाँ भेजूँ गुरु दरबारा।
अब लो ख़बर हमारी ॥ ८ ॥
नगर उजाड़ देश सब सूना।
तुम बिन जग अँधियारी ॥ ९ ॥
कौन सुने और कौन सँभारे।
सब मोहि दीन निकारी[6] ॥ १० ॥
बही जात नैया मँझधारा।
तुम बिन कौन उबारी ॥ ११ ॥

१—नशा। २—तेज़। ३—परेशान होकर। ४—संदेश ले जाने वाले।
५—व्यथा, पीड़ा। ६—निकाल दिया।

खेवटिया क्यों देर लगाई ।
क्योंकर करूँ पुकारी ॥ १२ ॥
मैं मरी जाउँ जिऊँ अब कैसे ।
तुम मेरी सुधि न सँभारी[1] ॥ १३ ॥
डालो जान देव सरजीवन[2] ।
मैं तुम पर बलिहारी ॥ १४ ॥
बचन सुनाओ दरस दिखाओ ।
हरो पीर मेरी सारी ॥ १५ ॥
राधास्वामी सुनो हमारी ।
मैं तुम्हरे आधारी ॥ १६ ॥

१–शब्द ११२

गुरु चरन प्रीति मन रंगा ।
अब सबसे हुई असंगा[3] ॥ १ ॥
मन मारा संशय भंगा ।
चित शुद्ध हुआ अब चंगा[4] ॥ २ ॥
अब मिटा काल का दंगा[5] ।
डर रहा न नाम और नंगा[6] ॥ ३ ॥
आरत अब सजूँ अभंगा[7] ।
मेरे प्रेम भरा अँग अंगा ॥ ४ ॥

१—ख़बर न ली । २—संजीवनी बूटी । ३—अलग । ४—अच्छा ।
५—झगड़ा । ६—नेकनामी या बदनामी का । ७—पूरी ।

मेरी परखे न कोइ उमंगा ।
मैं पकड़ा सतगुरु संगा ॥ ५ ॥
मैं भौजल पार उलंघा[1] ।
मेरी सुरत उड़ी जस चंगा[2] ॥ ६ ॥
मैं घट में न्हाया गंगा ।
मैं छोड़ा मन परसंगा[3] ॥ ७ ॥
मन घोड़ा बाँधा तंगा ।
अब मिट गइ ममता पंगा[4] ॥ ८ ॥
सब मेटी चित्त उचंगा ।
हौं[5] जाली जस जोति पतंगा ॥ ९ ॥
गुरु चरन मिला आलम्बा[6] ।
सतगुरु का सीखी ढंगा ॥ १० ॥
गुरु चरन प्रेम मैं मंगा[7] ।
राधास्वामी दीन्ह उतंगा[8] ॥ ११ ॥

१–शब्द ११३

गुरू सँग खेलूँ निसदिन पास ।
करूँ मैं अचरज बिमल बिलास ॥ १ ॥

१—छलाँग मार गया । २—पतंग । ३—संबंध, साथ ।
४—अपंग । ५—अहंकार । ६—आसरा । ७—माँगा ।
८—उतंग यानी श्रेष्ठ, उत्तम (प्रेम) ।

सुखी होय करती चरन निवास ।
हुआ मोहि गुरु का अति बिश्वास ॥ २ ॥
गुरू बिन और नहीं कोइ आस ।
मिली अब नाम रतन की रास ॥ ३ ॥
धियाऊँ पल पल स्वाँसो स्वाँस ।
काल और कर्म हुए दोउ नास ॥ ४ ॥
जगत से रहती सहज उदास ।
मिली अब पदवी दासन दास ॥ ५ ॥
करे अब सूरत नभ पर बास ।
शब्द का पाया परम प्रकाश ॥ ६ ॥
लगन अस रहती बारह मास[1] ।
चरन में पकड़े गुरु के खास ॥ ७ ॥
द्वार घट खोला चढ़ आकाश ।
काल मुरझाया सूखा मास[2] ॥ ८ ॥
हुआ अब घर में दीप उजास[3] ।
मिला निज सूरज सँग आभास[4] ॥ ९ ॥
कहूँ क्या महिमा शब्द खवास[5] ।
गहे जो पावे अमर अवास[6] ॥ १० ॥
करूँ अब आरत राधास्वामी रास ।
शब्द का दीपक कीन्हा चास[7] ॥ ११ ॥

१—बारह महीने यानी सदा। २—दुबला हो गया। ३—उजाला।
४—झलक। ५—गुण। ६—आवास यानी घर। ७—जगाया।

१-शब्द ११४

गुरु मूरति मेरे मन बस गैयाँ।
तन मन वारूँ बलि बलि जैयाँ ॥ १ ॥
अस पिया संग सुहागिन भैयाँ।
अटल सुहाग नाम धुन पैयाँ ॥ २ ॥
करम भरम सब दूर बहैयाँ।
जगत जाल जंजाल कटैयाँ ॥ ३ ॥
अब चढ़ सुरत श्याम घर अइयाँ।
सेत दीप की दमक[1] दिखैयाँ ॥ ४ ॥
सहसकँवलदल मोह दलैयाँ[2]।
काम क्रोध मद दूर करैयाँ ॥ ५ ॥
घंटा संख नाद सुन लैयाँ।
पाँच तत्त्व रँग सूच्छम पैयाँ ॥ ६ ॥
लीला अद्भुत गुरू लखैयाँ।
अब आगे को डगर चलैयाँ ॥ ७ ॥
बंकनाल का द्वार खुलैयाँ।
त्रिकुटी घाट मौज दरसैयाँ ॥ ८ ॥
गुरु मूरति जहँ सूर ललैयाँ[3]।
सुन्न शिखर चढ़ कर्म जलैयाँ ॥ ९ ॥

१—प्रकाश। २—दलन किया। ३—लाल।

महासुन्न महिमा क्या कहियाँ ।
भँवरगुफा चढ़ बंस[1] बजैयाँ ॥ १० ॥
सत्तनाम धुन बीन सुनैयाँ ।
अलख अगम जा सुरत नचैयाँ ॥ ११ ॥
निजकर राधास्वामी दास कहैयाँ ।
अब आरत पूरन करवैयाँ ॥ १२ ॥

१–शब्द ११५

पिया दरसत भइ री निहाल ।
हाल क्या बरनूँ अपना ॥ १ ॥
काल गति दूर निकारी ।
जग लागा सुपना ॥ २ ॥
घट में धुन अविगत[2] जागी ।
खोया तन तपना ॥ ३ ॥
सुत सीतल सरवर पाया ।
शब्दारस मगना ॥ ४ ॥
बिन साध न कोई जाने ।
नित घट में जगना ॥ ५ ॥
तन धरती[3] अब हम त्यागी ।
पहुँची चढ़ गगना ॥ ६ ॥

१—वंशी । २—अविनाशी । ३—शरीररूपी पृथ्वी ।

अब लाज तुम्हें राधास्वामी ।
मैं हो गई सरना ॥ ७ ॥

२-शब्द ११६

सखी री मेरे राधास्वामी प्यारे री ।
वो ही मेरी आँखों के तारे री ॥ १ ॥
वो ही मेरे जग उजियारे री ।
वो ही मेरे प्रान अधारे री ॥ २ ॥
आन कर जीव चितारे री ।
किया मोहि जग से न्यारे री ॥ ३ ॥
दया कर लीन उबारे री ।
गुरू मेरे परम उदारे री ॥ ४ ॥
देस उन अगम अपारे री ।
निरख छवि तन मन वारे री ॥ ५ ॥
स्वामी मेरे दीनदयारे री ।
लिया मोहि गोद बिठारे री ॥ ६ ॥

२-शब्द ११७

दरश गुरु उठत बिरह भारी ।
तजत मन करनी संसारी ॥ १ ॥

भोग जग दीखत रोग समान ।
जोग गुरु भक्ती चित्त बसान ॥ २ ॥
निरख माया का रँग मैला ।
चित्त चाहत सतसँग सैला ॥ ३ ॥
चरन गुरु बढ़त नया अनुराग ।
दई सब आसा जग की त्याग ॥ ४ ॥
जिगर में तपन उठत दिन रात ।
रहूँ अब कैसे चरनन साथ ॥ ५ ॥
खान और पान नहीं भावे ।
चरन में मन छिन छिन धावे ॥ ६ ॥
संग जग जीव सुहावत नाहिं ।
दरस गुरु चाह बढ़त मन माहिं ॥ ७ ॥
जगत से रहता चित्त उदास ।
चरन में चाहत छिन छिन बास ॥ ८ ॥
परख मन इंद्री चाल कुचाल ।
काल और करम भरम का जाल ॥ ९ ॥
करत रहूँ बिनती दिन और रात ।
बचाओ देकर अपना हाथ ॥ १० ॥
स्वामी मेरे प्यारे पितु और मात ।
जाय नहिं महिमा उनकी गात ॥ ११ ॥
करें मेरी छिन छिन आप सँभार ।
सरन में राखें देकर प्यार ॥ १२ ॥

चरन मेरे हिरदे में धारें।
दया कर दुरमति सब टारें ॥१३॥
भजन और भक्ति नहीं बनि आय।
ध्यान और सुमिरन दिया बिसराय ॥१४॥
किया मैं चरनन में बिश्वास।
करें गुरु पूरन मेरी आस ॥१५॥
जतन कोइ करे चाहे जितने।
दया बिन काज नहीं सुपने ॥१६॥
सुरत मन जूझत धुन के संग।
मेहर बिन नहिं लागे गुरु रंग ॥१७॥
प्रेम गुरु जब मन में आवे।
सुरत मन तब धुन को पावे ॥१८॥
मेहर से खैंचें जब सूरत।
लखे तब हिय में गुरु मूरत ॥१९॥
गगन में घंटा संख सुने।
नाल[१] चढ़ मिरदँग गरज गुने ॥२०॥
सुन्न चढ़ मानसरोवर न्हाय।
गुफा में बंसी लई बजाय ॥२१॥
बहुर सतपुर में पावे बास।
बीन धुन बाजत जहाँ निस बास[२] ॥२२॥

१—बंकनाल। २—रात दिन।

अलख और अगम का देखा रूप ।
परस कर[1] चरन पुरुष कुल भूप ॥ २३ ॥
दरश राधास्वामी पाऊँ सार ।
जाऊँ राधास्वामी पर बलिहार ॥ २४ ॥
आरती गाऊँ हित चित लाय ।
चरन राधास्वामी हिये बसाय ॥ २५ ॥

२–शब्द ११८

प्रीतम प्यारे से प्रीति लगी ।
मेरा दरशन को जियरा तरसे ॥ १ ॥
बेकल चित रहूँ बिरह दिवानी ।
नहिं कहीं मन सरसे ॥ २ ॥
नित्त उदास रहूँ घट अंतर ।
काँपत रहूँ काल डर से ॥ ३ ॥
उलट पलट कर चढ़ गगना पर ।
तब पिया प्यारे का पद परसे ॥ ४ ॥
दरशन रस लेउँ तब सुख पाऊँ ।
दिन दिन नया आनँद दरसे ॥ ५ ॥
राधास्वामी हुए हैं सहाई ।
काढ़ लिया मोहि जम घर से ॥ ६ ॥

१—छू कर ।

दया मेहर के बादल छाये।
प्रेम उमँग धारा बरसे ॥ ७ ॥
भींज रही अब सुरत रँगीली।
पिया सुख लेत अधर घर से ॥ ८ ॥
राधास्वामी चरन अधारी।
काट दिये कलमल जड़ से ॥ ६ ॥

२–शब्द ११६

दरश दे आज बँधाओ धीर।
सहत रहूँ निसदिन बिरहा पीर ॥ १ ॥
बिकल मन तड़प रहा दिन रैन।
दरश बिन नहिं पावे सुख चैन ॥ २ ॥
सुमिरता जब जब रूप दयार।
झड़त मेरे नैनन से जल धार ॥ ३ ॥
ताप त्रय नित्त सतावें मोहि।
मौत डर छिन छिन ब्यापे मोहि ॥ ४ ॥
कोइ बिधि नहिं पावे मन शांत।
कहो कस देखूँ गुरू करांत ॥ ५ ॥
बिनय मैं करत रहूँ हर बार।
गुरू मोहि दीजे दरशन सार ॥ ६ ॥
दया बिन नहिं पुजवे मम आस।
चरन राधास्वामी पाऊँ बास ॥ ७ ॥

२–शब्द १२०

गुरु याद बढ़ी अब मन में ।
गुरु नाम जपूँ छिन छिन में ॥ १ ॥
गुरु सतसँग चित से चाहूँ ।
गुरु दरशन पर बलि जाऊँ ॥ २ ॥
नित सन्मुख गुरु के खेलूँ ।
मन प्रेमी जन सँग मेलूँ ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम सुहाया ।
सुमिरन में चित्त लगाया ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर कराई ।
मैं बालक लिया अपनाई ॥ ५ ॥
राधास्वामी गुन नित गाऊँ ।
राधास्वामी रूप धियाऊँ ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन गही री ।
राधास्वामी छाँह बसी री ॥ ७ ॥

२–शब्द १२१

सुरतिया तड़प रही ।
गुरु दरश बिना ॥ १ ॥
बिरह अगिन हिये में नित सुलगत ।
चैन न पावत रैन दिना ॥ २ ॥

ब्याकुल मन और चित्त उदासा ।
जगत किरत[1] सँग सहूँ तपना ॥ ३ ॥
राधास्वामी दयाल सुनो मेरी बिनती ।
दर्शन दो मोहि कर अपना ॥ ४ ॥
जिस दिन दरस भाग से पाऊँ ।
तन मन वारूँ और धना ॥ ५ ॥
या जग में मोहि जान पड़ी अब ।
राधास्वामी बिन नहिं कोइ अपना ॥ ६ ॥
याते सरन गहूँ राधास्वामी ।
सेवा करूँ गुरु भक्त जना ॥ ७ ॥
यही उपाव कहा संतन ने ।
यही जतन कर मेरे मना ॥ ८ ॥
राधास्वामी भाग जगाया मेरा ।
सुख पाया मैं आज घना[2] ॥ ९ ॥

२—शब्द १२२

सुरतिया याच रही[3] ।
गुरु चरन प्रेम की दात ॥ १ ॥
उमँग भरी गुरु सन्मुख आई ।
दरशन कर हिये में हुलसात ॥ २ ॥

१—करनी । २—बहुत । ३—माँग रही ।

सुन सुन बचन मगन हुई मन में ।
तोड़ा जग जीवन से नात ॥ ३ ॥
कृत संसारी अब नहिं भावे ।
करम धरम पर मारी लात ॥ ४ ॥
गुरु सँग प्रीति लगावत ऐसी ।
जस बालक माता के साथ ॥ ५ ॥
बिन दरशन अब चैन न आवे ।
और कहीं मन लगे न लगात ॥ ६ ॥
नित अभ्यास करत धर ध्याना ।
गुरु मूरत निज हिये बसात ॥ ७ ॥
छिन छिन घट में दरस निहारत ।
गुरु छबि देख चित्त मगनात ॥ ८ ॥
रसक रसक सुनती अनहद धुन ।
अमी धार नित सुन से आत ॥ ९ ॥
मन और सूरत चढ़त अधर में ।
शब्द शब्द पौड़ी दरसात ॥ १० ॥
अजब बिलास मिला अंतर में ।
उमँग उमँग गुरु के गुन गात ॥ ११ ॥
मेहर करी राधास्वामी गुरु प्यारे ।
प्रेम सहित उन चरन समात ॥ १२ ॥

२-शब्द १२३

सुरतिया सरन पड़ी ।
गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
दरशन कर हिये में मगनानी ।
जस बालक माता सँग प्यार ॥ २ ॥
आस भरोस धरा चरनन में ।
जियत रहूँ गुरु चरन अधार ॥ ३ ॥
बिन गुरु चरन रहे ब्याकुल मन ।
पियत रहूँ चरनन रस सार ॥ ४ ॥
अद्भुत छबि गुरु की मन भाई ।
निरखत रहूँ दरस गुरु सार ॥ ५ ॥
तोड़ दिये अब सब बल मन के ।
धार रही गुरु टेक सँभार ॥ ६ ॥
सेवा करत फूलती तन में ।
हाज़िर रहूँ नित गुरु दरबार ॥ ७ ॥
काम क्रोध और लोभ बिकारी ।
त्याग दिये सब जान लबार ॥ ८ ॥
गुरु की दया धार हिये छिन छिन ।
जीत लिया दल माया नार ॥ ९ ॥
परमारथ स्वारथ कारज में ।
मौज गुरू की रहूँ सँभार ॥ १० ॥

सुक्ख दुक्ख जब मौज से ब्यापें ।
        शुकर करूँ रहूँ गुरु को धार ॥११॥
बिना मौज गुरु कुछ नहिं होई ।
        गुरु ही हैं मेरे कुल करतार ॥१२॥
अचरज खेल देख अब घट में ।
        त्याग दिया जग काल पसार ॥१३॥
उमँग उमँग स्रुत चढ़त अधर में ।
        निरख रही कँवलन फुलवार ॥१४॥
राधास्वामी सतगुरु प्यारे ।
        छिन छिन रहूँ उन शुकरगुज़ार ॥१५॥

२—शब्द १२४

सुरतिया सींच रही ।
        गुरु चरन प्रीति फुलवार ॥ १ ॥
दरशन कर गुरु सेवा करती ।
        उमँग उमँग धर प्यार ॥ २ ॥
सतसँग बचन सँभारत मन में ।
        कर कर मनन बिचार ॥ ३ ॥
सार धार नित करती करनी ।
        रहनी सुमत सुधार ॥ ४ ॥
चरन गुरू अब दृढ़ कर पकड़े ।
        हिरदे सरन सँभार ॥ ५ ॥

मन और सुरत लगे घट अंतर ।
सुन सुन धुन झनकार ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ाई ।
पहुँच गई सतगुरु दरबार ॥ ७ ॥

२–शब्द १२५

सुरतिया भाग भरी ।
आज गुरु दरशन रस लेत ॥ १ ॥
जगत राग तज भाव हिये धर ।
गुरु सँग करती हेत ॥ २ ॥
सतगुरु बचन अधिक मन भाये ।
सुनती चित से चेत ॥ ३ ॥
उमँग उमँग कर तन मन धन को ।
वार चरन पर देत ॥ ४ ॥
प्रेम सहित गुरु जुगत कमाती ।
डारत मन को रेत ॥ ५ ॥
चित में धर बिश्वास गुरू का ।
जीत काल से खेत ॥ ६ ॥
शब्द डोर गह चढ़त अधर में ।
तजत श्याम पहुँची पद सेत ॥ ७ ॥
सब मत के सिद्धांत अस्थाना ।
रह गये नीचे ब्रह्म समेत ॥ ८ ॥

राधास्वामी दया सँभारत ।
पाय गई घर अद्भुत नेत ॥ ६ ॥

२—शब्द १२६

सुरतिया भींज रही ।
गुरु प्रेम रंग बरसाय ॥ १ ॥
मगन होय धरती गुरु ध्याना ।
घट में दरशन पाय ॥ २ ॥
अचरज रूप दिखाया गुरु ने ।
शोभा वाकी[1] बरनी न जाय ॥ ३ ॥
उमँग उमँग चरनन में लागी ।
दिन दिन प्रेम प्रीति अधिकाय ॥ ४ ॥
शब्द सुनत अब चढ़त अधर में ।
नभ में जोति रूप दरसाय ॥ ५ ॥
त्रिकुटी जाय लखी गुरु मूरत ।
सुन्न में चढ़ निरमल गति पाय ॥ ६ ॥
भँवरगुफा मुरली धुन सुन कर ।
सत्तलोक किया आसन जाय ॥ ७ ॥
अचरज दरस पुरुष का पाया ।
मेहर से दई धुन बीन सुनाय ॥ ८ ॥

१—उसकी ।

अलख पुरुष दरबार निरख कर।
अगम लोक में पहुँची धाय ॥ ९ ॥
धाम अनामी अपर अपारा।
वहाँ आरती प्रेम सजाय ॥१०॥
राधास्वामी के चरनन लागी।
अचरज शोभा क्या कहूँ गाय ॥११॥

२-शब्द १२७

सुरतिया झूम रही।
अब पिया अमी रस नाम ॥ १ ॥
तन मन की सब सुध बिसरानी।
दिया गुरू अस जाम[1] ॥ २ ॥
सुन सुन धुन नभ ऊपर धाई।
पाया जोति मुक़ाम ॥ ३ ॥
घंटा संख दोऊ धुन छोड़ी।
चढ़ गई त्रिकुटी बाम[2] ॥ ४ ॥
मगन हुई गुरु दरशन पाए।
हारे काल और जाम[3] ॥ ५ ॥
सुन्न में जाय मानसर न्हाई।
हंसन संग किया बिस्राम ॥ ६ ॥

१—प्याला (प्रेम का)। २—छत, ऊँचा स्थान। ३—यमराज।

वहाँ से चली अधर को प्यारी।
　　भँवरगुफा मुरली धुन गाम ॥ ७ ॥
सत्त शब्द धुन सुनी अधर में।
　　पहुँची सतगुरु धाम ॥ ८ ॥
अलख अगम की धुन सुन धाई।
　　कीन्हा पूरा काम ॥ ९ ॥
राधास्वामी पुरुष अनामी।
　　पाया अब निज ठाम[1] ॥ १० ॥
दीन लीन होय आरत गाती
　　पाई सीतल छाम[2] ॥ ११ ॥
मेहर करी राधास्वामी दयाला।
　　चरनन में दीना आराम ॥ १२ ॥

२–शब्द १२८

सुरतिया मगन भई।
　　गुरु देख दीदार ॥ १ ॥
बचन बान गुरु तान चलाये।
　　सुन सुन हुई सरशार ॥ २ ॥
हरख हरख गुरु सतसँग करती।
　　भूल गई संसार ॥ ३ ॥

१—स्थान। २—छाया।

प्रेम बढ़ा दिन दिन गुरु चरनन ।
तन मन धन सब दीना वार ॥ ४ ॥
गुरु का रूप अनूप हिये में ।
निरख रही छिन छिन कर प्यार ॥ ५ ॥
आठ जाम[1] सुत रहे रँगीली ।
प्रेम प्रीति का कर सिंगार ॥ ६ ॥
नींद भूख आलस सब छोड़ा ।
चढ़ा रहे नित प्रेम खुमार[2] ॥ ७ ॥
गुरु के रंग रँगी सुत रंगी ।
त्याग दिया सब जग ब्योहार ॥ ८ ॥
छिन छिन भाग सरावत अपना ।
माया काल रहे दोउ हार ॥ ९ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई ।
सुनत रही अनहद झनकार ॥ १० ॥
सुन सुन धुन पहुँची नभपुर में ।
बंकनाल धस त्रिकुटी पार ॥ ११ ॥
सुन्न के परे महासुन धाई ।
भँवरगुफा सतलोक निहार ॥ १२ ॥
अलख अगम के पार ठिकाना ।
पाया राधास्वामी चरन अधार ॥ १३ ॥

१—याम, पहर । २—नशा ।

प्रेम प्रीति से आरत साजी ।
गाय रही मैं सन्मुख ठाड़ ॥१४॥
चरन सरन दे गोद बिठाया ।
राधास्वामी कीन्ही मेहर अपार ॥१५॥

२-शब्द १२६

सुरतिया प्रेम भरी ।
रही सतगुरु हिरदे छाय ॥ १ ॥
बाल समान गोद गुरु खेलत ।
हिये दृढ़ सरन बसाय ॥ २ ॥
जो कुछ करें करें गुरु प्यारे ।
चित में नित्त रहे हरखाय ॥ ३ ॥
भाव भक्ति हिरदे में धारी ।
आस बास गुरु चरनन लाय ॥ ४ ॥
ऐसी निरमल भक्ति कमावत ।
उमँग उमँग सेवा को धाय ॥ ५ ॥
बचन गुरू सुन बिगसत मन में ।
नई नई प्रीति जगाय ॥ ६ ॥
चरनन में नित सरधा बढ़ती ।
महिमा चित में अधिक समाय ॥ ७ ॥
सुमरिन ध्यान भजन की जुगती ।
ले गुरु से रहूँ नित्त कमाय ॥ ८ ॥

मन रहे दीन लीन चरनन में।
सुरत शब्द सँग अधर चढ़ाय ॥ ९ ॥
सहसकँवल धुन घंटा सुनती।
जोति रूप दरसाय ॥१०॥
गगन जाय निरखत गुरु मूरत।
धुन मिरदँग और गरज सुनाय ॥११॥
राग रागिनी गावत सुन में।
धुन किंगरी सारंग बजाय ॥१२॥
सेत सूर लख भँवर प्रकाशा।
मुरली सँग सोहँग धुन गाय ॥१३॥
दरस पुरुष का पाय अमरपुर।
अलख अगम को निरखा जाय ॥१४॥
राधास्वामी किया सब काज मेहर से।
उनके चरन से रहो लिपटाय ॥१५॥

२—शब्द १३०

सुरतिया उमँग भरी।
रही गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥
दया धार गुरु चरन पधारे।
अचरज भाग जगाय ॥ २ ॥
नित प्रति दरशन गुरु का करती।
चरनामृत परशादी खाय ॥ ३ ॥

मैं तो नीच निकाम नकारा ।
　　चरन सरन दई मोहि अपनाय ॥ ४ ॥
औगुन मेरे कुछ न बिचारे ।
　　दिन दिन मेहर करी अधिकाय ॥ ५ ॥
दीन और हीन चीन्ह मोहि सतगुरु ।
　　लीना अपनी गोद बिठाय ॥ ६ ॥
बिन करनी गुरु मेहर दया से ।
　　मन और सुरत दीन सिमटाय ॥ ७ ॥
अंतर में नित करत चढ़ाई ।
　　तन मन की सब सुधि बिसराय ॥ ८ ॥
घट में देखूँ अजब तमाशा ।
　　परमारथ में लाग बढ़ाय ॥ ९ ॥
मगन होय नित भाग सराहूँ ।
　　अचरज लीला देख हरखाय ॥ १० ॥
नित्त बिलास होत घर मेरे ।
　　सतसँग दिन दिन बढ़ता जाय ॥ ११ ॥
किरपा कर संजोग मिलाया ।
　　अस बड़ भाग कोइ बिरला पाय ॥ १२ ॥
बिना माँग गुरु किरत[1] करावें ।
　　बिन याँचे[2] दई न्यामत[3] आय ॥ १३ ॥

१—करनी । २—माँगे । ३—दुर्लभ वस्तु ।

क्योंकर शुकराना करूँ उनका ।
मैं गुरु बिन कोइ और न ध्याय ॥ १४ ॥
आरत कर राधास्वामी रिझाऊँ ।
राधास्वामी २ रहूँ नित गाय ॥ १५ ॥

२—शब्द १३१

सुरतिया भाव भरी ।
आज गुरु सँग करत बिलास ॥ १ ॥
अमी रूप गुरु बचन अमोला ।
सुनत चित्त दे पास ॥ २ ॥
समझ समझ कर मानत उनको ।
धर चरनन बिश्वास ॥ ३ ॥
सुरत शब्द की करत कमाई ।
निसदिन बढ़त हुलास ॥ ४ ॥
गुरु चरनन बिन और न कोई ।
धारत हिये में आस ॥ ५ ॥
भक्ति दीनता प्रेम बढ़ावत ।
करती चरन निवास ॥ ६ ॥
गुरु सरूप को ध्यान लाय कर ।
हिये में करती बास ॥ ७ ॥
उमँग उठी सेवा की घट में ।
हो गई दासन दास ॥ ८ ॥

निसदिन सेव रही गुरु चरना ।
चित से रहती उनके पास ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम जपत निस बासर ।
जग से रहती चित्त उदास ॥१०॥
राधास्वामी चरन पकड़ कर बैठी ।
मिल गई प्रेम सरन की रास ॥११॥
दया हुई स्रुत चढ़ी अधर में ।
सहसकँवलदल किया निवास ॥१२॥
वहाँ से चल त्रिकुटी में पहुँची ।
निरखा लाल सूर परकाश ॥१३॥
सुन में जाय किये अश्नाना ।
देखा अच्छर पुरुष उजास ॥१४॥
भँवरगुफा होय सतपुर धाई ।
बीन बजे जहाँ वहाँ निस बास ॥१५॥
लखा जाय फिर अलख अगम को ।
राधास्वामी चरनन कीना बास ॥१६॥
प्रेम सहित वहाँ आरत साधी ।
हो गई राधास्वामी चरनन दास ॥१७॥

२–शब्द १३२

सुरतिया मोह रही ।
आज निरख गुरू छबि शान ॥ १ ॥

निज बिलास होत गुरु द्वारे।
देख देख मैं रहूँ हैरान ॥ २ ॥
मेहर दया जस मुझपर कीन्ही।
क्योंकर उसका करूँ बखान ॥ ३ ॥
मात पिता मेरे राधास्वामी प्यारे।
दया धार जग प्रगटे आन ॥ ४ ॥
बालक सम मोहि गोद बिठाया।
प्रेम भक्ति मोहि दीनी दान ॥ ५ ॥
जो कुछ माँगा सो मैं पाया।
क्योंकर करूँ शुकराना आन ॥ ६ ॥
सहज मिले मोहि दुरलभ देवा।
तन मन उन पर करूँ क़ुरबान ॥ ७ ॥
राधास्वामी सम कोइ और न जानूँ।
राधास्वामी हैं मेरे जान और प्रान ॥ ८ ॥
वाह वाह मेरे सतगुरु दाता।
वाह वाह प्यारे पुरुष सुजान ॥ ९ ॥
जीव दया कारन जग आये।
देव सब जीवन भक्ती दान ॥ १० ॥
मुझपर दया करो अब ऐसी।
घट में दीजे शब्द निशान ॥ ११ ॥
मन और सूरत चढ़ें अधर में।
सुनें जाय त्रिकुटी धुन तान ॥ १२ ॥

आरत धार गुरू चरनन में।
वहाँ से चढ़ाऊँ अधर ठिकान ॥ १३ ॥
सतपुर जाय करूँ फिर आरत।
सत्तपुरुष के सन्मुख आन ॥ १४ ॥
वहाँ से राधास्वामी धाम सिधारूँ।
राधास्वामी चरन लगाऊँ ध्यान ॥ १५ ॥
उमँग प्रेम से आरत गाती।
पाय गई अब प्रेम निधान[१] ॥ १६ ॥
कैसे भाग सराहूँ अपना।
राधास्वामी प्यारे चरन समान ॥ १७ ॥

२-शब्द १३३

आज खेलै सुरत गुरु चरनन पास ॥ टेक ॥
न्यारा कर गुरु लिया अपनाई।
चरन मिले निज सुख की रास ॥ १ ॥
नित गुरु दर्शन करूँ उमँग से।
यही मैं मन में धरती आस ॥ २ ॥
गुरु सम और न प्यारा लागे।
गुरु ही का नित करूँ बिश्वास ॥ ३ ॥
छिन नहिं बिछड़ूँ चरन गुरू से।
गुरु ही के सँग रहूँ निस बास[२] ॥ ४ ॥

१—प्रेम का भंडार। २—रात दिन।

गुरु पर तन मन धन सब वारूँ

गुरु दासन की हुई मैं दास ॥ ५ ॥

भोग बिलास जगत नहिं भावें ।

जग से रहती सहज उदास ॥ ६ ॥

राधास्वामी से कुछ और न माँगूँ ।

दीजे मोहि निज चरन निवास ॥ ७ ॥

राधास्वामी महिमा निसदिन गाऊँ ।

राधास्वामी सुमिरूँ स्वाँसो स्वाँस ॥ ८ ॥

२-शब्द १३४

राधास्वामी प्रीति हिये छाय रही ॥ टेक ॥

जब से स्वामी दर्शन कीन्हे ।

छबि उनकी मन भाय रही ॥ १ ॥

उमँग उमँग सेवा में लागी ।

राधास्वामी दया नित पाय रही ॥ २ ॥

हित चित से करती सतसंगा ।

नित नया प्रेम जगाय रही ॥ ३ ॥

दिन दिन बढ़त चरन बिश्वासा ।

गुरु सरूप हिये ध्याय रही ॥ ४ ॥

शब्द संग नित सुरत चढ़ावत ।

घट में आरत गाय रही ॥ ५ ॥

राधास्वामी सतगुरु मिले दयाला ।
चरनन सुरत लगाय रही ॥ ६ ॥

२-शब्द १३५

कोइ करो प्रेम से गुरु का संग ॥ टेक ॥
मन से कपट और मान तियागो ।
प्रेमी जन का धारो ढंग ॥ १ ॥
प्रीति प्रतीति करो तुम ऐसी ।
जस माता सँग पुत्र निसंक ॥ २ ॥
गुरु आज्ञा हित चित से मानो ।
सेवा करो तुम सहित उमंग ॥ ३ ॥
राधास्वामी चरन सरन दृढ़ करना ।
राधास्वामी नाम बसे अँग अंग ॥ ४ ॥
मन रहे नित दर्शन रस माता ।
सुरत भींज रहे शब्द के रंग ॥ ५ ॥
जग ब्योहार लगा अब काँचा ।
छोड़ दिया अब नाम और नंग[1] ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया दृष्टि से हेरा[2] ।
बिरोधी हो गये आपहि तंग ॥ ७ ॥

१—नेकनामी और बदनामी का ख्याल । २—देखा ।

२-शब्द १३६

छबीले छबि लगे तोरी प्यारी ॥ टेक ॥
दर्शन कर मोहित हुई छिन में ।
मुखड़े पर मैं वारी ॥ १ ॥
अचरज दरश दिखाया मुझको ।
चरनन पर बलिहारी ॥ २ ॥
राधास्वामी अंग लगावो मेहर से ।
तन मन से कर न्यारी ॥ ३ ॥

२-शब्द १३७

रँगीले रँग देव चुनर हमारी ॥ टेक ॥
ऐसा रंग रँगो किरपा कर ।
जग से हो जाय न्यारी ॥ १ ॥
यह मन नित्त उपाधि उठावत ।
याको गढ़ लो सारी ॥ २ ॥
निरमल होय प्रेम रँग भींजे ।
जावे गगन अटारी ॥ ३ ॥
तुम्हरी दया होय जब भारी ।
सुरत अगम पग धारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे मेहर करो अब ।
जल्दी लेव सुधारी ॥ ५ ॥

२–शब्द १३८

रसीले छोड़ो अमृत धारा ॥ टेक ॥
यह धारा दस द्वार से उठती ।
भींजे तन मन सारा ॥ १ ॥
यह धारा झनकार सुनावत ।
भिन्न भिन्न धुन न्यारा ॥ २ ॥
यह धारा बिन भाग न मिलती ।
पावे कोइ गुरु का प्यारा ॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे हुए दयाला ।
मोहि लीना सरन सँभारा ॥ ४ ॥

२–शब्द १३९

पियारे मेरे सतगुरु दाता ॥ टेक ॥
देखत रहूँ रूप मनभावन ।
और न कोई सुहाता ॥ १ ॥
पावत रहूँ अमी परशादी ।
और नहीं कुछ भाता ॥ २ ॥
चरन कँवल सेवत रहूँ निसदिन ।
और न कहीं मन जाता ॥ ३ ॥
गुन गाऊँ नित चरन धियाऊँ ।
और ख़्याल नहिं लाता ॥ ४ ॥

राधास्वामी प्यारे बसैं हिये में ।
और न चित्त समाता ॥ ५ ॥

२–शब्द १४०

अनामी प्यारे राधास्वामी ॥ टेक ॥
गति मति तुम्हरी कोइ नहिं जाने ।
घट घट अंतरजामी ॥ १ ॥
देस तुम्हारा सबसे न्यारा ।
नहीं वहाँ कृष्ण न रामी ॥ २ ॥
महिमा तुम्हरी अतिसे भारी ।
को कर सके बखानी ॥ ३ ॥
प्रेमी जन तुम चरन धियावें ।
जग से होय निःकामी ॥ ४ ॥
राधास्वामी गुन गाऊँ मैं नित नित ।
मोहि लीना चरन मिलानी ॥ ५ ॥

२–शब्द १४१

अनंता तेरी गति नहिं जानी ॥ टेक ॥
अपना भेद आप तुम गाया ।
संत रूप जग आनी ॥ १ ॥
बड़भागी जिन दर्शन पाये ।
चरनन में लिपटानी ॥ २ ॥

शब्द भेद दे लिया अपनाई ।
सूरत अधर चढ़ानी ॥ ३ ॥
जिन तुम चरनन प्रीति न आनी ।
जग में रहे अटकानी ॥ ४ ॥
मोपै दया करी राधास्वामी ।
दीना चरन ठिकानी ॥ ५ ॥

२–शब्द १४२

सुरतिया सोग (बिरह) भरी ।
रहे निसदिन चित्त उदास ॥ टेक ॥
प्रीतम प्यारे का ब्योग सतावे ।
नहिं भावे कुछ भोग बिलास ॥ १ ॥
बेकल तड़प उठत मन माहीं ।
बढ़त अधिक दर्शन की प्यास ॥ २ ॥
गुरु प्यारे मेरे बसें अधर में ।
मैं तो किया मृतलोक निवास ॥ ३ ॥
कैसे चढ़ूँ दरस कस पाऊँ ।
यहि मेरे मन में सोच और आस ॥ ४ ॥
बिन दर्शन मोहि कल न पड़त है ।
रटत रहूँ पिया पिया हर स्वाँस ॥ ५ ॥
कैसी करूँ कौन जुगत कमाऊँ ।
किस बिधि लखूँ प्रीतम परकाश ॥ ६ ॥

कासे पूछूँ राह रकाना ।
प्रीतम का कोइ मिले निज दास ॥ ७ ॥
मैं तो अजान भेद नहिं जानूँ ।
चहत रहूँ पिया चरनन बास ॥ ८ ॥
प्रीतम आपहि मरम जनावें ।
घट में दिखावें शब्द उजास ॥ ९ ॥
मेहर करें सुत गगन चढ़ावें ।
पहुँचूँ शब्द गुरू के पास ॥ १० ॥
आगे सत्तलोक जाय परसूँ ।
सतगुरु चरन निज सुख की रास ॥ ११ ॥
आगे चल पहुँचूँ धुर धामा ।
खेलूँ नित पिया राधास्वामी पास ॥ १२ ॥

२–शब्द १४३

सुरत लगी गुरु चरनन चित जोड़ ॥ टेक ॥
बचन सुनत जागा अनुरागा ।
मन को लीन्हा जग से मोड़ ॥ १ ॥
दर्शन कर हिये बढ़त उमंगा ।
रूप सुहावन हुआ चित चोर ॥ २ ॥
गुरु चरनन में बासा चाहत ।
जग जीवन से नाता तोड़ ॥ ३ ॥

गुरु सेवा लागी अति प्यारी ।
प्रेम रंग भींजत सरबोर ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया काज हुआ पूरा ।
काल करम सिर दीन्हा फोड़ ॥ ५ ॥

२-शब्द १४४

गुरु प्यारे नज़र करो मेहर भरी ॥ टेक ॥
मैं भई दासी तुम्हरे चरन की ।
सब तज तुम्हरे द्वारे पड़ी ॥ १ ॥
तुम्हरे चरन की ओट गही अब ।
काल करम से नाहिं डरी ॥ २ ॥
जब से तुम्हरी सरना लीन्ही ।
माया ममता सकल जरी ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़त गुरु चरनन ।
जग से छिन छिन सहज तरी ॥ ४ ॥
शब्द भेद ले सुरत लगाऊँ ।
सुन सुन धुन अब अधर चढ़ी ॥ ५ ॥
दरश दिखाय किया गुरु प्यारा ।
तन मन तज हुई आज छड़ी ॥ ६ ॥
राधास्वामी सतगुरु दीनदयाला ।
अब मोपै पूरन दया करी ॥ ७ ॥

२-शब्द १४५

गुरु प्यारे चरन से लिपट रहूँ ॥ टेक ॥
दर्शन कर मन उमँगा भारी ।
छिन छिन तन मन वार धरूँ ॥ १ ॥
रूप अनूपम बसा हिये में ।
मस्त हुई जग लाज तजूँ ॥ २ ॥
प्रीति लगी चरनों में भारी ।
सब तज उनकी सरन पड़ूँ ॥ ३ ॥
क्या ले अब मैं गुरू रिझाऊँ ।
निसदिन यही मैं सोच करूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे रच्छक मेरे ।
अब जम से मैं नाहिं डरूँ ॥ ५ ॥

२-शब्द १४६

गुरु प्यारे चरन पर जाउँ बलिहार ॥ टेक ॥
दया करी मोहि खैंच बुलाया ।
सतसँग बचन सुनाये सार ॥ १ ॥
अपने चरन की प्रीति घनेरी ।
(मेरे) हिये बसाई कर के प्यार ॥ २ ॥
दया करी घट भेद सुनाया ।
दिन दिन दई परतीत सँभार ॥ ३ ॥

छबि अनूप लख जब धरा ध्याना ।
घट में निरखी बिमल बहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल दया की न्यारी ।
शब्द सुनाय उतारा पार ॥ ५ ॥

२–शब्द १४७

गुरु प्यारे चरन मेरे प्रान अधार ॥ टेक ॥
क्या महिमा चरनन की गाऊँ ।
जीव पकड़ उन उतरें पार ॥ १ ॥
मैं तो बसाय रही उन उर में ।
प्रीति सहित करूँ ध्यान सँभार ॥ २ ॥
ध्यान धरत हुआ घट परकाशा ।
सुनत रही अनहद झनकार ॥ ३ ॥
चरन सरन गुरु हियरे धारी ।
निच रहूँ गुरु दया निहार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया चली अब घट में ।
सुन सुन धुन स्रुत हो गई सार ॥ ५ ॥

२–शब्द १४८

गुरु प्यारे चरन मोहि लगे प्यारे ॥ टेक ॥
जब से राधास्वामी सरना लीन्ही ।
छुट गये करम भरम सारे ॥ १ ॥

मन और सुरत प्रेम रस पागे ।
जगत भोग तज हुए न्यारे ॥ २ ॥
आसा मनसा जग की त्यागी ।
सतगुरु चरन सीस धारे ॥ ३ ॥
सरन धार स्रुत अधर सिधारी ।
तीन लोक के गई पारे ॥ ४ ॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ ।
कोटिन जीव लिये तारे ॥ ५ ॥

२–शब्द १४६

गुरु प्यारे की छबि पर बलि बलि जाउँ ॥ टेक ॥
रूप अनूप देख हरखानी ।
शोभा वाकी कस कह गाउँ ॥ १ ॥
प्रीति धसी अब हिये अंतर में ।
निस दिन रूपहि रूप धियाउँ ॥ २ ॥
तन मन से हुई गुरु की दासी ।
गुरू गुरू मैं गुरू मनाउँ ॥ ३ ॥
कौन सके गुरु महिमा गाई ।
कहत कहत मैं कहत लजाउँ ॥ ४ ॥
अचरज दरस दिखाया प्यारे ।
दया मेहर अब किसे जनाउँ ॥ ५ ॥

वाह वाह मेरे गुरू दयाला ।
चरनन में नई प्रीति जगाउँ ॥ ६ ॥
मैं तो निबल निकाम अजाना ।
यही हवस मन माहिं समाउँ ॥ ७ ॥
क्या सेवा कर गुरू रिझाऊँ ।
भक्ति भाव क्या क्या दिखलाउँ ॥ ८ ॥
दया करो राधास्वामी गुरु प्यारे ।
मैं अब राधास्वामी राधास्वामी गाउँ ॥ ९ ॥

२—शब्द १५०

गुरु प्यारे के नैना ताक रहूँ ॥ टेक ॥
दृष्टि जोड़ गुरु नैन कँवल में ।
सीतल होय धुन शब्द सुनूँ ॥ १ ॥
सुरत लगाय धसूँ तिल द्वारे ।
घट में दौरा करत रहूँ ॥ २ ॥
घंटा संख सुनूँ नभपुर में ।
जोति रूप लख गगन चढ़ूँ ॥ ३ ॥
गुरु सरूप का दर्शन करके ।
सुन में हंसन संग मिलूँ ॥ ४ ॥
भँवरगुफा लख सतपुर धाऊँ ।
अलख अगम के पार बसूँ ॥ ५ ॥

राधास्वामी प्यारे मेरा भाग जगाया ।
सरन धार उन चरन पड़ूँ ॥ ६ ॥

२–शब्द १५१

गुरु प्यारे का मुखड़ा झाँक रहूँ ॥ टेक ॥
अद्भुत छबि निरखत हुई मोहित ।
हरख हरख दृष्टि तान रहूँ ॥ १ ॥
लगन लगी गाढ़ी गुरु चरनन ।
दर्शन रस ले मगन रहूँ ॥ २ ॥
बचन सार गुरु सुने सतसँग में ।
अब तन मन की ब्याध हरूँ ॥ ३ ॥
शब्द संग नित सुरत लगाऊँ ।
घट में धुन झनकार सुनूँ ॥ ४ ॥
रूप सुहावन राधास्वामी प्यारे ।
ध्यान धरत घट माहिं लखूँ ॥ ५ ॥

२–शब्द १५२

गुरु प्यारे के दर्शन करत रहूँ ॥ टेक ॥
दर्शन कहो चाहे जीव अधारा ।
बिन दर्शन अति बिकल रहूँ ॥ १ ॥
दशन कर मोहि मिलत अनंदा ।
बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ ॥ २ ॥

दर्शन कर दुख होवत दूरा ।
बिन दर्शन मैं दुखित रहूँ ॥ ३ ॥
दर्शन कर सुत मन घिर आवें ।
बिन दर्शन मैं बिपत सहूँ ॥ ४ ॥
नित प्रति दर्शन देव राधास्वामी ।
बार बार तुम चरन पड़ूँ ॥ ५ ॥

२-शब्द १५३

गुरु प्यारे की बतियाँ सुनत रहूँ ॥ टेक ॥
सुन सुन बतियाँ हुई मतवाली ।
चरन पकड़ अब लिपट रहूँ ॥ १ ॥
जग का भय और भाव बिसारा ।
उमँग उमँग गुरु सेव करूँ ॥ २ ॥
गुरु सतसंगत लागी प्यारी ।
प्रेमी जन सँग मेल करूँ ॥ ३ ॥
शब्द जुगत गुरु दीन बताई ।
प्रीति लाय धुन गगन सुनूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर करी अब न्यारी ।
उनके चरन में सुरत भरूँ ॥ ५ ॥

२-शब्द १५४

गुरु प्यारे के बचन अमृत की धार ॥ टेक ॥
सुन सुन मैं तिरपत हुई मन में ।
हियरे उमँगा अधिक पियार ॥ १ ॥
सतसँग करत भर्म सब नासे ।
और इष्ट सब दिये बिसार ॥ २ ॥
दिन दिन बढ़त प्रतीति चरन में ।
नित प्रति दर्शन करूँ सँभार ॥ ३ ॥
शब्द जुगत ले करूँ अभ्यासा ।
घट में सुनूँ अनहद झनकार ॥ ४ ॥
ऐसा सतसँग मिला दया से ।
राधास्वामी गुन गाऊँ हर बार ॥ ५ ॥

२-शब्द १५५

गुरु प्यारे के बैन रसीले,
अमृत की खान ॥ टेक ॥
प्रेम भरे नित बचन सुनावें ।
लगे कलेजे बान ।
हुइ घायल जान ॥ १ ॥
जगत मोह जंजाल छुड़ाया ।
खैंच धरे मन प्रान ।
गुरु चरनन आन ॥ २ ॥

शब्द भेद दिया घट का सारा।
सुरत लगाई तान।
चढ़ कर असमान ॥ ३ ॥
गुरु का रूप लखा त्रिकुटी में।
सत्तपुरुष का धारा ध्यान।
सतलोक ठिकान ॥ ४ ॥
आगे चल पहुँची धुर धामा।
राधास्वामी अचरज दरस दिखान।
मैं रही हैरान ॥ ५ ॥

२—शब्द १५६

गुरु प्यारे के नैन रँगीले,
मेरा मन हर लीन ॥ टेक ॥
अद्भुत छबि निरखत नर नारी।
बचन सुनत हुए दीन।
मन धार यक़ीन ॥ १ ॥
सुंदर रूप बसा नैनन में।
दरस बिना तड़पत ग़मगीन[1]।
जस जल बिन मीन ॥ २ ॥

१—दुखी।

जब गुरु दरशन मिला भाग से।
मगन हुई रस पियत अमी।
गुरु किरपा चीन[1] ॥ ३ ॥
सतसँग कर गुरु सेवा लागी।
निरमल हुइ मेरी सुरत मलीन।
हुए अघ[2] सब छीन ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई।
राधास्वामी मेहर अनोखी कीन।
हुई चरनन लीन ॥ ५ ॥

२—शब्द १५७

गुरु प्यारे का रँग अति निरमल,
कभी मैला न होय ॥ टेक ॥
सतसँग धारा नित ही जारी।
काल जाल और करम कटाय।
दिये कलमल धोय ॥ १ ॥
हिरदे में नई प्रीति जगावें।
चरनन में परतीत बढ़ावें।
करम भरम दिये खोय ॥ २ ॥

१—चीन्ह कर, पहिचान कर। २—पाप।

जुगत बताय करावें करनी ।
मन सूरत धुन में धरनी ।
मिला आनँद मोहि ॥ ३ ॥
शब्द शब्द का भेद सुनाया ।
धुर पद का मोहि मरम लखाया ।
जहाँ एक न दोय ॥ ४ ॥
राधास्वामी सँग की महिमा भारी ।
मेहर दया पर जाउँ बलिहारी ।
स्नुत चरन समोय[1] ॥ ५ ॥

२–शब्द १५८

गुरु प्यारे चरन मनभावन ।
हिये राखूँ बसाय (छिपाय) ॥ टेक ॥
सुन सुन बचन गुरू प्यारे के ।
संशय भरम सब गये नसाय ।
मन भाव बढ़ाय ॥ १ ॥
चरन सरन की महिमा जानी ।
मन और सूरत रहे लुभाय ।
दृढ़ लगन लगाय ॥ २ ॥

१—लीन करके ।

चरन भेद ले धारा ध्याना ।
नित प्रति रस और आनँद पाय ।
निज भाग सराहि ॥ ३ ॥
गुरु चरनन सम और न प्यारा ।
बारंबार उन्हीं में धाय ।
मन सुत हरखाय ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर की क्या कहुँ महिमा ।
सहज लिया मोहि चरन लगाय ।
सब बंद छुड़ाय ॥ ५ ॥

२–शब्द १५६

गुरु प्यारे की छबि मनमोहन,
रही नैनन छाय ॥ टेक ॥
जब से मैं पाये गुरु प्यारे के दरशन ।
हिरदे में रही प्रीति समाय ।
मन अति अकुलाय ॥ १ ॥
बार बार दरशन को धावत ।
बिन दरशन रहे अति घबराय ।
कहीं चैन न पाय ॥ २ ॥
ऐसी दशा देख गुरु प्यारे ।
निज सतसँग में लिया मिलाय ।
घट प्रेम बढ़ाय ॥ ३ ॥

तन मन इंद्री सिथिल हुये अब ।
दरशन रस ले रहे त्रिपताय ।
जग भाव भुलाय ॥ ४ ॥
गुरु सरूप अब बसा हिये में ।
हर दम गुरु का ध्यान धराय ।
कभी बिसर[1] न जाय ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ी गुरु चरनन ।
गुरु सम जग में कोइ न दिखाय ।
रही महिमा गाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से घट पट खोला ।
धुन सँग सूरत अधर चढ़ाय ।
दइ घर पहुँचाय ॥ ७ ॥

२–शब्द १६०

गुरु प्यारे का सुंदर रूप,
निरखत मोह रही ॥ टेक ॥
जग ब्योहार लगा सब फीका ।
गुरु चरनन मन लागा नीका ।
सतसँग कर मल धोय रही ॥ १ ॥

१—भूल ।

गुरु सरूप हिये माहिं बसाना।
रैन दिवस उन धरती ध्याना।
शब्द में सुरत समोय रही[1] ॥ २ ॥
हरख हरख घट सुनती बाजा।
भक्ति भाव का पाया साजा।
कुटिल कुमति सब खोय रही ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति चरन में बढ़ती।
शब्द संग स्रुत ऊपर चढ़ती।
माया सिर धुन रोय रही ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से गइ दस द्वारे।
सत्त अलख और अगम के पारे।
निज चरनन स्रुत पोय रही[2] ॥ ५ ॥

२-शब्द १६१

गुरु प्यारे के बचन अमोला,
उर धार रहूँ ॥ टेक ॥
निज घर का गुरु भेद जनाई।
राधास्वामी महिमा अधिक सुनाई।
हिये उमँग भरूँ ॥ १ ॥

१—लीन करती हूँ। २—प्रवेश कर रही हूँ।

सहज जोग स्रुत शब्द कहावा।
सो गुरु मेहर से मोहि समझावा।
स्रुत तान रहूँ ॥ २ ॥
नित अभ्यास में करूँ सँभारी।
हरखूँ घट में निरख उजारी।
गुरु सेव करूँ ॥ ३ ॥
प्रीति जगी अब मन में भारी।
गुरु सम रच्छक[1] कोइ न बिचारी।
नित ध्यान धरूँ ॥ ४ ॥
दीन जान मोपै कीन्ही दाया[2]।
राधास्वामी प्यारे अंग लगाया।
जस[3] गाय रहूँ ॥ ५ ॥

२–शब्द १६२

गुरु प्यारे का दरस निहारत,
मेरा मन हुआ दीन ॥ टेक ॥
देख देख गुरु भक्ती रीती।
प्रेमी जन की दृढ़ परतीती।
हुइ चरनन लीन ॥ १ ॥

१—रच्छा करने वाला। २—दया। ३—यश।

मेहर हुई सतसँग में आई ।
बचन सुनत हिये प्रीति अब छाई ।
हुइ निपट[1] अधीन ॥ २ ॥
भेद दिया गुरु राधास्वामी देशा ।
उमँग सहित लिया शब्द उपदेशा ।
मन धार यक़ीन ॥ ३ ॥
सुरत लगाय सुनूँ धुन काना ।
गुरु स्वरूप का धारूँ ध्याना ।
हुए कलमल छीन ॥ ४ ॥
सहज सहज स्रुत घट में चढ़ती ।
गुरु बिश्वास चित्त में धरती ।
रही दया घट चीन ॥ ५ ॥
प्रेम प्रीति नइ हिये में जागी ।
उमँग उमँग स्रुत सतसँग लागी ।
तज चाह मलीन ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से लीन उबारी ।
काल जाल से सुरत निकारी ।
मेरा कारज कीन ॥ ७ ॥

१—बिलकुल ।

२-शब्द १६३

सतगुरु प्यारे ने पिलाया,
प्रेम पियाला हो ॥ टेक ॥
प्रीति नवीन हिये में जागी ।
जगत मोह तज चरनन लागी ।
गुरु लीन सँभाला हो ॥ १ ॥
प्रीति प्रतीति मेरे हिये धर दीन्ही ।
मेहर दया अंतर में चीन्ही ।
गुरु कीन निहाला हो ॥ २ ॥
उमँग उमँग अब घट में चाली ।
सुन सुन धुन स्रुत हुई मतवाली ।
लखा गुरु रूप बिशाला हो ॥ ३ ॥
सुन्न शिखर होय गइ सतपुर में ।
अटल भक्ति पाय हुई मगन मैं ।
दइ सतपुरुष दयाला हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरनन आरत धारी ।
मेहर दया उन कीन्ही भारी ।
दिया निज धाम निराला हो ॥ ५ ॥

२-शब्द १६४

सतगुरु प्यारे ने सिंचाई,
प्रेम कियारी हो ॥ टेक ॥

जब से मैं सतगुरु दरशन पाये ।
चितवन में दइ प्रीति जगाये ।
सुरत हुई गुरु प्यारी हो ॥ १ ॥
दिन दिन प्रीति बढ़त हिये अंतर ।
रटत रहूँ निसदिन गुरु मंतर ।
हुइ गुरु नाम अधारी हो ॥ २ ॥
चित्त रहे गुरु चरन समाना ।
गुरु स्वरूप हिये माहिं बसाना ।
निरख रही उजियारी हो ॥ ३ ॥
सतगुरु संग लगा मोहि प्यारा ।
करम भरम हुए दूर असारा ।
सुन अनहद झनकारी हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन प्रेम बढ़ा भारी ।
तन मन धन सब उन पर वारी ।
हुइ दरशन मतवारी हो ॥ ५ ॥

२–शब्द १६५

सतगुरु प्यारे ने सुनाई,
प्रेमा बानी हो ॥ टेक ॥
सुन सुन बचन प्रेम भरा मन में ।
फूली नाहिं समाऊँ तन में ।
हरख हरख हरखानी हो ॥ १ ॥

मन और सुरत सिमट कर आये ।
गुरु मूरत हिये में दरसाये ।
हुइ चरनन मस्तानी हो ॥ २ ॥
छिन छिन मन अस उमँग उठाई ।
दरशन रस ले रहूँ अघाई ।
चरनन पर क़ुरबानी हो ॥ ३ ॥
बिन दरशन मोहि चैन न आवे ।
सुमिर सुमिर पिया जिया घबरावे ।
भावे अन्न न पानी हो ॥ ४ ॥
बिनय सुनो राधास्वामी प्यारे ।
चरनन में मोहि राखो सदा रे ।
तुम समरथ पुरुष सुजानी हो ॥ ५ ॥

२–शब्द १६६

अरी हे सहेली प्यारी, प्रीतम दरस दिखा दे,
जियरा बहु तड़पे ॥ टेक ।
काल करम बहु पेच लगाये ।
बिन दरशन मैं रहूँ घबराये ।
मनुआँ नित तरसे ॥ १ ॥
जब जब प्रीतम छबि चित लाऊँ ।
नैनन से जल धार बहाऊँ ।
हियरा बहु धड़के ॥ २ ॥

प्रीतम पीर सतावत निसदिन।
बिन सतसंग दुखित रहे तन मन।
भाली ज्यों खड़के ॥ ३ ॥
जो कोइ प्रीतम महिमा गावे।
लीला और बिलास सुनावे।
मनुआँ अति हरखे ॥ ४ ॥
जब राधास्वामी का दर्शन पाऊँ।
उमँग उमँग मैं नित गुन गाऊँ।
घट आनँद बरसे ॥ ५ ॥

२–शब्द १६७

राधास्वामी छबि निरखत मुसकानी।
तन मन सुधि बिसरानी रे ॥ १ ॥
बिन दरशन कल नाहिं पड़त है।
भावे अन्न न पानी रे ॥ २ ॥
देखत रहूँ री रूप गुरु प्यारा।
छिन छिन मन हरखानी रे ॥ ३ ॥
दया करी गुरु दीनदयाला।
हुइ जग से अलगानी रे ॥ ४ ॥
लिपट रहूँ हर दम चरनन से।
राधास्वामी जान पिरानी[1] रे ॥ ५ ॥

१—जान प्राण।

२-शब्द १६८

सुन सुन महिमा गुरु प्यारे की ।
हुइ मैं दरश दिवानी रे ॥ १ ॥
धाय धाय चरनन में धाई ।
परगट रूप दिखानी रे ॥ २ ॥
मोहित हुइ अचरज छबि निरखत ।
तन मन सुद्ध भुलानी रे ॥ ३ ॥
बार बार बलि जाउँ चरन पर ।
कस गुन गाउँ बखानी रे ॥ ४ ॥
राधास्वामी जान जान के जानाँ ।
उन चरनन लिपटानी रे ॥ ५ ॥

२-शब्द १६९

कस प्रीतम से जाय मिलूँ मैं ।
कोई जतन बताओ रे ॥ १ ॥
तड़प रही मैं बिन पिया प्यारे ।
कोई दरस दिखाओ रे ॥ २ ॥
रैन दिवस मोहि चैन न आवे ।
किस बिधि करूँ उपाओ रे ॥ ३ ॥
बिरह अगिन नित सुलगत भड़कत ।
प्रेम धार बरसाओ रे ॥ ४ ॥

राधास्वामी दयाल दरस देव अबकी ।
तन मन शांति धराओ रे ॥ ५ ॥

२-शब्द १७०

प्यारे लागें री मेरे दातार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ १ ॥
प्यारे लागें री कुल करतार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ २ ॥
प्यारे लागें री प्रेम भंडार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ३ ॥
प्यारे लागें री अकह अपार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४ ॥
प्यारे लागें री प्रान अधार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ५ ॥
प्यारे लागें री मेरे दिलदार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ६ ॥
प्यारे लागें री परम उदार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ७ ॥
प्यारे लागें री अपर अपार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ८ ॥
प्यारे लागें री अधर अधार । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ९ ॥
प्यारे लागें री अमी भंडार । सतगुरु प्यारे लागें ॥१०॥
प्यारे लागें री संत अवतार । सतगुरु प्यारे लागें ॥११॥
प्यारे लागें री मेरे रछपाल । सतगुरु प्यारे लागें ॥ १२॥
प्यारे लागें री मेरे किरपाल । सतगुरु प्यारे लागें ॥१३ ॥
प्यारे लागें री दीनदयाल । सतगुरु प्यारे लागें ॥१४॥
प्यारे लागें री अमल अरूप । सतगुरु प्यारे लागें ॥१५॥
प्यारे लागें री शब्द स्वरूप । सतगुरु प्यारे लागें ॥१६॥
प्यारे लागें री मोहन रूप । सतगुरु प्यारे लागें ॥१७॥

प्यारे लागें री सुंदर रूप । सतगुरु प्यारे लागें ॥१८॥
प्यारे लागें री आनँद रूप । सतगुरु प्यारे लागें ॥१९॥
प्यारे लागें री हैरत रूप । सतगुरु प्यारे लागें ॥२०॥
प्यारे लागें री सत्त सरूप । सतगुरु प्यारे लागें ॥२१॥
प्यारे लागें री अगम अनाम । सतगुरु प्यारे लागें ॥२२॥
प्यारे लागें री अचरज धाम । सतगुरु प्यारे लागें ॥२३॥
प्यारे लागें री अचरज नाम । सतगुरु प्यारे लागें ॥२४॥
प्यारे लागें री भवतारन । सतगुरु प्यारे लागें ॥२५॥
प्यारे लागें री जीवउबारन । सतगुरु प्यारे लागें ॥२६॥
प्यारे लागें री मनमोहन । सतगुरु प्यारे लागें ॥२७॥
प्यारे लागें री कालबिडारन । सतगुरु प्यारे लागें ॥२८॥
प्यारे लागें री मायाटारन । सतगुरु प्यारे लागें ॥२९॥
प्यारे लागें री जान पिरान । सतगुरु प्यारे लागें ॥३०॥
प्यारे लागें री प्रेमनिधान । सतगुरु प्यारे लागें ॥३१॥
प्यारे लागें री जगतारन । सतगुरु प्यारे लागें ॥३२॥
प्यारे लागें री हे रँगीले । सतगुरु प्यारे लागें ॥३३॥
प्यारे लागें री हे छबीले । सतगुरु प्यारे लागें ॥३४॥
प्यारे लागें री हे रसीले । सतगुरु प्यारे लागें ॥३५॥
प्यारे लागें री अचल अडोल । सतगुरु प्यारे लागें ॥३६॥
प्यारे लागें री अगम अतोल । सतगुरु प्यारे लागें ॥३७॥
प्यारे लागें री अमल अमोल । सतगुरु प्यारे लागें ॥३८॥
प्यारे लागें री जीव हितकारी । सतगुरु प्यारे लागें ॥३९॥

प्यारे लागें री पूरन धनी । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४० ॥
प्यारे लागें री अंतरजामी । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४१ ॥
प्यारे लागें री अगम अगाध । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४२ ॥
प्यारे लागें री अलख अथाह । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४३ ॥
प्यारे लागें री सर्ब समरथ । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४४ ॥
प्यारे लागें री अबल की ओट । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४५ ॥
प्यारे लागें री प्यारे परबीन । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४६ ॥
प्यारे लागें री मेरे प्रीतम । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४७ ॥
प्यारे लागें री गहिर गँभीर । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४८ ॥
प्यारे लागें री बंदीछोड़ । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ४९ ॥
प्यारे लागें री मात पिता । सतगुरु प्यारे लागें ॥ ५० ॥

२–शब्द १७१

मैं गुरु प्यारे के चरनों की दासी ॥ टेक ॥
नित उठ दरशन करूँ उमँग से ।
हार चढ़ाऊँ अपने गुरु सुख रासी[1] ॥ १ ॥
मत्था टेक लेउँ परशादी ।
करम भरम सब होते नासी ॥ २ ॥
प्रीति बढ़त गुरु चरनन निसदिन ।
जग से रहती सहज उदासी ॥ ३ ॥

१—भंडार ।

शब्द कमाई करूँ प्रेम से ।
मगन होय रहुँ नित गुरु पासी[1] ॥ ४ ॥
राधास्वामी मेहर से काज बनावो ।
दीजे मोहि निज चरन बिलासी ॥ ५ ॥

२-शब्द १७२

मैं पड़ी अपने गुरु प्यारे की सरना ॥ टेक ॥
मेहर करी गुरु भेद बताया ।
सुरत शब्द में निसदिन भरना ॥ १ ॥
गुरु के चरन पकड़ हित चित से ।
भौसागर से सहजहि तरना ॥ २ ॥
गुरु का बल सँग लेकर अपने ।
मन माया से छिन छिन लड़ना ॥ ३ ॥
जगत जाल जंजाल जार कर[2] ।
गगन ओर धुन सुन सुन चढ़ना ॥ ४ ॥
राधास्वामी बल अब धार हिये में ।
काल करम से काहे को[3] डरना ॥ ५ ॥

२-शब्द १७३

मैं हुई सखी अपने प्यारे की प्यारी ॥ टेक ॥
सेवा में नित हाज़िर रहती ।
हरख हरख नित रूप निहारी ॥ १ ॥

१—निकट । २—नाश करके । ३—क्यों ।

दरशन शोभा क्योंकर बरनूँ ।
छबि पर जाउँ छिन छिन बलिहारी ॥ २ ॥
मेहर भरी दृष्टी जब डारी ।
भूल गई तन मन सुधि सारी ॥ ३ ॥
कस गुन गाउँ अपने गुरु प्यारे के ।
तन मन धन उन चरनों पै वारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे से यही बर माँगूँ ।
चरनन में रहूँ लीन सदा री ॥ ५ ॥

२–शब्द १७४

जब से मैं देखा राधास्वामी का मुखड़ा ॥ टेक ॥
मोहित हुई तन मन सुधि भूली ।
छोड़ दिया सब जग का झगड़ा ॥ १ ॥
राधास्वामी छबि छा गई नैनन में ।
नहीं सुहावे मोहि अब कोइ रगड़ा ॥ २ ॥
नित्त बिलास करूँ दरशन का ।
भर भर प्रेम हुआ मन तकड़ा ॥ ३ ॥
मेहर हुई सुत चढ़त अधर में ।
छोड़ चली अब काया[1] छकड़ा ॥ ४ ॥

१—शरीर ।

राधास्वामी मेहर करी अब भारी ।
छिन छिन मन चरनन में जकड़ा ॥ ५ ॥

२–शब्द १७५

राधास्वामी छबि मेरे हिये बस गई री ॥ टेक ॥
राधास्वामी शोभा क्योंकर गाऊँ ।
नैन कँवल दृष्टी जोड़ दई री ॥ १ ॥
दरस रूप रस बरनूँ कैसे ।
नर देह मेरी आज सुफल भई री ॥ २ ॥
नित नित ध्याय रहूँ गुरु रूपा ।
घट में आनँद बिमल लई री ॥ ३ ॥
बिन प्रीतम बहु जन्म बिताये ।
और बिपता बहु भाँति सही री ॥ ४ ॥
अब मोहि राधास्वामी मिले भाग से ।
चरन लगाय निज सरन दई री ॥ ५ ॥

२–शब्द १७६

मन हुआ मेरा गुरु चरनन में लीना ॥ टेक ॥
जग से हट सतसँग में लागी ।
भक्ती दान गुरू मोहि दीना ॥ १ ॥

शब्द संग मैं सुरत लगाऊँ।
मगन होय नित धुन रस पीना ॥ २ ॥
सेवा कर नई उमँग जगाऊँ।
मैं हुइ अपने गुरु चरनन की रीना[1] ॥ ३ ॥
बिन दरशन मोहि कल न पड़त है।
तड़प रहूँ जैसे जल बिन मीना ॥ ४ ॥
राधास्वामी प्यारे मेरे प्रान अधारे।
मेहर से उन मेरा कारज कीना ॥ ५ ॥

२-शब्द १७७

आज मैं पाई सरन गुरु पूरे ॥ टेक ॥
गुरु चरनन मिल हुई बड़भागी।
बाजे घट में अनहद तूरे ॥ १ ॥
जगत भाव भय लज्जा त्यागी।
मन कायर हुआ घट में सूरे ॥ २ ॥
सुन सुन धुन अब चढ़त अधर में।
जोति जगमगी झलकत नूरे ॥ ३ ॥
त्रिकुटी जाय ओंग धुन पाई।
काल और करम रहे दोउ झूरे[2] ॥ ४ ॥
अक्षर धुन सुन आगे चाली।
तज दिया देश अब माया कूड़े ॥ ५ ॥

१—लीन। २—मुरझा गए।

मुरली सुन धुन बीन सँभारी ।
मगन हुई लख सत पद मूरे ॥ ६ ॥
प्रेम भँडार लखा अब भारी ।
मिल गये राधास्वामी चरन हज़ूरे ॥ ७ ॥
राधास्वामी महिमा अतिसे[1] भारी ।
सुरत हुई उन चरनन धूरे ॥ ८ ॥

२-शब्द १७८

आज मैं पाया दरस गुरु प्यारे ॥ टेक ॥
दरशन कर हिये होत हुलासा ।
बचन सुनत भ्रम मिट गये सारे ॥ १ ॥
अचरज महिमा सतसँग देखी ।
गुरु उपदेश लिया उर धारे ॥ २ ॥
ध्यान धरत सुन घेरी घट में ।
गगन ओर चढ़ती धुन लारे[2] ॥ ३ ॥
मेहर हुई सुत अधर चढ़ाई ।
तीन लोक के हो गई पारे ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल की महिमा भारी ।
कोटिन जीव लिये उन तारे ॥ ५ ॥

१—अतिशय, बहुत । २—साथ ।

२–शब्द १७६

दरस देव प्यारे,
अब क्यों देर लगइयाँ हो ॥ टेक ॥
पिरथम जब मोहि दरशन दीन्हे ।
मन और बुद्धि मेरे हर लीन्हे ॥
बिरह अगिन हिये में धर दीन्हे ।
सुलगत नित्त तपइयाँ हो ॥ १ ॥
बचन सुना मेरी प्रीति बढ़ाई ।
शब्द लखा परतीत दृढ़ाई ॥
करम भरम सब दूर हटाई ।
घट में कार कमइयाँ हो ॥ २ ॥
शब्द रूप की सुन सुन महिमा ।
घट में जागी उमँग नवीना ॥
रैन दिवस नहिं पाऊँ चैना ।
मीना सम जल बिन तड़पइयाँ हो ॥ ३ ॥
राधास्वामी सतगुरु पिता हमारे ।
जियत रहूँ उन चरन अधारे ॥
मेहर से लिया मोहि आप सँभारे ।
उन चरनन पर बलि बलि जइयाँ हो ॥ ४ ॥

२-शब्द १८०

प्रेम भक्ति गुरु धार हिये में ।
आया सेवक प्यारा हो ॥ टेक ॥
उमँग उमँग कर तन मन धन को ।
गुरु चरनन पर वारा हो ॥ १ ॥
गुरु दरशन कर बिगसत मन में ।
रूप हिये में धारा हो ॥ २ ॥
आठ पहर गुरु संग रहावे ।
जग से रहता न्यारा हो ॥ ३ ॥
मन माया को आँख दिखावे ।
गुरु बल सूर करारा हो ॥ ४ ॥
शब्द डोर गह चढ़ता घट में ।
पहुँचा गगन मँझारा हो ॥ ५ ॥
आगे चल सुनी सारँग किंगरी ।
मुरली बीन सितारा हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से दीन्हा ।
निज पद अगम अपारा हो ॥ ७ ॥

२-शब्द १८१

ऐसी गहरी पिरेमिन नारि ।
गुरू को लीन रिझाई ॥ १ ॥

सेवा करत प्रेम से निस दिन ।
तन मन दीन चढ़ाई ॥ २ ॥
गुरु दरशन बिन कल न पड़त है ।
छिन छिन मन अकुलाई ॥ ३ ॥
जब गुरु दरशन करत मगन होय ।
फूली तन न समाई ॥ ४ ॥
आरत कर कर प्रेम बढ़ावत ।
गुरु छबि पर बलि जाई ॥ ५ ॥
सुरत लगाय शब्द सँग धावत ।
नभ तज गगन चढ़ाई ॥ ६ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा लख ॥
अमर लोक धस जाई ॥ ७ ॥
अलख अगम से मेला कर के ।
राधास्वामी चरन समाई ॥ ८ ॥

२-शब्द १८२

मेरा जिया न माने सजनी ।
जाऊँगी गुरु दरबार ॥ १ ॥
सेवा करूँ बचन उर धारूँ ।
नित्त बढ़ाऊँ प्यार ॥ २ ॥
गुरु छबि देख मगन हिये होती ।
मैं तो छिन छिन जाउँ बलिहार ॥ ३ ॥

चरन सरन प्रीतम दृढ़ करती ।
　　वो ही हैं सत करतार ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का जोग कमाऊँ ।
　　भौसागर उतरूँ पार ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ी अब हिये में ।
　　काल करम रहे हार ॥ ६ ॥
जग जीवन को आख सुनाऊँ[1] ।
　　मेरे गुरु का करो दीदार ॥ ७ ॥
तीरथ मूरत ब्रत आचारा ।
　　त्यागो भोग बिकार ॥ ८ ॥
प्रीति प्रतीति धरो चरनन में ।
　　जो चाहो उद्धार ॥ ९ ॥
राधास्वामी नाम पुकारो ।
　　छोड़ो जगत लबार ॥ १० ॥
आस भरोस धरो उन चरनन ।
　　घट में देख बहार ॥ ११ ॥

२—शब्द १८३

मेरे लगी प्रेम की चोट बिकल मन अति घबरावे ।
कोइ कछू कहे समझाय चित्त में नेक न आवे ॥ १ ॥

१—कह कर सुनाऊँ ।

मात पिता बहु कहें बहन और भाई भतीजे ।
मूरख हैं सब लोग प्रीति उन दिन दिन छीजे ॥ २ ॥
मैं सतगुरु बल धार चरन में प्रीति बढ़ाता ।
जग से होय निरास रूप गुरु निस दिन ध्याता ॥ ३ ॥
दया करी गुरु देव सुरत अब धुन में लागी ।
घट में देख बिलास सरन में दृढ़ कर पागी ॥ ४ ॥
राधास्वामी दीनदयाल दया कर मोहि अपनाया ।
करम भरम को काट तिकुटी पार पहुँचाया ॥ ५ ॥
सुन्न महासुन होय गई स्रुत सोहँग पासा ।
आगे सतपद परस अलख लख अगम निवासा ॥ ६ ॥
पहुँची राधास्वामी धाम मेहर से सतगुरु के री ।
दरशन राधास्वामी पाय दया उन छिन छिन हेरी ॥ ७ ॥

२—शब्द १८४

गुरु नैन रसीले निरखे ।
मेरे सिमट गये मन प्रान ॥ १ ॥
पुरुष अंस मेरी निरमल सूरत ।
बसी काल घर आन ॥ २ ॥
बिना दया सतगुरु पूरे के ।
कस उलटे घर जान ॥ ३ ॥
राधास्वामी प्यारे मिले परम गुरु ।
उन दीना पता निशान ॥ ४ ॥

दृष्टि करी भरपूर मेहर की ।
पहुँची अधर ठिकान ॥ ५ ॥

२–शब्द १८५

हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ ।
मन से बेज़ार सुरत वार के दीवाना हुआ ॥ १ ॥
इक नज़र ने तेरी ऐ जाँ मुझे बेहाल किया ।
लैला के इश्क़ में मजनूँ सा परेशान किया ॥ २ ॥
मैं हूँ बीमार मेरे दर्द का नहिं और इलाज ।
मेरे दिल ज़ख़्म का मरहम तेरी बोली है इलाज ॥ ३ ॥
तेरे मुखड़े की चमक ने किया मन को नूराँ ।
सूरज और चाँद हज़ारों हुए उससे ख़िजलाँ ॥ ४ ॥
जग में इस चक्र ज़माने का यह दस्तूर हुआ ।
प्रेमी प्रीतम के चरन लाग के मशहूर हुआ ॥ ५ ॥
हिर्स दुनिया की मेरे दिल से हुई है सब दूर ।
तेरे दर्शन की लगन मन में रही है भरपूर ॥ ६ ॥
वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन सुर्त मिली ।
चंद्र मंडल को वहीं फोड़ के गगना में पिली ॥ ७ ॥
राग और रागिनी मैंने सुने अंतर जाकर ।
मेरे नज़दीक हुए हिंदू मुसलमाँ काफ़िर ॥ ८ ॥

२–शब्द १८६

निज रूप पूरे सतगुरू का प्रेम मन में छा रहा ।
बचन अमृत धार उनके सुन अमी में न्हा रहा ॥ १ ॥
जब से चरनों में लगा और धूर चरनों की लई ।
मन के अंतर का अँधेरा मैल सब जाता रहा ॥ २ ॥
मुखड़ा सुहावन क़द सीधा चाल अति शोभा भरी ।
तेज रोशन सीने अंदर मन को घायल कर रहा ॥ ३ ॥
जो किया सतसंग सतगुरु और बचन पूरे सुने ।
दीन दुनिया झूठी लागी और न उनका ग़म रहा ॥ ४ ॥
पिंड का सब भेद पोशीदा[1] मुझे ज़ाहिर हुआ ।
मेहर से पूरे गुरू के काम मेरा बन रहा ॥ ५ ॥
सुर्त ने जब धुन को पकड़ा आसमाँ पर चढ़ गई ।
हो गई क़ाबिल वहाँ पर फिर न कोई ग़म रहा ॥ ६ ॥

॥ वज़न २ ॥

सुर्त आवाज़ को पकड़ के गई ।
नभ में पहुँची व जानकार हुई ॥ ७ ॥
देखी वहाँ पर अजब नवीन बहार ।
और अनुभव जगा हुई सरशार ॥ ८ ॥
दुक्ख जन्म और मरन की तकलीफ़ात ।
हो गई दूर और गई आफ़ात ॥ ९ ॥

१—छिपा हुआ ।

भेद अंतर का मुझपै हाल खुला।
जब कि सतगुरु से मैं सवाल किया ॥ १० ॥
देह को ख़ाक की मैं छोड़ गया।
काल भी थक के मुझसे बाज़ रहा ॥ ११ ॥
सुर्त आकाश पर चढ़ी इक बार।
कर्म कारज गये हुई करतार ॥ १२ ॥
मेरे सतगुरु ने जब करी किरपा।
पद से जाकर मिली बियोग गया ॥ १३ ॥
कर्मी शरई नमाज़ी क्या जानें।
भेद अभ्यासी आप पहिचानें ॥ १४ ॥
विद्यावान सब रहे मूरख।
अंतरी भेद को न जानें कुछ ॥ १५ ॥
संशय में सब जगत रहा कूड़ा।
रहा बाचक न पाया गुरु पूरा ॥ १६ ॥
पाये सतगुरु उसी का जागा भाग।
बाक़ी बाद और बिबाद में रहे लाग ॥ १७ ॥
राधास्वामी गुरू ने की किरपा।
भाग जागा है मेरा अब धुर का ॥ १८ ॥

२-शब्द १८७

सुरत मन में प्रेम गुरु जिसके बसा।
फूल से ज़्यादा है हर दम वह खिला ॥ १ ॥

प्रीति सतगुरु की तू हरदम धार यार ।
औलियाओं का बना इस ही से कार ॥ २ ॥
यह न जानो तुम कि हक़ मिलता नहीं ।
वह है दाता उसको कुछ मुश्किल नहीं ॥ ३ ॥
प्रेम कारन जिसने कीन्हा खर्च माल ।
धन है वह जन उसको मिलिया प्रेम हाल ॥ ४ ॥
पहिले जिसने अपना घर दीन्हा उजाड़ ।
पाई फिर गुरु प्रेम की दौलत अपार ॥ ५ ॥
जग के जीवों के लिये दुनिया का मुल्क ।
भक्तजन के वास्ते मालिक का मुल्क ॥ ६ ॥
प्रेम चाहे छेद देवे आसमाँ ।
प्रेम से पिरथी रहे कंपायमाँ ॥ ७ ॥
प्रेम डाले जोश से समुँदर को फाड़ ।
प्रेम चाहे रेत सम पीसे पहाड़ ॥ ८ ॥
प्रेम छिन में मुरदे को ज़िंदा करे ।
प्रेम पल में शाह को बंदा करे ॥ ९ ॥
प्रेम सब कड़वाई को मीठा करे ।
प्रेम छिन में लोहे को कंचन करे ॥ १० ॥
पाक करता हैगा नापाकी को प्रेम ।
दूर कर देता है सब दरदों को प्रेम ॥ ११ ॥
प्रेम से हो जाय काँटा गुल गुलाब ।
प्रेम से हो जाय सिरका ज्यों शराब ॥ १२ ॥

प्रेम अगिनी अपने हिरदे बालिये।
फ़िक्र भजन और बंदगी का जालिये ॥ १३ ॥
प्रेमियों का मत है सब मत से जुदा।
प्रेमियों का इष्ट है मालिक सचा ॥ १४ ॥
कुफ़्र उसका दीन है और दीन उसका नूरे जाँ।
जो तू निरभय हो गया सारे जहाँ में हुई अमाँ ॥ १५ ॥
इश्क़ वह शोला है जिस घट में वह रौशन हो गया।
एक प्रीतम रह गया और बाक़ी सब जल भुन गया ॥ १६ ॥
प्रेम जब आया सभी को रद किया।
एक प्रीतम रहके बाक़ी बह गया ॥ १७ ॥
वाह वाह हे प्रेम तू है निरमला।
ग़ैर को प्यारे सिवा दीना जला ॥ १८ ॥
रीति भक्ती की सुनो हे साधवा।
लोभ की मत कर अमीरों से तू चाह ॥ १९ ॥
जिसके मन में है भरी भोगों की चाह।
कस खुले मालिक का भेद और हो निवाह ॥ २० ॥
सौ तरंगें मन में तेरे हैं भरी।
नूर मालिक की नहीं झलके ज़री ॥ २१ ॥
दुनिया को चाहे तू और दीदार को।
यह है मुश्किल अनसमझ है यार तू ॥ २२ ॥
जो तेरी आँखों से परदा दें उठा।
होगा दुनिया से तू बेज़ार और ख़फ़ा ॥ २३ ॥

धोखे उसके जब तुझे आवें नज़र ।
भाग जावेगा तू उससे दूरतर ॥ २४ ॥
खाना बेशुबहे का तुझको है ज़रूर ।
तो भजन तुझसे बनेगा बेक़सूर ॥ २५ ॥
जो तू खाना खायगा हक़ और हलाल ।
जीत लेगा मन को ऐ साहिब कमाल ॥ २६ ॥
दूर कर मन से जो है गुरु के सिवाय ।
तब रहे प्रीतम तेरे मन में समाय ॥ २७ ॥
जब तलक मन में तेरे है मान यार ।
हो नहीं सकता है मालिक तेरा यार ॥ २८ ॥
जब तेरे मन से हुआ अहंकार दूर ।
जा मिले मालिक से और पावे सरूर ॥ २९ ॥
अपने मालिक पै तू दे आपे को वार ।
जब नहीं तू तब रहा मालिक दयार ॥ ३० ॥
जो कि तन मन से हुआ अपने जुदा ।
मिल गया बस उसको इसरारे खुदा ॥ ३१ ॥
आँख कान और मुँह को अपने बंद कर ।
भेद मालिक का तुझे आवे नज़र ॥ ३२ ॥
चाह दुनिया की करे मन को सियाह ।
गुरु से गुरु को माँग मत कर और चाह ॥ ३३ ॥
जिस क़दर तुझको है मालिक से पियार ।
उससे ज़्यादा तुझसे वह करता है प्यार ॥ ३४ ॥

पर तुझे उसकी परख होती नहीं।
मेहर की उसके ख़बर होती नहीं ॥ ३५ ॥
बुल्हवस को दर्द इश्क़ होता नहीं।
सोज़ परवाने का मक्खी को नहीं ॥ ३६ ॥
इक जनम में दौलते दीदार पाय।
हर किसी को वस्ले हक़ मिलता नहीं ॥ ३७ ॥
जो तू मूरत याकि अगिनी पूजता।
आओ आओ जैसे तैसे भाव से ॥ ३८ ॥
सौ दफ़े भूल और चूक होगी मुआफ़।
मत निरास होना तू इस दरबार से ॥ ३९ ॥

२–शब्द १८८

लगे हैं सतगुर मुझे पियारे।
कर उनका सतसंग शब्द धारे ॥
छुटे हैं मन के बिकार सारे।
कहूँ मैं कैसे गुरू की गतियाँ ॥ १ ॥
सुरत शब्द में लगाऊँ दम दम।
सुनूँ मगन होय धुनों की झम झम ॥
होत सब दूर मन की हम हम।
सुनें कौन ऐसी घट में बतियाँ ॥ २ ॥
बढ़त पिरेम और पिरीत दिन दिन।
होत मन से सुरत भिन भिन ॥

गावती गुरु की महिमा छिन छिन ।
रहत नित गुरु चरन में रतियाँ ॥ ३ ॥
जगत के जीव हैं अभागी सारे ।
फिरें हैं मन इंद्रियों के मारे ॥
जाल से उनको को निकारे ।
सुनें न चित देके संत मतियाँ ॥ ४ ॥
जगा है मेरा अपार भागा ।
चरन में राधास्वामी आन लागा ॥
गायं सब जीव माया रागा ।
रहे हैं थक मग में जोगी जतियाँ ॥ ५ ॥

२–शब्द १८६

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
आज अचरज बचन सुनाय रहे री ॥ टेक ॥
सुन सुन बानी सब हुए हैं दिवाने ।
तन मन सुध बिसराय रहे री ॥ १ ॥
मेहर दया की बरषा भारी ।
प्रेम के बदरा छाय रहे री ॥ २ ॥
धुन झनकार सुनत घट अंतर ।
नइ नइ उमँग जगाय रहे री ॥ ३ ॥
सेवा कर हिये होत हुलासा ।
तन मन वार धराय रहे री ॥ ४ ॥

राधास्वामी पर जावें बलिहारी ।
　　जुड़ मिल उन गुन गाय रहे री ॥ ५ ॥

२–शब्द १६०

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
　　आज अद्भुत दरश दिखाय रहे री ॥ टेक ॥
दर्शन कर मोहे नर नारी ।
　　छबि पर दृष्टि तनाय रहे री ॥ १ ॥
क्या कहूँ महिमा अचरज रूपा ।
　　बहु सूर चंद शरमाय रहे री ॥ २ ॥
जिन जिन दरश करा मेरे गुरु का ।
　　सोइ निज भाग जगाय रहे री ॥ ३ ॥
जगत जीव क्या जानें महिमा ।
　　सब करम धरम भरमाय रहे री ॥ ४ ॥
आओ रे आओ जीव सरनी आओ ।
　　राधास्वामी मेहर कराय रहे री ॥ ५ ॥

२–शब्द १६१

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
　　आज नइ धुन घट में सुनाय रहे री ॥ टेक ॥

सुन सुन धुन स्रुत हुइ मतवाली ।
काल करम मुरझाय रहे री ॥ १ ॥
मन और सुरत दोऊ रस पावत ।
गगन ओर अब धाय रहे री ॥ २ ॥
हंसन संग करत नित केला ।
मानसरोवर न्हाय रहे री ॥ ३ ॥
अधर जाय स्रुत मिली भक्तन से ।
भँवरगुफा ढिंग छाय रहे री ॥ ४ ॥
धुन सुन गई जहँ राधास्वामी प्यारे ।
अचरज दरश दिखाय रहे री ॥ ५ ॥

२--शब्द १६२

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
मोहि प्यार से गोद बिठाय रहे री ॥ टेक ॥
मैं तो नीच अधम नाकारा ।
मेहर से मोहि अपनाय रहे री ॥ १ ॥
सतसँग में मोहि खैंच लगाया ।
भक्ती रीति सिखाय रहे री ॥ २ ॥
बल अपना दे सेव कराई ।
छिन छिन रच्छा कराय रहे री ॥ ३ ॥
शब्द भेद दे जुगत बताई ।
घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ४ ॥

क्योंकर करूँ शुकराना उनका ।
(मेरे) रोम रोम गुन गाय रहे री ॥ ५ ॥
चरन ओट दे जीव बचावें ।
काल और करम लजाय रहे री ॥ ६ ॥
जो कोइ चरन सरन में आये ।
सबका काज बनाय रहे री ॥ ७ ॥
जीव निबल क्या करे बिचारा ।
अपनी दया से निभाय रहे री ॥ ८ ॥
परम गुरू समरथ राधास्वामी ।
सबपर मेहर कराय रहे री ॥ ९ ॥

२–शब्द १९३

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
मोहि मेहर से अँगवा लगाय रहे री ॥ टेक ॥
सतसँग कर बाढ़ा बिश्वासा ।
गहरी प्रीति जगाय रहे री ॥ १ ॥
स्वामी चरनन पर जाऊँ बलिहारी ।
मेहर का सब गुन गाय रहे री ॥ २ ॥
शब्द अभ्यास करत मन सूरत ।
गगन ओर नित धाय रहे री ॥ ३ ॥
दया हुई सुत सतपुर आई ।
अलख अगम दरसाय रहे री ॥ ४ ॥

राधास्वामी धाम गई सुत सज के ।
निज महल में संग खिलाय रहे री ॥ ५ ॥

२–शब्द १६४

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
आज प्रेम रंग बरसाय रहे री ॥ टेक ॥
अनुरागी जन जुड़ मिल आये ।
बहु विधि विनती लाय रहे री ॥ १ ॥
प्रेम दान दीजै गुरु प्यारे ।
सब मन में तरसाय रहे री ॥ २ ॥
सुन विनती प्यारे राधास्वामी दाता ।
घट में सुरत चढ़ाय रहे री ॥ ३ ॥
मगन होय सुन नइ धुन घट में ।
धन धन राधास्वामी गाय रहे री ॥ ४ ॥

२–शब्द १६५

सुरतिया खिलत रही ।
देख गुरु मनमोहन छबि आज ॥ १ ॥
दरशन करत भूल रहि सुध बुध ।
छोड़ दिया सब जग का काज ॥ २ ॥

उमँग उमँग कर आरत गावत ।
प्रेम का पाया अद्भुत साज ॥ ३ ॥
भक्ति अंग में खुल खुल बरते ।
छोड़ झिझक और कुल की लाज ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया से गई भौ पारा ।
तज दिया मन कपटी का राज ॥ ५ ॥

२-शब्द १६६

धन धन धन प्रीतम बलिहारी ।
(आज) प्रेम लहर लहरावत न्यारी ॥ टेक ॥
बरसत अमृतधार अखंडा[1] ।
भींज रही रचना सब सारी ॥ १ ॥
धूम मची अब धरन[2] गगन में ।
होवत पल छिन जग उद्धारी ॥ २ ॥
भक्ती राज[3] हुआ अब घट घट ।
माया काल निपट थक हारी ॥ ३ ॥
सुरत नवेली[4] सज धज आई ।
प्रीतम चरनन गई लिपटा री ॥ ४ ॥

१—अटूट । २—पृथ्वी । ३—राज्य, अमल । ४—नई ।

पुरुष अपार अनंत हमारे ।
मेहर दया से लिया अपना री ॥
[मेहर से सबको (हमको) लिया अपना री] ॥ ५ ॥
चहुँ दिशि प्रेम घटा रही छाई ।
मस्त मगन सब जीव सुखारी ॥ ६ ॥
मन इंद्री भी निर्मल होकर ।
चरनन रस ले जगत बिसारी ॥ ७ ॥
तन मन अँग अँग उमँगत घूमत ।
उठत अकह शब्दन झनकारी ॥ ८ ॥
सुरत चली तज पिंड असारा ।
पँचरंगी फुलवार लखा री ॥ ९ ॥
सहस गगन दस द्वारा[1] खोलत ।
महासुन्न के पार सिधारी ॥ १० ॥
भँवरगुफा होय सतपुर गाजी[2] ।
सतगुरु दर्शन अद्भुत पा[3] री ॥ ११ ॥
अलख अगम और अनाम धाम चढ़ ।
मिल गये दर्शन राधास्वामी भारी ॥ १२ ॥

१—सहसदलकमल, त्रिकुटी, सुन्न । २—गरजी । ३—पा गई ।

सतगुरु की दया व मेहर की प्राप्ति के आनंद और अंतरी मुक़ामों की लीला व बिलास का वर्णन

१–शब्द १६७

आज आरती इक करूँ भारी ।
सुमिरन राधास्वामी करूँ अधारी ॥ १ ॥
तिल का थाल जोति हुई बाती ।
प्रेम भरी सन्मुख स्वामी आती ॥ २ ॥
रूप अनूप हिये में लाती ।
दरशन राधास्वामी निज कर पाती ॥ ३ ॥
मैं चकवी सतगुरु हुए चकवा ।
रैन भई तो हुआ बिछोहा[1] ॥ ४ ॥
मैं अज्ञान रैन बस पड़ी ।
वार रही और धीर न धरी ॥ ५ ॥
सतगुरु पार बसेरा कीन्हा ।
क्योंकर मिलूँ राह नहिं चीन्हा ॥ ६ ॥
तड़पूँ छिन छिन पिय के बियोग ।
कस पाऊँ अब पिय संजोग ॥ ७ ॥
अति आतुर[2] घबराय पुकारी ।
तब स्वामी मेरी कीन सँभारी ॥ ८ ॥

१—बियोग, जुदाई । २—बेचैन, अधीर ।

रात बिताई हुआ बिहाना[1]।
घट के भीतर भानु उगाना ॥ ६ ॥
चक के वार पड़ी थी थोथी।
गुरु चक पार सुनाई पोथी ॥ १० ॥
गुरु से मिली खोलकर पाट[2]।
घाट बाट घट बाँधा ठाट ॥ ११ ॥
लोहा ज्यों चुम्बक सँग मिली।
सुरत शब्द से जाकर रली ॥ १२ ॥
सुरत दृष्टि कर द्वारा झाँका।
तोड़ा जाय सुई का नाका ॥ १३ ॥
भीतर धस जो लीला देखी।
बरनूँ कैसे बात अगम की ॥ १४ ॥
अंतरजामी सतगुरु जाने।
और भेदी पुनि आप पहिचाने ॥ १५ ॥
श्याम सेत के मध्य समानी।
घंटा संख सुनी धुन बानी ॥ १६ ॥
सूर चाँद दोऊ दिसि[3] देखे।
सुखमन गगना तारे पेखे ॥ १७ ॥
आगे धसी बंक की नाल।
अवगत काल बिछाया जाल ॥ १८ ॥

१—सबेरा। २—पट, द्वार। ३—ओर।

आगे पहुँची त्रिकुटी द्वार ।
लाल रूप जहँ धुन ओंकार ॥ १९ ॥
सुन्न में गई महल दस माहिं ।
हंसन साथ मानसर न्हाहि ॥ २० ॥
सेत सेत वह सुन्न दिखाई ।
चंद्र चाँदनी चौक लखाई ॥ २१ ॥
शिखर[1] चढ़ी पच्छिम के द्वार ।
महासुन्न के हो गई पार ॥ २२ ॥
भँवरगुफा का ताक़[2] उघारा ।
सोहँग मुरली सुनी पुकारा ॥ २३ ॥
चौक परे सतलोक समानी ।
सत्तपुरुष धुन बीन बखानी ॥ २४ ॥
कोटिन सूर[3] लगे इक रोम ।
कोटि कोटि जहँ ऊगे सोम[4] ॥ २५ ॥
सत्तपुरुष की आयस[5] पाय ।
अलख लोक में पहुँची धाय ॥ २६ ॥
अरब सूर शशि[6] जहाँ लजायँ ।
ऐसी शोभा देखी आय ॥ २७ ॥
वहँ से आज्ञा लेकर चली ।
अगम पुरुष से जाकर मिली ॥ २८ ॥

१—सुन्न शिखर । २—आला । ३—सूर्य । ४—चंद्र । ५—आदेश, आज्ञा । ६—चंद्रमा ।

खरबन चंद्र सूर उजियारा ।
और कहूँ क्या अगम पसारा ॥ २९ ॥
वहाँ से भी फिर आगे बढ़ी ।
सुरत निरत निज पद में धरी ॥ ३० ॥
निज पद है वह राधास्वामी ।
फिर फिर कहूँ मैं राधास्वामी ॥ ३१ ॥

॥ सोरठा ॥

क्योंकर करूँ बखान, महिमा मैं उस धाम की ।
नील नील शशि भान, इक इक कँगुरे लग रहे ॥ ३२ ॥

पद्मन मणी जड़ी महलन में ।
शोभा वहँ की कहूँ क्योंकर मैं ॥ ३३ ॥
संख और महासंख शशि भान ।
गिर्द सिंघासन देखे आन ॥ ३४ ॥
जस स्वरूप राधास्वामी धारा ।
शोभा वाकी अकह अपारा ॥ ३५ ॥
क्या दृष्टान्त देउँ मैं सही ।
गिनती भी बाक़ी नहिं रही ॥ ३६ ॥
यह आरत मैं बढ़की कही ।
कस बरनूँ अब मीरी[1] भई ॥ ३७ ॥

१—अव्वल, प्रथम ।

१-शब्द १६८

आज दिवस सखि मंगल खानी ।
मैं राधास्वामी सँग आरत ठानी ॥ १ ॥
तन मन थाल बिरह कर[1] जोती ।
सुरत निरत धुन माल पिरोती ॥ २ ॥
गगन शिखर चढ़ अचरज देखूँ ।
हंसन साथ महासुन पेखूँ[2] ॥ ३ ॥
चरन गहूँ अब राधास्वामी के ।
आरत गाऊँ प्यारे जिय के ॥ ४ ॥
छिन छिन निरखूँ छवि राधास्वामी ।
तन मन अरपूँ दुखहर नामी ॥ ५ ॥
छिन छिन निरखूँ छवि प्रीतम की ।
तन मन अरपूँ दुखहर हिये की ॥ ६ ॥
कहाँ लग बरनूँ चोट बिरह की ।
कोई न जाने साल[3] जिगर की ॥ ७ ॥
बिरह अगिन तन मन मेरा फूँका ।
झाल[4] उठी जग दीना लूका[5] ॥ ८ ॥
बिन राधास्वामी मोहि कौन सँभारे ।
लोक चार मेरे ज़रा न अधारे ॥ ९ ॥
मैं भइ देही तुम भये स्वाँसा ।
तुम बिन नहिं जीवन की आसा ॥ १० ॥

१—की । २—देखूँ । ३—चोट या दुख । ४—तपन । ५—जला दिया ।

तुम भये मेघा मैं भइ मोरा ।
तुम्हरे दरस में करती शोरा ॥११॥
मैं बुलबुल तुम गुल[1] की क्यारी ।
मैं कुमरी[2] तुम सर्व[3] अपारी ॥१२॥
तुम चंदा मैं रैन अँधियारी ।
तुम से शोभा भई हमारी ॥१३॥
प्रेमसिंध जब लहर उठाई ।
भरम कोट[4] सब दीन बहाई ॥१४॥
काम क्रोध की बस्ती उजड़ी ।
आसा मनसा तन से बिछड़ी ॥१५॥
लोभ मोह सब दूर निकारी ।
बिषय बासना घट से टारी ॥१६॥
राज बिबेक हुआ अब भारी ।
सुख पाया तन रैयत[5] सारी ॥१७॥
मैं दासी सतगुरु चरनन की ।
किये हैं मनोरथ पूरन अबकी ॥१८॥
कहाँ लग बरनूँ महिमा उनकी ।
ख़बर पड़ी अब अनहद धुन की ॥१९॥
सुरत चढ़ी पहुँची ब्रह्मंडा ।
छोड़ गई यह ख़ाकी पिंडा[6] ॥२०॥

१—फूल । २—पंडुक जाति की एक चिड़िया । ३—एक वृक्ष का नाम ।
४—क़िला । ५—प्रजा । ६—शरीर ।

गगन मँडल जाय बैठक पाई ।
सुन्न महल में धधक चढ़ाई ॥ २१ ॥
द्वार दसम का पाया मरमा ।
दूर किये सब कंटक करमा ॥ २२ ॥
कर्म काट निज घर को चाली ।
माया ठगिनी दूर निकाली ॥ २३ ॥
महासुन्न का खेल दिखाना ।
क्या कहूँ वहाँ का हाल पुराना ॥ २४ ॥
सिंघ नाग जहाँ चौकी लाये ।
बिन सतगुरु कोइ पार न पाये ॥ २५ ॥
अंध घोर तिस आगे भारी ।
शब्द गुरू तहाँ कीन उजारी ॥ २६ ॥
भँभरी पार भरोखा देखा ।
संतन जाका बरना लेखा[1] ॥ २७ ॥
दायें बाट[2] गइ दीप अचिंता[3] ।
बाईं दिसा[4] जहाँ सहज बसंता[5] ॥ २८ ॥
मध्य होय सूरत चढ़ी आगे ।
भँवरगुफा जहाँ सोहँग जागे ॥ २९ ॥
सोहँग से जाय भेंटा कीन्हा ।
सत्तनाम धुन तापर चीन्हा ॥ ३० ॥

१—हाल । २—राह । ३—अचिन्त द्वीप को । ४—ओर ।
५—सहज द्वीप स्थित है ।

अलख पुरुष की धुन सुन पाई।
तहाँ से अगम पुरुष को धाई ॥३१॥
अगम लोक जाय डेरा डाला।
अब पाई पूरी टकसाला ॥३२॥
अब रहा आगे एक अनामी।
कहा कहूँ वह अकह कहानी ॥३३॥
अब आरत पूरन भई मेरी।
दया करो स्वामी मैं बलि तेरी ॥३४॥

१–शब्द १६६

जीव चितावन आये राधास्वामी।
बार बार तिन करूँ प्रनामी ॥ १ ॥
आरत उनकी करूँ सजाई।
चित्त शुद्ध कर थाल बनाई ॥ २ ॥
अब जीवों को चहिये ऐसा।
चल कर अरपें तन मन सीसा ॥ ३ ॥
जोति जगावें प्रथम बिरह की।
बाती जोड़ें बिर्त[1] लगन की ॥ ४ ॥
जब आरत अस लई सँजोई[2]।
सतगुरु दया दृष्टि कर जोई[3] ॥ ५ ॥

१—वृत्ति। २—जोड़ ली। ३—देखा।

दीन्हा दीन जान उपदेशा ।
सुरत शब्द में करो प्रवेशा ॥ ६ ॥
खोलो जाकर गगन किवाड़ी ।
श्याम कंज तब लागी ताड़ी ॥ ७ ॥
सेत कँवल फिर मन ठहराना ।
प्रगटी जोति सुन्न में जाना ॥ ८ ॥
सेत श्याम दल दोनों छोड़े ।
तीसर दल में मन को जोड़े ॥ ९ ॥
बंकनाल का द्वारा सोई ।
तन की सुद्धि वहाँ गइ खोई ॥ १० ॥
मन और सुरत चेत कर जागी ।
त्रिकुटी शब्द गुरू में लागी ॥ ११ ॥
अब पाया बिसराम ठिकाना ।
आरत पूरन करी बखाना ॥ १२ ॥
इतना धाम सुरत ने पाया ।
राधास्वामी चरन समाया ॥ १३ ॥

१—शब्द २००

आज काज मेरे कीन्हें पूरे ।
बाजे घट में अनहद तूरे ॥ १ ॥
भाग उदय आज हुए हमारे ।
राधास्वामी चरन सीस पर धारे ॥ २ ॥

बिमल आरती अब मैं गाऊँ।
परस चरन और बलि बलि जाऊँ ॥ ३ ॥
कोटि जन्म से धोखा खाया।
बिन स्वामी जोनी[1] भरमाया ॥ ४ ॥
दाव पड़ा मेरा अबके ऐसा।
राधास्वामी चरन आय मैं परसा ॥ ५ ॥
अब पाया मैंने अजर बिलासा।
क्या कहुँ महिमा अधिक हुलासा ॥ ६ ॥
रोम रोम रग रग मेरी बोली।
राधास्वामी राधास्वामी घुंडी खोली ॥ ७ ॥
रंग रँगी मेरे तन की चोली।
सुन सुन धुन अब भइ हूँ अमोली ॥ ८ ॥
घूम चली अब गगन मँझारा।
सुन्न शिखर का झाँका द्वारा ॥ ९ ॥
मानसरोवर किये अश्नाना।
सत्तनाम सूँ[2] लागा ध्याना ॥ १० ॥
महासुन्न घाटी चढ़ भागी।
सत्तपुरुष के चरनन लागी ॥ ११ ॥
हंसन साथ करूँ अब आरत।
प्रेम मगन होय दुक्ख बहावत[3] ॥ १२ ॥

१—अनेक योनियों में। २—से। ३—दूर करती हूँ।

अमी अहार किया मैं भारी ।
छिन छिन दर्शन पुरुष निहारी ॥ १३ ॥
शोभा बरनी न जाय अपारी ।
आरत पूरन हो गई सारी ॥ १४ ॥
धन धन धन धन क्या कहुँ महिमा ।
राधास्वामी २ पल पल कहना ॥ १५ ॥

१–शब्द २०१

भइ है सुरत मेरी आज सुहागिन ।
लगी है सुरत मेरी छिन छिन जागन ॥ १ ॥
स्वामी स्वामी लगी है पुकारन ।
राधा राधा नाम सँभारन ॥ २ ॥
गगन मँडल अब लागा गर्जन ।
भाग गये मेरे घट से दुर्जन[1] ॥ ३ ॥
तन मन मैंने कीन्हा अर्पन[2] ।
लगी सुरत अब सतगुरु चरनन ॥ ४ ॥
नाम थाल और बाती सुमिरन ।
जुक्ति जोति बाली मैं निज तन ॥ ५ ॥
आरत फेर चढ़ाया निज मन ।
गगन जाय सुनता अनहद धुन ॥ ६ ॥

१—काम क्रोध आदि दुष्ट । २—भेंट ।

संत कृपा पाया पद पूरन।
करम भरम डाले कर चूरन[1] ॥ ७ ॥
साफ़ किया मैं मन का दर्पन[2]।
ममता माया कीन्ही मर्दन ॥ ८ ॥
नूर[3] निरंजन जगत सँभारन[4]।
सहसकँवल चढ़ कीन्हा दर्शन ॥ ६ ॥
सुई द्वार नाका लगी झाँकन।
पाप अनंत हुए जहँ खंडन[5] ॥ १० ॥
बंकनाल धस त्रिकुटी धावन।
ओंकार धुन करी अब सरवन ॥ ११ ॥
सुन्न मँडल धुन पाई रारँग।
किंगरी सुनी और बाजी सारँग ॥ १२ ॥
चंद्र चौक जहँ देखा चाँदन।
हंसन रूप धरे मनभावन ॥ १३ ॥
महासुन्न सागर चली न्हावन।
सूरत मिली जाय महा चेतन ॥ १४ ॥
भँवरगुफा द्वारा अति पावन[6]।
धुन मुरली जहँ बजत सुहावन ॥ १५ ॥
हंसन शोभा मन बिगसावन।
सुन सुन धुन अति प्रेम बढ़ावन ॥ १६ ॥

१—पीस डाले। २—आईना। ३—प्रकाश। ४—परवरिश करने वाला। ५—नाश। ६—पवित्र।

चौक अगाध साध कर चालन ।
गइ सतपुर लगी पुरुष मनावन ॥१७॥
चौथा लोक त्रिलोकी कारन ।
संत बसें जिव करें उबारन ॥१८॥
अलख लोक इक पुरुष बिराजन ।
बैठे अचरज धार सिंघासन ॥१९॥
तिस आगे फिर अगम निहारन ।
अगम पुरुष ढिंग[1] शोभा पावन ॥ २० ॥
लगी सुरत निज भेद सुनावन ।
मिल गये राधास्वामी पतितउधारन ॥ २१ ॥
अब अनाम का क्या करूँ छानन[2] ।
सैन[3] कही यह अकह अपारन ॥२२॥
भई आरती अब संपूरन ।
छोड़ दई मैं सभी गुनावन[4] ॥२३॥

१-शब्द २०२

गुरू पै डालूँ तन मन वार ।
गुरू पै जाऊँ अब बलिहार ॥ १ ॥
गुरू ने नाम सुनाया सार ।
गुरू ने दीन्हा भेद अपार ॥ २ ॥

१—पास । २—निर्णय । ३—इशारा । ४—चिन्ता, मन की दौड़ ।

सुरत से सेऊँ[1] नाम सँभार ।
सहसदल मध्य होत झनकार ॥ ३ ॥
दामिनी[2] दमकत नैन निहार ।
रूप का खुला जहाँ भंडार ॥ ४ ॥
छाँट धुन घंटा बारंबार ।
और धुन त्यागो सब ही झाड़ ॥ ५ ॥
संख धुन पकड़ो उसके पार ।
बंक का खोलो जा कर द्वार ॥ ६ ॥
गहो फिर वहँ से धुन ओंकार ।
गरज मिरदंग है तिस लार[3] ॥ ७ ॥
ररँग धुन होवत दसवें द्वार ।
सुनो तुम जाकर अति कर प्यार ॥ ८ ॥
मानसर न्हाओ निर्मल धार ।
हंस हुइ छूटा काग अकार[4] ॥ ९ ॥
महासुन पहुँची शोभा धार ।
शब्द सँग कीन्हा जाय बिहार ॥ १० ॥
भँवर चढ़ बैठी होय हुशियार ।
नाम घर आई सुरत सुधार ॥ ११ ॥
अलख लख अगम करा दरबार ।
मिले फिर राधास्वामी यार ॥ १२ ॥

१—सेवन करूँ । २—बिजली । ३—उसके साथ । ४—शक्ल ।

१-शब्द २०३

गुरु मिले अमी रस दाता।
　　मैं अधम बिषय मद माता[1] ॥ १ ॥
मैं नीच अजान अनाड़ी।
　　स्रुत कीन्ही शब्द दुलारी ॥ २ ॥
गुरु महिमा छिन छिन गाता।
　　मन निज मन चरन लगाता ॥ ३ ॥
घट में नित आरत करता।
　　स्रुत सहसकँवल में धरता ॥ ४ ॥
जहँ जोति जगाई न्यारी।
　　तिल तोड़ा गगन सिहारी[2] ॥ ५ ॥
धुन अनहद शोर मचाई।
　　सुखमन में सुरत जमाई ॥ ६ ॥
गढ़ बंका तोड़ा भाई।
　　धुन ओंकार सुन पाई ॥ ७ ॥
आगे को निरत बढ़ाई।
　　श्यामा तज सेत समाई ॥ ८ ॥
चंदा जहँ नूर दिखाई।
　　हँसन की पाँति जोड़ाई ॥ ९ ॥
मुक्ता जहँ चुन चुन खाई।
　　आतम निज अच्छर पाई ॥ १० ॥

१—मस्त। २—तलाश किया या गई।

सतगुरु फिर किरपा धारी ।
हुइ महासुन्न धस पारी ॥ ११ ॥
अनहद धुन मुरली बाजी ।
ढिंग भँवरगुफा सुत गाजी ॥ १२ ॥
बल सतगुरु सचखँड आई ।
यहँ आरत अद्भुत गाई ॥ १३ ॥
चढ़ आगे अलख दिखाई ।
गुरु अगम पुरुष दरसाई ॥ १४ ॥
लीला कुछ अचरज कही न जाई ।
ज्ञानी और जोगी भेद न पाई ॥ १५ ॥
सब काल देश में गये भुलाई ।
दयाल देश यह संत जनाई ॥ १६ ॥
राधास्वामी महल अजब मैं पाया ।
रूप अगाध जाय नहिं गाया ॥ १७ ॥

१–शब्द २०४

आओ री सिमट हे सखियो ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ १ ॥
तुम जुड़ मिल बैठो गाओ ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ २ ॥

तुम अपने संग लगा लो।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥ ३ ॥
तुम प्रेम बढ़ा दो मेरा।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥ ४ ॥
तुम करो मदद मेरी मिल कर।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥ ५ ॥
तुम बिन मेरे बल नहिं पौरुष।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥ ६ ॥
तुम सेवक साँचे गुरु की।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥ ७ ॥
अब बिनती सुनो अधम की।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥ ८ ॥
तुम ढंग सिखाओ रँग से।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥ ९ ॥
यह औसर मिले न कबहीं।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥१०॥
अस औसर फिर न मिलेगा।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥११॥
मन बिरह जोति अब बाली[1]।
　　मैं आरत करूँ गुरू की ॥१२॥

१—जलाई।

कर[1] उमँग थाल ले आई ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ १३ ॥
सामाँ सब हुई इकट्ठी ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ १४ ॥
सुर्त श्याम कंज चढ़ झाँकी ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ १५ ॥
फिर बंकनाल धस आई ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ १६ ॥
त्रिकुटी की शिला[2] हटाई ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ १७ ॥
सुन सेत हंस गति पाई ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ १८ ॥
महासुन्न निरखती चाली ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ १९ ॥
मुरली धुन गुफा सँभाली ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ २० ॥
सचखंड बीन धुन जागी ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ २१ ॥
लख अलखपुरुष पद पागी[3] ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ २२ ॥

१—हाथ । २—चट्टान । ३—रल मिल गई ।

अब अगम गम्म कर धाई ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ २३ ॥
राधास्वामी धाम दिखाई ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ २४ ॥
राधास्वामी सतगुरु पूरे ।
मैं आरत करूँ गुरू की ॥ २५ ॥

१–शब्द २०५

लाई आरती दासी सज के ।
नाम राधास्वामी का छिन छिन भज के ॥ १ ॥
सील छिमा की ओढ़ चदरिया ।
काम क्रोध की छाँट बदरिया ॥ २ ॥
नाम थाल लिया हाथ पसारी ।
बिरह अगिन से जोति सँवारी ॥ ३ ॥
अमी सरोवर भर लई झारी[1] ।
राधास्वामी सन्मुख कर कर ढारी[2] ॥ ४ ॥
अगम लोक के बिंजन लाई ।
राधास्वामी आगे भोग धराई ॥ ५ ॥
अम्बर चीर पीताम्बर जोड़े ।
भेंट किये मैंने हाथी घोड़े ॥ ६ ॥

१—टोंटीदार बर्तन । २—गिराया ।

पाँच तत्त्व गुन तीन सिपाही ।
मार लिये राधास्वामी की दुहाई ॥ ७ ॥
चढ़ी गगन पर कीन्हा धावा ।
सुरत निरत दोउ शब्द समावा ॥ ८ ॥
बंकनाल की तोप चलाई ।
बिरह अगिन की चिनगी[1] लाई ॥ ९ ॥
धर्मराय की फ़ौज भगाई ।
धूम धाम मैंने बहुत मचाई ॥ १० ॥
घंटा संख मृदंग बजाई ।
धौंसा[2] धमक अजब धुन आई ॥ ११ ॥
गगन मँडल का घाटा[3] रोका ।
काल मंडली खाया झोका[4] ॥ १२ ॥
अब चढ़ गई सुरत शशि द्वारे ।
तीन लोक के हो गइ पारे ॥ १३ ॥
भानु किरन जहँ झलकन लागी ।
अगम रूप अद्भुत जहँ पागी ॥ १४ ॥
खुली दृष्टि जब झिरना झाँकी ।
क्या कहुँ शोभा अब मैं वहँ की ॥ १५ ॥
कोटिन भानु रोम इक लागी ।
देख सुरत अचरज अस जागी ॥ १६ ॥

१—चिनगारी । २—बड़ा नक़्क़ारा । ३—रास्ता । ४—झटका, धक्का ।

सुरत शब्द का हो गया मेला ।
अगम पुरुष अब रहा अकेला ॥१७॥
एक दोय कुछ कहा न जाई ।
ऐसे पद में जाय समाई ॥१८॥
आरत का मैं यह फल पाया ।
दुक्ख भर्म सब दूर बहाया ॥१९॥
परम शान्ति में आन[1] समानी ।
क्या कहूँ महिमा अचरज बानी ॥२०॥
अब कीजे स्वामी पूरन किरपा ।
तन मन मैं सब तुम पर अरपा[2] ॥२१॥
राधास्वामी राधास्वामी अब नित गाऊँ ।
और बचन कुछ याद न लाऊँ ॥२२॥
देव प्रसाद अगमपुर धामी ।
भक्ति सहित तुम चरन नमामी[3] ॥२३॥

१–शब्द २०६

हे सहेली आली मौज करी अब भारी ।
चरन कँवल प्रीतम जिया धारी ॥ १ ॥
जगी है जोति हिये भई उजियारी ।
गगन मँडल धुन भई धधकारी ॥ २ ॥

१—आकर। २—भेंट किया। ३—प्रणाम करता हूँ।

चाँद सुरज दोउ झाँक झरोका ।
सुषमन खिड़की द्वार जाय रोका ॥ ३ ॥
प्रान पवन जहँ देती झोका[1] ।
सुरत अड़ी अब माने न नेका[2] ॥ ४ ॥
शब्द गुरू जाय कीन्हा टेका ।
त्रिकुटी महल पर अब पग टेका[3] ॥ ५ ॥
मानसरोवर हंस समीपा ।
अच्छर का जहँ है निज दीपा ॥ ६ ॥
चार भानु कामिन जहँ कांती[4] ।
द्वादस भानु हंस की भाँती ॥ ७ ॥
लीला अद्भुत बरनी न जाई ।
देख देख मन जहँ बिगसाई ॥ ८ ॥
इकटक ठाढ़ी सुरत निहारी ।
धुन किंगरी जहँ सुनत सँभारी ॥ ९ ॥
महासुन्न होय सचखँड आई ।
अलख अगम में जाय समाई ॥ १० ॥
मौज अनामी क्या कहूँ लेखा ।
बरना न जाय रूप जस देखा ॥ ११ ॥
सोई रूप धारा राधास्वामी ।
जीव काज आये निजधामी ॥ १२ ॥

१—धक्का, झटका । २—ज़रा । ३—रक्खा । ४—कान्ति, प्रकाश ।

उन चरनन पर तन मन वारूँ ।
छबि उनकी पल पल हिये धारूँ ॥१३॥
आरत फेरूँ प्रेम उमँग से ।
सुधि बुधि बिसरी अब मोरे तन से ॥१४॥
फल पाया मैंने अगम अपारा ।
अमी अहार करूँ नित सारा ॥१५॥

१-शब्द २०७

चल सुरत देख नभ गलियाँ ।
जहँ सहसकँवल की पसरीं[1] कलियाँ ॥ १ ॥
कली कली में देखी नलियाँ[2] ।
नली नली मध[3] जोती बलियाँ[4] ॥ २ ॥
जोति निरंजन करते रलियाँ ।
नाना रँग फुलवारी खिलियाँ ॥ ३ ॥
देखत छबि मन जगत उगलियाँ[5] ।
अनहद सुन धुन में स्रुत पिलियाँ[6] ॥ ४ ॥
सुख अगाध क्या कहूँ जो मिलियाँ ।
कर्म कला जहँ छिन छिन जलियाँ ॥ ५ ॥
काम क्रोध आसा जहँ दलियाँ ।
फिर आगे सूरत चढ़ चलियाँ ॥ ६ ॥

१—फैली हुई हैं । २—नली । ३—बीच में । ४—जलती । ५—अन्दर से निकाल दिया । ६—प्रवेश कर गई ।

बंक तिर्कुटी सुषमन खुलियाँ ।
देख सूर शशि चमक बिजलियाँ ॥ ७ ॥
सुन्न शिखर पर जाय सँभलियाँ ।
सेत बरन[1] जहँ देख कँवलियाँ ॥ ८ ॥
महासुन्न महाकाल मिलनियाँ ।
भँवरगुफा पर सुरत चलनियाँ ॥ ९ ॥
सत्तनाम जा मर्म खुलनियाँ ।
अलख अगम पद मिले जुगलियाँ[2] ॥ १० ॥
राधास्वामी चरन परस मल धुलियाँ ।
आनँद अधिक मोहि अब मिलियाँ ॥ ११ ॥

१-शब्द २०८

चली सुरत अब गगन गली री ।
मिली जाय अब पिय से अली री ॥ १ ॥
दली[3] जाय मंसा सब मैली ।
सुन्न शिखर पर खुल खुल खेली ॥ २ ॥
भई सुरत सतनाम की चेली ।
गगन फोड़ अब आई सहेली ॥ ३ ॥
अब पाया पद ऐसा हेली ।
खिल गई घट में पौद चमेली ॥ ४ ॥

१—रंग का । २—दोनों । ३—पीस दी ।

पहिर लई गल धुन की सेली[1]।
चरन धूर सतगुरु अब ले ली ॥ ५ ॥
अगम अटारी चढ़ी अकेली।
जहँ से यह रचना सब फैली ॥ ६ ॥
अब याकी बिधि क्या कहुँ खोली।
संत बिना को समझे बोली ॥ ७ ॥
यह आरत है परम पुर्ष की।
धुन पकड़ी मैं अधर अर्श[2] की ॥ ८ ॥
सतगुरु ने अब दया बिचारी।
पद अपना दे काल बिडारी[3] ॥ ९ ॥
शब्द अगम का सौदा कीन्हा।
सरन पड़ी सतगुरु पद लीन्हा ॥१०॥
दीनदयाल दयानिधि स्वामी।
काढ़ लिया मोहि अंतरजामी ॥११॥

१—शब्द २०९

सुरत चढ़ी घट में अब दौड़ी।
सुन कर शब्द भई अब पोढ़ी[4] ॥ १ ॥
आसा मनसा जग की छोड़ी।
लाज कान[5] कुल की सब तोड़ी ॥ २ ॥

१—गुलूबन्द। २—आकाश। ३—भगा दिया। ४—मज़बूत।
५—मर्यादा।

सतसँग रँग पाया भइ बौरी ।
सेत द्वार में निज कर जोड़ी ॥ ३ ॥
श्याम नगर गइ परदा फोड़ी ।
गगन खंड फिर सूरत मोड़ी ॥ ४ ॥
गगन नगर पहुँची सुन्दर में[1] ।
खिला चमन अब हिये अंदर में ॥ ५ ॥
सहन[2] मिला चौड़ा अब सुन में ।
मगन हुई पहुँची निज धुन में ॥ ६ ॥
रस पाया अगम अधर में ।
पाया चैन आय गई घर में ॥ ७ ॥
घट घट भीतर यही बिलासा ।
देख देख मैं पाउँ हुलासा ॥ ८ ॥
जीव अचेत न चेते भाई ।
घर सुख तज बन बन भटकाई ॥ ९ ॥
जा के घर सुख का भंडारा ।
क्यों भरमे फिरे दर दर[3] मारा ॥ १० ॥
राधास्वामी कहत सुनाई ।
कर सतसंग बूझ[4] तब पाई ॥ ११ ॥

१—सुन्न के दर में । २—आँगन । ३—दरवाज़े दरवाज़े । ४—समझ ।

१-शब्द २१०

गाओ री सखी जुड़ मंगल बानी ।
आज पिया मेरे दीन निशानी ॥ १ ॥
घट में घाट द्वार मैं चीन्हा ।
प्रेम पदारथ छिन छिन लीन्हा ॥ २ ॥
मन चढ़ चला छोड़ तन थाना ।
गगन महल पर उमँग समाना ॥ ३ ॥
तहँ से सुरत चली होय न्यारी ।
सुन्न नगर का शब्द पिछाना ॥ ४ ॥
क्या कहुँ महिमा बरनी न जाई ।
काल करम दोउ हुए दिवाना[1] ॥ ५ ॥
मैं पिया की अपने सुधि पाई ।
घाट घाट पर जोति जगाई ॥ ६ ॥
भागा तिमिर हुआ उजियारा ।
चौक चाँदनी द्वार निहारा ॥ ७ ॥
शोभा महल कहाँ लग बरनूँ ।
कँगुरे कँगुरे सूर हज़ाराँ ॥ ८ ॥
आगे बाट[2] चली नहिं मेरी ।
राधास्वामी करो निबेड़ा[3] ॥ ९ ॥

१—पागल । २—राह । ३—निपटारा यानी पार ।

१-शब्द २११

प्रेम भरी मेरी घट की गगरिया ।
छूट गई मोसे मलिन नगरिया ॥ १ ॥
नौ दूतन मोसे धूम मचाई ।
दसवें ने मोहि खैंच चढ़ाई ॥ २ ॥
हंस मंडली फ़ौज लड़ाई ।
काल दुष्ट अब पीठ दिखाई[1] ॥ ३ ॥
माया आई मोहि लुभावन ।
कनक[2] कामिनी बान छुड़ावन ॥ ४ ॥
मैं भी उमँग नवीन सँभारी ।
मार लिया दल उसका भारी ॥ ५ ॥
भागी माया छोड़ा देस ।
मैं सतगुरु को करूँ आदेस[3] ॥ ६ ॥
सतगुरु पकड़ी अब मोरी बहियाँ ।
खैंच चढ़ाया गगन मझइयाँ ॥ ७ ॥
धुन सुन कर अब भई निहाल ।
सत्तपुरुष मेरे दीनदयाल ॥ ८ ॥
दया करी मोहि अंग लगाई ।
चरन ओट गह सरन समाई ॥ ९ ॥

१—हार कर भाग गया । २—सोना यानी धन । ३—नमस्कार ।

कोटि जन्म की ख़बर जनाई ।
जन्म मरन अब दूर नसाई ॥१०॥
प्रेम प्रीति का मिला ख़ज़ाना ।
जीत रीति गुरु शब्द पिछाना ॥११॥
शब्द पाय सत शब्द पुकारी ।
चली सुरत और निज धुन धारी ॥१२॥
राधास्वामी अंतरजामी ।
गति उनकी कस करूँ बखानी ॥१३॥

१-शब्द २१२

गुरु नाम रसायन[1] दीन्हा ।
दारिद्र[2] हुआ सब छीना ॥ १ ॥
सुख रासि[3] मिली घट अंतर ।
धुन शब्द गही गगनन्तर[4] ॥ २ ॥
सुख सागर ग़ोता मारा ।
भौसागर त्यागा भारा ॥ ३ ॥
धुन नाम मिले जहँ मोती ।
सूरत अब लड़ियाँ पोती ॥ ४ ॥
सिंगार किया स्रुत अपना ।
पति मिला छोड़ जग सुपना ॥ ५ ॥

१—कीमियाँ । २—निर्धनता । ३—भंडार । ४—गगन के मध्य में ।

अनहद धुन अजपा जपना ।
सुन सुन इस तन से हटना ॥ ६ ॥
कामादिक मन से तजना ।
गुरु शब्द माहिं नित लगना ॥ ७ ॥
नभ द्वारा लागा फटने ।
लगी नींद भूख अब घटने ॥ ८ ॥
अमृत रस मिला अधर में ।
पहुँची अब सुन्न शिखर में ॥ ९ ॥
लीला अब देखी न्यारी ।
बर्नन सब करूँ सँभारी ॥ १० ॥
रतनन के भरे ख़ज़ाने ।
अमृत के कुंड दिखाने ॥ ११ ॥
हीरों की खान खुलानी ।
लालन की देख निशानी ॥ १२ ॥
सूरज और चाँद अनंता ।
तारों का मंडल बँधता ॥ १३ ॥
रंभा[1] जहँ गावे बानी ।
हंसन गति अजब कहानी ॥ १४ ॥
सुत देख देख हरखानी ।
महिमा क्या करूँ बखानी ॥ १५ ॥

१—अप्सरा, परी ।

यह भेद सार बतलाया।
राधास्वामी सब दिखलाया ॥१६॥

१-शब्द २१३

चमकन अब लागी घट में बिजली।
यह घाट लखे कोइ सूरत बिरली।
सतगुरु ने दृष्टि करी मुझपर अब सगली[1]।
तिल तोड़ लिया नभ पार चढ़ी,
जहँ छाय रही नित बदली ॥ १ ॥
दृग झाँक रही स्रुत सूर भई,
छेदा दल कदली।
तन छोड़ चली जड़ गाँठ खुली,
अब पाय गई अपना गुरु अदली ॥ २ ॥
धुन सार मिली सुन पार चली,
पाया पद अमली[2] ॥
खोला सुन द्वारा झाँका घर न्यारा,
डार लई चौकी अब सँदली ॥ ३ ॥
बैठी घर जानी धुन माहिं समानी,
देख हंसन मँडली।
पिया अमृत प्याला घट हुआ उजाला,
छाँट दई माया सब गदली[3] ॥ ४ ॥

१—सारी। २—निर्मल। ३—गंदी।

पद आदि मिली धुन साथ रली[1],
बुधि दूर हुई कमली[2] ।
महासुन्न मिली लख भँवर गली,
अब होय गई सतपद अचली[3] ॥ ५ ॥
लख अलख सही घर अगम रही,
कुल काल दली फिर चाल चली ।
पा कँवल कली,
राधास्वामी चरन पर जा मचली[4] ॥ ६ ॥

१–शब्द २१४

सूरत सरकत[5] पार वार त्याग देही तजत ।
घट का घोर[6] सुनाय रात दिवस लागी रहत ॥ १ ॥
नाम अमोलक पाय गगन गिरा गरजी चलत ।
धाम लिया सत जाय पुरुष दरस पाई सुगत[7] ॥ २ ॥
मेरे गृह अति रंग बोलत मोर पपीहरा ।
स्वाँती बरसत अंग मेघ बरस तन मन हरा ॥ ३ ॥
ज्यों हरियावल भूमि खोल दृष्टि देखत रहूँ ।
बिच बिच उठत तरंग मन तन सीतलता सहूँ ॥ ४ ॥
खोलत बज्र किवाड़ सुरत जहँ टक लावई[8] ।
सतगुरु लिया सँभार सुरत शब्द सँग न्हावई ॥ ५ ॥

१—रत हुई । २—बावली । ३—स्थिर । ४—अड़ गई । ५—सरकती है ।
६—शब्द । ७—अच्छी गति । ८—निर्निमेष देखती है ।

झूलत गगन हिंडोल सखियाँ निकट झुलावहीं ।
मैं अब किया सिंगार पिया रिझावत धावही ॥ ६ ॥
अब आरत घट धार अंतर पट खोलत चली ।
दीपक जोति सँभार सूर चाँद गगना गली ॥ ७ ॥
गावत राग मलार धुन अनहद शोभा अधिक ।
होत जहाँ झनकार ढोल दमामा[1] अति धमक ॥ ८ ॥
बिन सतगुरु परताप यह लीला नहिं को लखे ।
देखेंगे निज दास पी पी अमृत नित छके[2] ॥ ९ ॥
पूरन पद बिश्राम सेत पदम पर जा चढ़ी ।
राधास्वामी नाम गावत है सन्मुख खड़ी ॥ १० ॥

१–शब्द २१५

गुरू मोहि दीनी अमृत रास ।
बुझी मेरी जन्म जन्म की प्यास ॥ १ ॥
सुरत अब चढ़ गई फोड़ अकाश ।
मिली जाय शब्द लखा परकाश ॥ २ ॥
जगत की छूटी सब ही आस ।
गई अब तृष्णा, बल हुआ नास ॥ ३ ॥
काल मोहि देखत करे तिरास[3] ।
कर्म भी भागा छोड़ा बास ॥ ४ ॥

१—नक़्क़ारा । २—तृप्त हुए, अघाये । ३—त्रास, भय ।

दूर की बस्तु मिली मोहि पास ।
छुटी तन मन से, हुई निरास ॥ ५ ॥
गई अमरापुर किया निवास ।
गाऊँ गुरु महिमा स्वाँसो स्वाँस ॥ ६ ॥
हुई मैं राधास्वामी चरनन दास ।
ज्ञानी और जोगी खोदें घास[१] ॥ ७ ॥

१–शब्द २१६

गुरू ने मोहि दीना नाम सही[२] ।
तृष्णा सकल दही[३] ॥ १ ॥
सतसँग करूँ सार रस पीऊँ ।
दृढ़ कर नाम गही[४] ॥ २ ॥
गुरु की महिमा कही न जावे ।
चरनन पकड़ रही ॥ ३ ॥
जिस पर दृष्टि पड़ी मेरे गुरु की ।
सोई पार गई ॥ ४ ॥
धारा शब्द[५] चली नित आवे ।
कूड़ा कर्म बही ॥ ५ ॥
काल टार मन मार निकारा ।
सहज सुहाग दई ॥ ६ ॥

१—तुच्छ काम करें या व्यर्थ काम करें । २—सच्चा । ३—जल गई ।
४—पकड़ा । ५—शब्द की धार ।

मैं प्यारी सतगुरु अपने की ।
सत्तनाम की लार[1] लई ॥ ७ ॥
धर[2] को छोड़ अधर[3] चढ़ चाली ।
सुरत हंसिनी आज भई ॥ ८ ॥
काम क्रोध मद लोभ बिडारे[4] ।
ममता खोय गई ॥ ९ ॥
धुर पद पहुँच शब्द सँग पागी[5] ।
मान ईर्षा सकल दही[6] ॥१०॥
राधास्वामी नाम दिवानी ।
अस्तुति कौन कही ॥ ११ ॥

१—शब्द २१७

सखी चल देख बहार पिया की ।
चढ़ो घट सेज सँवार पिया की ॥ १ ॥
सुनो धुन गगना पार पिया की ।
निरख छवि देखी सार[7] पिया की ॥ २ ॥
अमी रस आई धार पिया की ।
सुर्त हो गई प्यारी नारि पिया की ॥ ३ ॥
मैं हो गइ जग को जार पिया की ।
गुरु कीन्ही सुरत गलहार पिया की ॥ ४ ॥

१—साथ । २—शरीर । ३—ऊपर को । ४—भगा दिये । ५—मिल गई ।
६—नष्ट हो गई । ७—उत्तम ।

राधास्वामी खिलाई बाड़[1] पिया की ।
अब झाँकी गली अगार[2] पिया की ॥ ५ ॥

२–शब्द २१८

सुरतिया झूल रही ।
आज धरन गगन के बीच ॥ १ ॥
घेर फेर मन घट में लाई ।
सुरत अधर में खींच ॥ २ ॥
गगन तख़्त पर गुरू बिराजे ।
मेहर करी मोहि लीना इँच[3] ॥ ३ ॥
माया दल थक रहा डगर[4] में ।
काल करम दोउ डाले भींच[5] ॥ ४ ॥
होय निसंक चढ़ूँ नित घट में ।
सैर करूँ पद ऊँच और नीच ॥ ५ ॥
सुन सत शब्द गई अमरापुर[6] ।
छोड़ दई संगत मन नीच ॥ ६ ॥
घट में भक्ती पौद खिलानी ।
प्रेम रूप जल से रही सींच ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन पाय बिस्रामा ।
निर्भय सोऊँ आँखें मीच[7] ॥ ८ ॥

१—बाड़ी । २—अगाड़ी । ३—खींच लिया । ४—मार्ग । ५—दबा दिए ।
६—सत्तलोक । ७—बंद करके ।

२–शब्द २१९

सुरतिया बिगस रही।
　　लख कँवल कली ॥ १ ॥
उलटत दृष्टि जोड़ तिल अंदर।
　　नभ की ओर चली ॥ २ ॥
सहसकँवल जाय बासा कीना।
　　जहाँ वहाँ जोति बली[1] ॥ ३ ॥
घंटा संख तजी धुन दोई।
　　निरखी आगे गगन गली ॥ ४ ॥
माया थाक रही मग माहीं।
　　हार रहा अब काल बली ॥ ५ ॥
अक्षर निःअक्षर के पारा।
　　सत्त शब्द में जाय रली ॥ ६ ॥
संत मते की सार न जानी।
　　बेद कतेब रहे हार तली[2] ॥ ७ ॥
अलख अगम का रूप निहारत।
　　राधास्वामी चरनन जाय मिली ॥ ८ ॥
मेहर दया जस मोपर कीनी।
　　गुन उनका कस गाऊँ अली ॥ ९ ॥

१- जलती है। २—नीचे।

बारहमासा

१—शब्द २२०

असाढ़ मास पहला

प्रथम असाढ़[1] मास जग छाया।
आसा धर जिव गर्भ समाया॥ १॥
आस आड़ ले जीव भुलाया।
घर को भूल दुक्ख अति पाया॥ २॥
कर्म वेग ने बाहर डाला।
माया कीन्हा बहु जंजाला॥ ३॥
बाल अवस्था अति दुख पावे।
वेदन[2] भारी नित्त सतावे॥ ४॥
मुख बोले ना सैन चलावे[3]।
काहू दुख अपना न जनावे॥ ५॥
दुख में रोवे अति बिललावे[4]।
मात पिता बुधि काम न आवे॥ ६॥
दुख कुछ है औषध कुछ करिहैं।
उलटि पलटि संतापै[5] देहैं॥ ७॥

१—प्रान्तिक भाषा में 'असाढ़' बोलते हैं, आसा + आड़ = आशा की आड़ यानी ओट। इसी अर्थ को दूसरी कड़ी में प्रकट किया गया है।
२—वेदना, दुःख-दर्द। ३—इशारा करे। ४—बिलखता है।
५—कष्ट ही।

बालपना अति दुख में बीता।
भई किशोर[1] खेल मति लीता[2] ॥ ८ ॥
मात पिता चाहें पढ़वाना।
यह रहे निस दिन खेल दिवाना[3] ॥ ९ ॥
मार पीट पितु मात घनेरी[4]।
वह भी दुख की भारी ढेरी ॥१०॥
ये भी दिन दुख ग़फ़लत बीते।
सुक्ख न पाया रहे अब रीते[5] ॥११॥
तरुन अवस्था[6] आवन लागी।
मन तरंग अब छिन छिन जागी ॥१२॥
चाह उठी तब करी सगाई।
ब्याह हुआ घर नारी आई ॥१३॥
नारि देख मन अति हरषाना।
बेड़ी[7] भारी सो नहिं जाना ॥१४॥
मात पिता का हक़ सब भूले।
दिन और रात नारि सँग फूले[8] ॥१५॥
घटती चली लगन[9] पितु माता।
नारि पुत्र सँग मन अति राता ॥१६॥
फ़िकर पड़ा उद्यम[10] का जब ही।
दर दर भरमे दुख अति सहही ॥१७॥

१—ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था। २—ली। ३—मस्त। ४—अधिक। ५—ख़ाली। ६—जवानी। ७—पैर का बंधन। ८—ऐश किया। ९—प्रीति। १०—रोज़गार।

स्वान समान[1] करी गति अपनी।
धन का सुमिरन धन की जपनी ॥ १८ ॥
धन पाया तो हुआ अनंदा।
अनमिलते पड़ा दुख का फंदा ॥ १९ ॥
गृह कारज अब नित्त सतावें।
कुल और जाति बहुत भरमावें ॥ २० ॥
सब का बोझ भार सिर लीना।
अब तड़पे जस जल बिन मीना ॥ २१ ॥
मूरख ने यह भार उठाया।
अब दुक्खन से बहु घबराया ॥ २२ ॥
भरमत फिरे सुक्ख के कारन।
सुख नहिं मिला हुआ दुख दारुन[2] ॥ २३ ॥
किये अपने को बहु पछतावे।
पर अब कछू पेश नहिं जावे ॥ २४ ॥
कल कलेश बहु बर्षन लागे।
बर्षा ऋतु असाढ़ अब जागे ॥ २५ ॥
मोर पपीहा भर्म त्रास के।
रोग सोग दुख मोह आस के ॥ २६ ॥
बोलन लागे चहुँ दिस घेरी।
उमड़ी घटा मानो रात अँधेरी ॥ २७ ॥

१—कुत्ते के समान। २—कठिन।

भक्ति चंद्रमा सूरज ज्ञाना ।
छिप गये दोनों घोर समाना ॥ २८ ॥
अज्ञान अँधेरा अति घट छाया ।
लोक गया परलोक गँवाया ॥ २९ ॥
यह भी बीते दुख में सब दिन ।
बृद्ध अवस्था[1] आई छिन छिन ॥ ३० ॥

दोहा

बृद्धाई[1] बादल उमँड, घेर लिया तन खंड ।
लोभ नदी बाढ़न लगी, तृष्णा अति परचंड[2] ॥ ३१ ॥
बुद्धिहीन बलछीन होय, बर्षा तन से होत ।
नैन नीर[3] मुख नासिका, बहन लगे जस सोत ॥ ३२ ॥

सावन मास दूसरा

सावन आया मास दूसरा ।
सास मरी घर आया ससुरा ॥ १ ॥
काली घटा श्याम मन हूआ ।
श्याम कंज में यह मन मूआ[4] ॥ २ ॥
गरजे बादल चमके बिजली ।
मनसा मोड़ी आसा बदली ॥ ३ ॥

१—बुढ़ापा । २—तेज़ । ३—पानी । ४—मर गया ।

सुरत निरत की झड़ियाँ लागीं।
धुन अनंत शब्दन से चालीं ॥ ४ ॥
बृद्ध अवस्था चेतन लागी।
काल आय जब सिर पर गाजी[१] ॥ ५ ॥
जमपुर से अब सतगुरु राखें[२]।
बहुतक जीव मौत दर[३] ताकें[४] ॥ ६ ॥
काल घटा जब आकर छाई।
धारा मौत अधिक बरसाई ॥ ७ ॥
जीव अनेक रहे घबराई।
काया गढ़[५] उन दीन्ह ढवाई ॥ ८ ॥
जमपुर जाय जीव पछतावें।
जम के दूत तिन बहुत सतावें ॥ ९ ॥
नाना कष्ट देयँ पल पल में।
फिर फाँसी डालें गल गल में ॥ १० ॥
कुंभी नरक माहिं दें ग़ोते।
जीव सहें दुख अति कर रोते ॥ ११ ॥
वे निरदई[६] दया नहिं लावें।
अति तिरास[७] से जिव मुरझावें ॥ १२ ॥
अगिन खंभ से फिर लिपटावें।
हाय हाय कर तब चिल्लावें ॥ १३ ॥

१—गर्जा। २—बचावें। ३—द्वार। ४—देखें। ५—कोट, क़िला।
६—कठोर, बेरहम। ७—भय या कष्ट।

सुने न कोई मुश्किल भारी ।
सर्पन माला ले गल डारी ॥ १४ ॥
मार मार चहुँ दिस से होई ।
पति[1] गति[2] अपनी सब बिधि खोई ॥ १५ ॥
नरकन में अति त्रास दिखावें ।
फिर चौरासी ले पहुँचावें ॥ १६ ॥
गुरु भक्ती बिन यह गति पाई ।
नरदेही सब बाद[3] गँवाई ॥ १७ ॥
जो जो भजन भक्ति से चूके ।
तिनके मुख जम पल पल थूके ॥ १८ ॥
ऐसी कुगति होयगी सबकी ।
जो नहिं धारें[4] सतगुरु अबकी ॥ १९ ॥
सतगुरु बिना कोइ नहिं बाचे[5] ।
नाम बिना चौरासी नाचे ॥ २० ॥
धन्य भाग हम सतगुरु पाया ।
चढ़ी सुरत मन गगन समाया ॥ २१ ॥
सुन्नमँडल जाय झूला झूली ।
सावन मास लिया फल मूली ॥ २२ ॥
सखियाँ सब मिल गावन लागीं ।
माया ममता देखत भागीं ॥ २३ ॥

१—इज़्ज़त । २—हालत । ३—व्यर्थ, बेफ़ायदा । ४—शरण लें । ५—बचे ।

सभी सुहागिन झूलें घर घर ।
पिया अपने को हिरदे धर धर ॥ २४ ॥
पिया विमुख तरसें बहु नारी ।
जिनके पति परदेस सिधारी ॥ २५ ॥
तिनको सावन काला नागा ।
डस डस खावे लागे आगा[1] ॥ २६ ॥
बाहर वर्षा रिमझिम होई ।
घट में उनके अग्नि समोई[2] ॥ २७ ॥
अग्नि लगी मानो तन मन फूँका ।
उनके भावें पड़ गया सूखा ॥ २८ ॥
तीज त्योहार कछू नहिं भावे[3] ।
मन में दुख, नहिं हरष समावे ॥ २९ ॥
पिया बिन सावन कैसा आया ।
जेठ तपन जस जीव जलाया ॥ ३० ॥

दोहा

जीव जले बिरह अगिन में क्योंकर सीतल होय ।
बिन वर्षा पिया बचन के गई तरावत खोय ॥ ३१ ॥
जिनको कंथ[4] मिलाप है तिन मुख बरसत नूर[5] ।
घट सीतल हिरदा सुखी बाजे अनहद तूर ॥ ३२ ॥

१—अग्नि । २—समाई हुई है । ३—अच्छा लगे ।
४—प्रीतम से । ५—प्रकाश, शोभा ।

भादों मास तीसरा

भादों[1] मास तीसरा जारी[2] ।
दों[3] लागी सब जग को भारी ॥ १ ॥
तीन ताप का बड़ा पसारा[4] ।
इक इक जीव घेर कर मारा ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ सतावें ।
माया ममता आग लगावें ॥ ३ ॥
जल जल जीव पड़े घबरावें ।
छूटन की कोइ जुक्ति न पावें ॥ ४ ॥
कोई कर्म कोइ धर्म सँभारे ।
कोइ बिद्या कोइ जप तप धारे ॥ ५ ॥
कोइ मंदिर जा मूरति पूजे ।
कोइ तीरथ कोइ बर्त में जूझे[5] ॥ ६ ॥
ये सब भूले भटका खावें ।
कोइ न इनकी भूल मिटावें ॥ ७ ॥
क्या पंडित क्या भेष ग्रहस्ती ।
ये सब बसे काल की बस्ती ॥ ८ ॥
चौरासी में बहु भरमावें ।
नरक स्वर्ग के धक्के खावें ॥ ९ ॥

१—भा = हुआ + दों = आग । इसी बात को आगे ज़ाहिर किया है ।
२—शुरू है । ३—आग । ४—फैलाव । ५—खपे ।

जो कोइ उनसे कहे समझाई।
उलटी मानें करें लड़ाई ॥ १० ॥
कलिजुग कर्म धर्म नहिं कोई।
नाम बिना उद्धार न होई ॥ ११ ॥
नाम भेद है अति कर झीना[1]।
बिन सतगुरु काहू नहिं चीन्हा ॥ १२ ॥
जपने में सब गये भुलाई।
नाम अगम कोइ भेद न पाई ॥ १३ ॥
जो सतगुरु पूरे मिल जाते।
तो वे भेद नाम का गाते ॥ १४ ॥
नाम रहे चौथे पद माहीं।
यह ढूँढ़ें तिरलोकी माहीं ॥ १५ ॥
तीन लोक में नाम न पावें।
चौथे लोक में संत बतावें ॥ १६ ॥
तीन लोक में बसता काल।
चौथे में रहे नाम दयाल ॥ १७ ॥
सोई नाम संतन से पावे।
बिना संत नहिं नाम समावे ॥ १८ ॥
अब मारग का भेद बताऊँ।
आँख खुले तो भेद लखाऊँ ॥ १९ ॥

१—सूक्ष्म।

पहले सुरती नैन जमावे ।
घेर फेर घट भीतर लावे ॥ २० ॥
बिरह होय तो यह बन आवे ।
मेहनत करे तो कुछ फल पावे ॥ २१ ॥
देखे तिल, पिल[1] जोति समावे ।
अनहद सुन मन बस में आवे ॥ २२ ॥
मन बस होय तो सूरत जागे ।
निरख अकाश आत्मा पागे ॥ २३ ॥
शब्द पकड़ परमातम निरखे ।
आतम जाय परमातम परखे ॥ २४ ॥
परमातम से आगे जाई ।
सुन्न महल में बैठक पाई ॥ २५ ॥
सुन्न के परे महासुन लेखा ।
महासुन्न पर खिड़की देखा ॥ २६ ॥
खिड़की आगे चौक अपारा ।
चौक परे निरखा सतद्वारा ॥ २७ ॥
सत्तपुरुष सतनाम कहाई ।
सत्तलोक निज पाया आई ॥ २८ ॥
यह मारग संतन ने भाखा ।
भेद प्रगट कुछ गोय[2] न राखा ॥ २९ ॥

१—धँसकर । २—गुप्त ।

लोक बेद बस जो जिव होई।
सो परतीत न लावे कोई ॥ ३० ॥

दोहा

लोक बेद में जो पड़े, नाग पाँच डस खायँ।
जन्म जन्म दुख में रहें, रोवें और चिल्लायँ ॥ ३१ ॥
जिन सतगुरु के बचन की, करी नहीं परतीत।
नहिं संगत करी संत की, वे रोवें सिर पीट ॥ ३२ ॥

क्वार मास चौथा

क्वार[1] महीना चौथा आया।
जिव भौसागर वार रहाया ॥ १ ॥
पार न जावे वार रहावे।
साध संत सँग प्रीति न लावे ॥ २ ॥
जगत भोग में रहे अधीना।
रोग सोग दुख सुक्ख मलीना ॥ ३ ॥
ज्ञान बैराग भक्ति नहिं धारी।
मोह राग हंकार पचा री ॥ ४ ॥
क्वारी[2] सुरत करे व्यभिचारा।
मन इंद्री सँग फिरती लारा[3] ॥ ५ ॥

१—प्रान्तिक भाषा में 'कवार' कहते हैं। क=भवजल+वार=इसी ओर। इसी बात को आगे ज़ाहिर किया है। २—अनब्याही। ३—साथ साथ।

काम क्रोध में भरमत डोलै।
जड़ चेतन की गाँठ न खोलै॥ ६॥
सतसँग करै न सतगुरु सेवै।
भाव भक्ति में मन नहिं देवै॥ ७॥
काल चक्र का पड़ा हिंडोला।
ऊँच नीच खावै झकझोला॥ ८॥
जन्म अनेक झूलते बीते।
जम झोटन[1] के सहे फ़ज़ीते[2]॥ ६॥
धर्मराय नित करै ख़ुवारी[3]।
नरकन में भोगे दुख भारी॥ १०॥
कर्म भार सिर ऊपर लादा[4]।
घेरे फिरै काल का प्यादा॥ ११॥
प्यादों के सँग इज़्ज़त खोती।
सत्तनाम कुल की थी गोती[5]॥ १२॥
गोत लजाया जाति गँवाई।
तौ भी मन में लाज न आई॥ १३॥
लाज करी तो मन के कुल की।
सुधि भूली सब अपने कुल की॥ १४॥
कुल इसका है सबसे ऊँचा।
संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा॥ १५॥

१—झोंकों, पेंगों। २—दुर्दशा, दुर्गति। ३—अनादर, कुगति।
४—चढ़ाया। ५—वंश वाली।

शेष महेश रहे सब नीचे ।
ब्रह्म और पारब्रह्म रहे बीचे[१] ॥ १६ ॥
सत्तपुरुष को लज्जा आई ।
संत औतार धरा जग माहीं ॥ १७ ॥
संत रूप धर जिव उपदेशें ।
बानी नाव[२] बना जिव खेवें[३] ॥ १८ ॥
सुरत अजान न बूझे बानी ।
फिर फिर डूबे कहा न मानी ॥ १९ ॥
भौसागर में ग़ोते खावे ।
मनमत ठान चौरासी धावे ॥ २० ॥
संत बतावें सत की रीत ।
यह नहिं माने कुछ परतीत ॥ २१ ॥
बिन परतीत रीति[४] नहिं पावे ।
जन्म जन्म चौरासी जावे ॥ २२ ॥
चौरासी से संत बचावें ।
उनका बचन न मन ठहरावे ॥ २३ ॥
मन के रंग फिरे बहुरंगी ।
ढंग न सीखे बड़ी कुढंगी ॥ २४ ॥
साध संत का ढँग नहिं सीखे ।
भोगे दुख रस चाखे फीके[५] ॥ २५ ॥

१—मध्य में । २—बचन की नाव । ३—पार लगाते हैं । ४—तरीक़ा ।
५—नीरस ।

रस फीके संसार के सब ही।
अंतर का रस अगम न लेही ॥ २६ ॥
स्वाँति बदरिया अंतर बरसे।
सुरत लगावे तौ मन सरसे[१] ॥ २७ ॥
शरद चंद्रमा[२] अंतर दरसे।
सुन की धुन्न जाय जब परसे ॥ २८ ॥
मोती चुने मानसरवर के।
भोगे भोग मराल नगर के ॥ २९ ॥
जो संतन के बचन सँभाले।
जाय त्रिबेनी होय निहाले ॥ ३० ॥

दोहा

होय निहाल सुन्दर[३] लखे, सुने किंगरी नाद।
नाद सुनत होवत मगन, फिर खोजत पद आद ॥ ३१ ॥
संत दया सतगुरु मया[४], पाया आदि अनाद।
गति मति कहते ना बने, सुरत भई बिस्माद[५] ॥ ३२ ॥

कातिक मास पाँचवाँ

कातिक[६] मास पाँचवाँ चला।
सुरत शब्द गुरु चेला मिला ॥ १ ॥

१—प्रसन्न हो। २—शरत् पूनो का चाँद। ३—सुन्न का दर।
४—कृपा, मुहब्बत। ५—अचम्भे में। ६—का = काया + तक = कातक।
प्रान्तिक भाषा में 'कातक' कहते हैं। इसी बात को
दूसरी कड़ी में ज़ाहिर करते हैं।

तक काया कँवलन बिधि भाखी ।
कँवल दुवादस[1] काया राखी ॥ २ ॥
प्रथमे कँवल गनेश बिलासा ।
कँवल दूसरे ब्रह्मा बासा ॥ ३ ॥
कँवल तीसरे बिष्णु प्रकासा ।
चतुर्थ कँवल शिव शक्ति निवासा ॥ ४ ॥
आतम कँवल पाँचवाँ होई ।
छठा कँवल परमातम सोई ॥ ५ ॥
कँवल सातवें काल बसेरा ।
जोति निरंजन का वहँ डेरा[2] ॥ ६ ॥
कँवल आठवाँ त्रिकुटी माहीं ।
सूरज ब्रह्म बसे तेहि ठाहीं ॥ ७ ॥
नवाँ कँवल है दसवें द्वारे ।
पारब्रह्म जहँ बसे निरारे[3] ॥ ८ ॥
महासुन्न में कँवल अचिंता ।
कँवल दसम का वहँ बरतंता[4] ॥ ९ ॥
कँवल इकादश भँवरगुफा पर ।
द्वादस कँवल सत्तपद अंतर ॥ १० ॥
षट चक्कर यह पिंड सँवारा ।
तीन चक्र ब्रह्मंड अधारा ॥ ११ ॥

१—द्वादश, बारह । २—मुक़ाम । ३—अलग । ४—वृत्तान्त, हाल ।

तीन कँवल जो ऊपर रहे ।
संत बिना कोइ बरन न कहे ॥ १२ ॥
षष्ठ कँवल तक जोगी आसन ।
नवें कँवल जोगेश्वर बासन[1] ॥ १३ ॥
पिंड ब्रह्मंड का इतना लेखा ।
जोगी ज्ञानी यहँ तक देखा ॥ १४ ॥
आगे का कोइ भेद न जाने ।
तीन कँवल सो संत बखाने ॥ १५ ॥
कोइ छः तक कोइ नौ तक भाखे ।
सर्व मते इन भीतर थाके[2] ॥ १६ ॥
बड़ा संतमत सबसे आगे ।
संत कृपा से कोइ कोइ जागे ॥ १७ ॥
जो पहुँचे द्वादस अस्थाना ।
सोई कहिये संत सुजाना ॥ १८ ॥
संतन का मत सबसे ऊँचा ।
जो परखे सोई धुर[3] पहुँचा ॥ १९ ॥
पहुँचे की क्या करूँ बड़ाई ।
सब मत उसके नीचे आई ॥ २० ॥
जो मन में परतीत न देखो ।
तो कबीर गुरु[4] बानी पेखो ॥ २१ ॥

१—निवास, ठहराव । २—रह गये । ३—चोटी पर । ४—नानक साहब ।

तुलसी साहेब का मत जोई ।
पलटू जगजीवन कहें सोई ॥ २२ ॥
इन संतन का देउँ प्रमाना ।
इनकी बानी साख[1] बखाना ॥ २३ ॥
जोग ज्ञान मत इनहूँ भाखा ।
पुनि संतन मत ऊँचा राखा ॥ २४ ॥
जोगी और बेदान्ती भाई ।
संतन मत परतीत न लाई ॥ २५ ॥
बेद कतेब[2] न पहुँचे तहँ ही ।
थके बीच में रस्ते माहीं ॥ २६ ॥
बार बार कह कर समझाऊँ ।
संतन का मत ऊँचा गाऊँ ॥ २७ ॥
जो परतीत न लावे याकी[3] ।
जानो काल ग्रसी बुधि वाकी[4] ॥ २८ ॥
वे कहा[5] जानें मत संतन को ।
एक मिलावें काँच रतन को ॥ २९ ॥
उनसे यह मत खोल न कहिये ।
सैन[6] जनाय मौन[7] गहि रहिये ॥ ३० ॥

दोहा

संतमता सब से बड़ा, यह निश्चय कर जान ।
सूफ़ी और बेदान्ती, दोनों नीचे मान ॥ ३१ ॥

१—गवाही । २—क़ुरान । ३—इसकी । ४—उसकी । ५—क्या ।
६—इशारे से । ७—चुप ।

संत दिवाली नित करें, सत्तलोक के माहिं।
और मते सब काल के, योंही[1] धूल उड़ाहिं ॥३२॥

अगहन मास छठा

आया मास अगहन[2] अब छठा।
अघ[3] की हानि हुई मल घटा ॥ १ ॥
मन हुआ निर्मल चित हुआ निश्चल।
काम क्रोध गये इंद्री निष्फल ॥ २ ॥
धरन छोड़ सुत चढ़ी अकाशा।
शब्द पाय आई महाकाशा ॥ ३ ॥
शब्द संग नित करे बिलासा।
देखे अचरज बिमल तमाशा ॥ ४ ॥
छोड़ा यह घर पकड़ा वह घर।
खोया जग को पाया सतगुर ॥ ५ ॥
जब से सतगुरु सरना लीन्हा।
सत्तनाम धुन घट में चीन्हा ॥ ६ ॥
धन सतगुरु धन उनकी संगति।
जिन प्रताप पाई मैं यह गति ॥ ७ ॥

१—व्यर्थ। २—देशी बोली में अघहन कहते हैं जिसका अर्थ इसी कड़ी में किया गया है। अघ=पाप+हन=हानि। ३—पाप।

कर सतसंग काज किया पूरा ।
पाप नसे[1] मानो खाया धतूरा[2] ॥ ८ ॥
पाप पुन्न दोउ गये नसाई ।
भक्ति भाव जिव हृदे समाई ॥ ९ ॥
अब यह सतसँग गुरु का पावे ।
हिल मिल चरन माहिं लिपटावे ॥ १० ॥
चरन सेव चरनामृत पीवे ।
गुरु परशादी खा नित जीवे ॥ ११ ॥
दर्शन करे बचन पुनि सुने ।
फिर सुन सुन नित मन में गुने ॥ १२ ॥
गुन गुन छाँट लेय उन सारा ।
सार धार तिस करे अहारा ॥ १३ ॥
कर अहार पुष्ट[3] हुआ भाई ।
जग भौ[4] लाज अब गई नसाई ॥ १४ ॥
गुरुभक्ती जानो इश्क़ गुरू का ।
मन में धसा सुरत में पक्का ॥ १५ ॥
पक पक घट में गाड़ा थाना[5] ।
थान गाड़ अब हुआ दिवाना ॥ १६ ॥
गुरु का रूप लगे अस प्यारा ।
कामिन पति मीना जलधारा ॥ १७ ॥

१—नाश हुए। २—ज़हरीला फल। ३—दृढ़, मज़बूत। ४—भय।
५—ठेका।

सतसँग करना ऐसा चहिये ।
　　सतसँग का फल ये ही सहि[1] है ॥ १८ ॥
सतसँग सतसँग मुख से गावें ।
　　करें नित्त फल कछू न पावें ॥ १९ ॥
सतसँग महिमा है अति भारी ।
　　पर कोइ जीव मिले अधिकारी ॥ २० ॥
अधिकारी बिन प्रगट नहीं फल ।
　　सतसँग तो कीन्हा सब चल चल ॥ २१ ॥
चल चल आये सतगुरु आगे ।
　　बचन न पकड़ा, दरस न लागे ॥ २२ ॥
सतसँग और सतगुरु क्या करें ।
　　सो जिव भौजल कैसे तरें ॥ २३ ॥
पत्थर पानी लेखा[2] बरता ।
　　जल मिसरी सम[3] मेल न करता ॥ २४ ॥
बाहर का सँग जब अस होई ।
　　सतगुरु सम प्रीतम नहिं कोई ॥ २५ ॥
तब अंतर का सतसँग धारे ।
　　सुरत चढ़े असमान पुकारे ॥ २६ ॥
बोले अर्श और गरजे गगना ।
　　बैठा कुर्सी मन हुआ मगना ॥ २७ ॥

१—सही, ठीक । २—पानी में पत्थर के समान । ३—पानी में मिस्री के समान ।

लामुक़ाम पाया लाहूत ।
छोड़ा नासूत मलकूत जबरूत ॥ २८ ॥
हाहूत का जाय खोला द्वारा ।
हूतलहूत और हूत सँभारा ॥ २९ ॥
हूत मुक़ाम फ़क़ीर अख़ीरी ।
रूह सुरत जहँ देती फेरी ॥ ३० ॥

दोहा

अल्लाहू त्रिकुटी लखा, जाय लखा हा सुन्न[1] ।
शब्द अनाहू पाइया, भँवरगुफा की धुन्न ॥ ३१ ॥
हक़्क़ हक़्क़ सतनाम धुन, पाई चढ़ सचखंड ।
संत फ़क़ीर बोली जुगल[2], पद दोउ एक अखंड ॥ ३२ ॥

पूस मास सातवाँ

पूस महीना जाड़ा भारी ।
कर्म भर्म ज्यों फूस जला री ॥ १ ॥
जल जल ढेर हुआ जब भारी ।
प्रेम पवन से तुरत उड़ा री ॥ २ ॥
मोह सीत[3] ने चित को घेरा ।
सूर बिवेक[4] किया घट फेरा ॥ ३ ॥

१—सुन्न में । २—दो । ३—शीत यानी सरदी । ४—विचार ।

फेरा करत भक्ति गुरु जागी ।
सुरत भई अनहद अनुरागी ॥ ४ ॥
राग भोग सब दूर निकारा ।
बिमल बिरह बैराग सँभारा ॥ ५ ॥
सहज जोग गुरु दिया बताई ।
सुरत शब्द मारग लखवाई ॥ ६ ॥
झीनी सुरत रूप नहिं दरसे ।
परसे शब्द जाय मन घर से ॥ ७ ॥
सुन्न शिखर जाय रूप दिखाना ।
गगन मँडल[1] के पार ठिकाना ॥ ८ ॥
रूप सुरत का दरसा ऐसा ।
बिन अनुभव क्योंकर कहूँ कैसा ॥ ९ ॥
अनुभव से वह जाना जाई ।
शब्द बिना अनुभव[2] नहिं पाई ॥ १० ॥
सुरत शब्द दोउ अनुभवरूपा ।
तू तो पड़ा भर्म के कूपा[3] ॥ ११ ॥
करनी कर कर सुरत चढ़ाओ ।
शब्द मिले अनुभव घर पाओ ॥ १२ ॥
बिना शब्द अनुभव नहिं होई ।
अनुभव बिन समझे नहिं कोई ॥ १३ ॥

१—त्रिकुटी । २—प्रत्यक्ष ज्ञान । ३—कुएँ में ।

सुरत शब्द दोउ रूप अमोला।
सुन्न चढ़े जिन[1] निज[2] कर तोला ॥ १४ ॥
ताते करनी गुरू बताई।
सतगुरु दया लेव सँग भाई ॥ १५ ॥
मेहर दया करनी करवाई।
करनी कर बहु मेहर बढ़ाई ॥ १६ ॥
करनी मेहर संग दोउ चलते।
तब फल पूरा चढ़ चढ़ लेते ॥ १७ ॥
अस संजोग मौज से होई।
मौज उपाव नहीं अब कोई ॥ १८ ॥
पच पच थक थक सब ही हारे।
मौज बिना क्या करें बिचारे ॥ १९ ॥
इक उपाव कुछ मन में आया।
पर थोड़ा सा चित्त समाया ॥ २० ॥
जब जब संत जगत में आवें।
ढूँढ़ भाल उनके ढिंग जावें ॥ २१ ॥
जाय करें नित सेवा दर्शन।
हाज़िर रहें गिरें उन चरनन ॥ २२ ॥
नित्त हाज़िरी उनकी करते।
मन से दीन लीन होय रहते ॥ २३ ॥

१—जिन्होंने। २—ख़ास।

पर यह बात बड़ी अति झीनी[1] ।
संत करावें निंदा अपनी ॥ २४ ॥
निंदा चौकीदार बिठाई ।
कोई जीव धसने[2] नहिं पाई ॥ २५ ॥
बिरला जीव होय अनुरागी ।
निंदा से वह छिन छिन भागी[3] ॥ २६ ॥
निंदा सुन सुन चित नहिं धारे ।
संतन की यह जुगत बिचारे ॥ २७ ॥
जस जाने तस मन समझावे ।
संतन सन्मुख ज्यों त्यों[4] आवे ॥ २८ ॥
ऐसी दृढ़ता जाकर[5] होई ।
तो फिर संत मौज करें सोई ॥ २९ ॥
संत मौज फिर कोइ न टारे ।
ईश्वर परमेश्वर सब हारे ॥ ३० ॥

सोरठा

संत डारिया बीज, घट[6] धरती[7] जेहि जीव के ।
को अस समरथ होय, जो जारे[8] उस बीज को ॥ ३१ ॥

१—सूक्ष्म । २—घुसने । ३—अलग रहे । ४—जैसे तैसे । ५—जिसकी
६—घटरूपी । ७—भूमि में । ८—जला दे ।

कोई काल[1] के माहि, वह बीजा अंकुर गहे[2] ।
जब जब आवें संत, अंकूरी[3] उन सँग रहे ॥ ३२ ॥
वह सींचें निज पौद[4], होय भक्त वह पेड़ सम[5] ।
फल लागें अतिसे सरस[6], भोगे सतगुरु मेहर से ॥ ३३ ॥
कारज कीन्हा पूर, संत धूर[7] हिरदे धरी ।
सूर[8] हुआ मन चूर, नूर तूर[9] घट में प्रगट ॥ ३४ ॥

माघ मास आठवाँ

माह महीना अति रस भरा[10] ।
काया बन मन गुलशन[11] हरा ॥ १ ॥
चमन चमन फुलवारी खिली ।
बाग़ बाग़ नहरें अब चलीं ॥ २ ॥
गुरु भक्ती और पौद प्रेम की ।
क्यारी धीरज दया नेम की ॥ ३ ॥
अस अस लीला देखी घट में ।
मन माली सींचे छिन छिन में ॥ ४ ॥
नैनन आगे पँचरँग फूल ।
पल पल निरखत तिल तिल भूल ॥ ५ ॥

१—कुछ समय । २—कुल्ला पकड़े । ३—अंकुर वाला । ४—अपने पेड़ को । ५—वृक्ष के समान । ६—अतिशय (अत्यन्त) रसीले । ७—चरणरज । ८—बहादुर । ९—प्रकाश और शब्द । १०—रसीला । ११—फुलवारी ।

तत्त पिर्थवी भिन[1] होय दरसा ।
ऋतु बसंत फूली मन सरसा[2] ॥ ६ ॥
झलक जोति और उमँड घटा की ।
रिमझिम बरसे बूँद अमी की ॥ ७ ॥
सहस धार दल सहस कँवल में ।
उठें तरंगें, फैलें मन में ॥ ८ ॥
मन चढ़ चला महल अपने में ।
उलटा पहुँचा गगनमँडल में ॥ ९ ॥
गगनमँडल लीला इक न्यारी ।
शब्द गुरू की खिल रही क्यारी ॥ १० ॥
मूल नाम और शाखा धुन की ।
फूली जहँ फुलवार त्रिगुन की ॥ ११ ॥
यह लीला घट माहिं निहारी ।
महिमा नाम कहा कहूँ भारी ॥ १२ ॥
सरगुन नाम और सरगुन रूपा[3] ।
वहँ तक देखा मन का सूता[4] ॥ १३ ॥
अब आगे सूरत चढ़ चाली ।
पैठी जाय सुषमना नाली ॥ १४ ॥
सुषमन में निज मन दरसाना ।
निज मन आगे निरगुन जाना ॥ १५ ॥

१—अलग । २—मन खिल गया । ३—जहाँ तक सगुण नाम और रूप हैं ।
४—रिश्ता ।

यह निरगुन वह सरगुन देखा।
दोनों घाट भिन्न कर[1] पेखा ॥ १६ ॥
अब आगे पाँजी[2] इक गाऊँ।
गधंर्प[3] नाल के मध्य चढ़ाऊँ ॥ १७ ॥
नाल भुवंगन[3] बायें त्यागी।
दहने नाल धुंधरी[3] जागी ॥ १८ ॥
जागत नाल, काल मुख मूँदा[4]।
घाट[5] अठासी नाका[6] रूँधा[7] ॥ १९ ॥
सिंघपोल[8] ढिग झँझरी निरखी।
सेत पदमनी जाली परखी ॥ २० ॥
सुन्न ताल जहँ धुन भंडारा।
छजली[9] कजली[9] दीप निहारा ॥ २१ ॥
सागर नागर जाकर झाँका।
कुरम शेष[10] अक्षर जहँ थाका ॥ २२ ॥
जहाँ सुरंगी दीप झरोखा।
सुरत अड़ी जाय द्वारा रोका ॥ २३ ॥
सँदली[11] चँदली[12] चौकी डारी।
सुरत मंडली पाट खुला री ॥ २४ ॥

१—अलग अलग करके। २— रास्ता। ३—एक नाली का नाम। ४—बंद हुआ। ५—चढ़ाव उतार का पहाड़ी मार्ग या नदी में उतरने का स्थान। ६—द्वार। ७—बन्द हुआ। ८—सिंहद्वार। ९—द्वीप का नाम। १०—कूर्म और शेष यानी ब्रह्म और निरंजन। ११—चन्दन की। १२—चाँदी की।

कुंडल दीप छबीली रमना[1] ।
दामिन दीप सोत का झरना ॥ २५ ॥
नीलम कुंड रतन नल पाल ।
महाकाल रचिया जहँ जाल ॥ २६ ॥
कंकन घाटी सुरत झुमाई ।
जाल काल सब दूर पड़ाई ॥ २७ ॥
सेत धरनि जहँ लाल अकासा ।
हंस छावनी देख बिलासा ॥ २८ ॥
यह पाँजी निरखी निज धामी ।
बिमल दीप बैठे जहँ स्वामी ॥ २९ ॥
पोहप नगर जहँ अमृत धाम ।
हंस बसें पावें बिश्राम ॥ ३० ॥

दोहा

बैठक स्वामी अद्भुती, राधा निरखनिहार ।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार ॥ ३१ ॥
गुप्त रूप जहँ धारिया, राधास्वामी नाम ।
बिना मेहर नहिं पावई, जहाँ कोई बिश्राम ॥ ३२ ॥

१—रमणीय । अगम प्रकाश में 'चलना' अर्थ लिखा है ।

फागुन मास नवाँ

फागुन मास रँगीला आया।
धूम धाम जग में फलाया ॥ १ ॥
घर घर बाजे गाजे लाया।
झाँझ मजीरा दफ़्फ़ बजाया ॥ २ ॥
यह नरदेही फागुन मास।
सुरत सखी आई करन बिलास ॥ ३ ॥
मन इंद्री सँग खेली फाग।
उत से[1] सोई इत[2] को जाग ॥ ४ ॥
जग में आ संजोग मिलाया।
लोक लाज कुल चाल चलाया ॥ ५ ॥
भोग रोग परिवार बँधानी।
फगुआ खेली होली ठानी ॥ ६ ॥
धूल उड़ाई छानी ख़ाक।
पाप पुन्य सँग हुई नापाक[3] ॥ ७ ॥
इच्छा गुन सँग मैली भई।
रंग तरंग बासना गही ॥ ८ ॥
फल पाया भुगती चौरासी।
काल देस जहँ बहुत तिरासी[4] ॥ ९ ॥

१—उधर से। २—इधर। ३—अपवित्र। ४—त्रास, डर।

आस त्रास माहिं अति फँसी ।
देख देख तिस[1] माया हँसी ॥ १० ॥
हँस हँस माया जाल बिछाया ।
निकसन की कोई राह न पाया ॥ ११ ॥
तब संतन चित दया समाई ।
सत्तलोक से पुनि चलि आई ॥ १२ ॥
ज्यों त्यों[2] चौरासी से काढ़ा[3] ।
नरदेही में फिर ले डाला[4] ॥ १३ ॥
चरन प्रताप सरन में आई ।
तब सतगुरु अतिकर समझाई ॥ १४ ॥
तुझको फिर कर फागुन आया ।
सँभल खेलियो हम समझाया ॥ १५ ॥
सुरत कहे सुनो संत सुआमी[5] ।
कस खेलूँ कहो अंतरजामी ॥ १६ ॥
तब सतगुरु इक भेद लखाया ।
सुरत जोग मारग बतलाया ॥ १७ ॥
सुरत चली अब खेलन होली ।
कर सिंगार बैठ धुन डोली[6] ॥ १८ ॥
बिरह अनुराग रंग घट लीन्हा ।
मन को सँग ले तन तज दीन्हा ॥ १९ ॥

१—उसे । २—जैसे तैसे । ३—निकाला । ४—ला रक्खा । ५—स्वामी ।
६—पालकी में ।

शब्द गुरू से पहले खेली ।
गगन चौक चढ़ त्रिकुटी ले ली ॥ २० ॥
त्रिकुटी माहिं बहुत दिन खेली ।
ओंकार सँग कीन्हा मेली ॥ २१ ॥
लाल गुलाल रूप सुत पाया ।
तब सतगुरु सुन[1] शब्द सुनाया ॥ २२ ॥
आगे बढ़ी चढ़ी ऊँचे को ।
उलट न देखे अब नीचे को ॥ २३ ॥
चल चल पहुँची सत्तलोक में ।
फगुआ माँगे सत्तनाम[2] से ॥ २४ ॥
गई जहाँ से फिर वहिं आई ।
पद में अपने आन[3] समाई ॥ २५ ॥
रंग रंग नित खेलत होली ।
जो होना था सो अब होली[4] ॥ २६ ॥
छोड़ा पिंडा छोड़ा अंडा ।
खंड खंड कीन्हा ब्रह्मंडा ॥ २७ ॥
निज घर अपने जाकर बसी ।
सत्त शब्द धुन बीना रसी ॥ २८ ॥
हंस रूप अब धारा असली ।
देहरूप धर बहुतक फस ली[5] ॥ २९ ॥

१—सुन्न का । २—सत्यपुरुष । ३—आकर । ४—हो लिया । ५—फँस लिया ।

काल निरंजन तोड़ी पसली ।
हो गइ सत्तनाम गल हँसली[1] ॥ ३० ॥

दोहा

जब आवे सुत देह में, देह रूप ले ठान ।
जब चढ़ उलटे सुन्न को, हंस रूप पहिचान ॥ ३१ ॥
सुरत रूप अति अचरजी, बर्णन किया न जाय ।
देह रूप मिथ्या[2] तजा, सत्त रूप हो जाय ॥ ३२ ॥

चैत मास दसवाँ

चैत[1] महीना आया चेत[3] ।
बाँधा सतगुरु भौ में सेत[4] ॥ १ ॥
जीव चिताये जो थे वार[5] ।
भौसागर से कीन्हे पार ॥ २ ॥
भौसागर अति गहिर गँभीर ।
सतगुरु पूरे बाँधी धीर[6] ॥ ३ ॥
तन मन धन की लई जगात[7] ।
शिष्य उतारे गहि कर हाथ ॥ ४ ॥

१—गले के गहने का नाम । २—झूठा । ३—प्रान्तिक भाषा में चैत को 'चेत' कहते हैं । आगे चेत लिखा है । ४—पुल । ५—इसी ओर । ६—धीरज । ७—ज़कात, महसूल ।

सुरत बहे[1] थी नौ[2] की धार।
ताहि चढ़ाया गगन मँझार ॥ ५ ॥
गगन जाय धुन शब्द सिहारी[3]।
देखा रूप जोति अति भारी ॥ ६ ॥
जोति निहारे देखे तारा।
बंकनाल का खोला द्वारा ॥ ७ ॥
संख सुना और धुन ओंकारा।
शब्दगुरू का घाट निहारा ॥ ८ ॥
छोड़ा मन अब चेती सूरत।
त्रिकुटी चढ़ निरखी गुरुमूरत ॥ ९ ॥
गुरु चेला मिल आगे चाली।
मानसरोवर शब्द सँभाली ॥ १० ॥
हंसन साथ करी जाय यारी।
सुरत सखी हुइ सबकी प्यारी ॥ ११ ॥
सुन्न शहर में कुछ दिन बसी।
फिर चढ़ ऊपर आगे धसी ॥ १२ ॥
महासुन्न इक नगर अपारा।
कहूँ कहा अचरज बिस्तारा ॥ १३ ॥
धुन जहँ चार गुप्त अति झीनी।
संत बिना कोइ परख न चीन्ही ॥ १४ ॥

१—बहती। २—नौ द्वार। ३—तलाश किया।

अचिंत दीप ता दायें रहता ।
सहज दीप दस पालँग बसता ॥ १५ ॥
महिमा दीप कहा कहूँ भारी ।
संतोष दीप तहँ बायें सँवारी ॥ १६ ॥
तहँ इक झिरना अजब रचानी ।
सुरत निरत से गही निशानी ॥ १७ ॥
देख निशान मध्य को धाई ।
भँवरगुफा की गली समाई ॥ १८ ॥
तिस आगे मैदान दिखाना ।
सत्तलोक जहँ पुरुष पुराना ॥ १९ ॥
निज पद पाय पुरुष से मिली ।
देख गली आगे फिर चली ॥ २० ॥
अलख लोक में किया बसेरा[१] ।
अगम लोक जाय डाला डेरा ॥ २१ ॥
शोभा वहँ की क्या कह गाऊँ ।
अरब खरब शशि सूर लजाऊँ ॥ २२ ॥
अब अनाम जहँ रूप न नामा ।
संत करें जा वहँ बिश्रामा ॥ २३ ॥
सुरत चेत पाया बिसमाद ।
नहिं जहँ बानी नहिं जहँ नाद ॥ २४ ॥

१—निवास ।

आदि न अंत अनंत अपार ।
संतन का वह निज दरबार ॥ २५ ॥
संत सभी वा[1] घर से आवें ।
काल देश से जीव चितावें ॥ २६ ॥
जो चेते तिस ले पहुँचावें ।
सुरत शब्द मारग बतलावें ॥ २७ ॥
जीव चेत जो माने कहना ।
ताको[2] फिर दुख सुख नहिं सहना ॥ २८ ॥
मानो बचन करो कुछ करनी ।
सुरत निरत की धारो रहनी ॥ २९ ॥
सतसँग करो गहो गुरु रंग ।
सुरत चढ़ाओ गगन उमंग ॥ ३० ॥

दोहा

सतगुरु संत दया करी, भेद बताया गूढ़[3] ।
अब सुन जीव न चेतई, तौ जानो अति मूढ़ ॥ ३१ ॥
भौसागर धारा अगम, खेवटिया गुरु पूर ।
नाव बनाई शब्द की, चढ़ बैठे कोइ सूर[4] ॥ ३२ ॥

१—उस । २—उसको । ३— गुप्त । ४—बहादुर ।

बैसाख मास ग्यारहवाँ

बैसाख[1] महीना सिर पर आया ।
साख[2] गई जिव हुआ पराया ॥ १ ॥
काल पच्छ सब जीवन धारी ।
पुरुष दयाल की सुद्धि बिसारी[3] ॥ २ ॥
सुरत देश अपना बिसराना ।
काल देश इन अपना जाना ॥ ३ ॥
काल रची तिरलोकी सारी ।
दयाल रचा सतलोक सँभारी ॥ ४ ॥
तीन लोक काल का थाना[4] ।
चौथा लोक दयाल अस्थाना ॥ ५ ॥
काल दिया जीवन को धोका ।
चौथे पद से सबको रोका ॥ ६ ॥
दयाल पुरुष का भेद न दीन्हा ।
कर्मकांड में जीव अधीना ॥ ७ ॥
अपनी पूजा सब बिधि गाई ।
जीव चले चौरासी भाई ॥ ८ ॥
त्रैगुन रसरी[5] जीव बँधाना ।
ब्रह्मा बिष्णु महेश पुजाना ॥ ९ ॥

१—प्रान्तिक भाषा में 'बेसाख' बोलते हैं । बे = बिना + साख = ईमानदारी का ।
२—प्रतिष्ठा, मर्यादा । ३—भुला दी । ४—स्थान ।
५—रस्सी, डोरी ।

देवी देवा पत्थर पानी ।
पाप पुन्य में जिव उरझानी[1] ॥ १० ॥
काल धरे जग दस औतारा ।
कला[2] दिखाय जीव धर मारा ॥ ११ ॥
आपहि राम आप हुआ रावन ।
आपहि कंस आप जसुनंदन[3] ॥ १२ ॥
आपहि बलि और आपहि बावन ।
आपहि कच्छ मच्छ धर[4] धारन ॥ १३ ॥
परसराम और नरसिंह देव ।
प्रहलाद भक्त होय बाँधी टेक ॥ १४ ॥
खंभ फाड़ बाहर होय निकला ।
रच्छक कला[5] दिखाई सकला[6] ॥ १५ ॥
चाँद सूर्य और गौरि गनेशा ।
पुजवाये और राहु होय ग्रसा ॥ १६ ॥
अस अस कला[7] अनंत असंखा ।
कहँ लग बरनूँ भेद सबन का ॥ १७ ॥
काल लिया सब लोकन घेरी ।
दयाल पुरुष कोइ मर्म न हेरी[8] ॥ १८ ॥
काल कला[9] परचंड[10] दिखाई ।
जीव चले सब उसकी राही ॥ १९ ॥

१—फँसे । २—लीला । ३—यशोदानंदन यानी कृष्ण । ४—शरीर ।
५—रक्षा करने की शक्ति । ६—सारी । ७—लीला । ८—देखा ।
९—सामर्थ्य । १०—प्रचंड, बड़ी ।

संतन का कोइ भेद न जाना ।
संतमता रहा गुप्त छिपाना ॥ २० ॥
संतमता खुल कर अब गाऊँ ।
देकर कान सुनो समझाऊँ ॥ २१ ॥
नहिं पताल नहिं मर्त्य अकाशा ।
पाँच तत्त्व नहिं तिरगुन स्वाँसा ॥ २२ ॥
नहिं शिव शक्ति न पुरुष प्रकिरती ।
जोति निरंजन नहिं परकिरती ॥ २३ ॥
तारामंडल सूर न चंदा ।
पिंड ब्रह्मंड रचा नहिं अंडा ॥ २४ ॥
कुरम न शेष नहीं ओंकारा ।
माया ब्रह्म न ईश्वर धारा ॥ २५ ॥
आतम परमातम नहिं दोई[1] ।
सुन्न महासुन रचा न सोई ॥ २६ ॥
अल्ला ख़ुदा रसूल न होते ।
पीर मुरीद[2] न दादा पोते ॥ २७ ॥
बेद पुरान क़ुरान न कहते ।
मसजिद काबा बाँग[3] न देते ॥ २८ ॥
नहिं त्रिकाल संध्या न निमाज़ा ।
तीरथ बर्त नेम नहिं रोज़ा ॥ २९ ॥

१—दोनों । २—गुरु, शिष्य । ३—अज़ान ।

कर्मी शरई थे नहिं भाई।
जोगी ज्ञानी खोज न पाई ॥ ३० ॥

दोहा

तपसी[1] हबसी[2] ज़ाहिदा[3] नहिं आबिद[4] माबूद[5]।
क़ुतब पैग़म्बर औलिया कोई न थे मौजूद ॥ ३१ ॥
स्वर्ग नरक दोज़ख़[6] इरम[7] अर्ज़[8] समा[9] नहिं होय।
मुसलमान हिंदू नहीं जैन न ईसा कोय ॥ ३२ ॥

जेठ मास बारहवाँ

जेठ महीना जेठा भारी।
जीवन हिरदे तपन करारी[10] ॥ १ ॥
संत दयाल जीव हितकारी।
भेद कहें अब निज कर भारी ॥ २ ॥
नहिं ख़ालिक़[11] मख़लूक़[12] न ख़िलक़त[13]।
कर्ता कारन काज न दिक़्क़त ॥ ३ ॥
द्रष्टा दृष्ट[14] नहीं कुछ दरसत।
बाच[15] लच्छ[16] नहिं पद न पदारथ ॥ ४ ॥

१—तप करने वाला। २—प्राणों को रोक कर साधन करने वाला। ३—यती। ४—भक्त। ५—भगवंत। ६—नरक। ७—स्वर्ग। ८—पृथ्वी। ९—आकाश। १०—तेज़, सख़्त। ११—पैदा करने वाला। १२—जो पैदा की गई हो। १३—सृष्टि। १४—दृश्य। १५—वाच्य यानी ज़ाहिर। १६—लक्ष्य यानी पोशीदा।

ज़ात[1] सिफ़ात[2] न अव्वल आख़िर ।
गुप्त न परगट बातिन[3] ज़ाहिर ॥ ५ ॥
राम रहीम करीम न केशो[4] ।
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो[5] ॥ ६ ॥
सिम्रिति शास्त्र न गीता भागवत ।
कथा पुरान न वक्ता कीरत[6] ॥ ७ ॥
सेवक सेव[7] न दास न स्वामी ।
नहिं सतनाम न नाम अनामी[8] ॥ ८ ॥
कहँ लग कहूँ नहीं था कोई ।
चार लोक रचना नहिं होई ॥ ९ ॥
जो कुछ था सो अब कह भाखूँ ।
उन्मुनि सुन बिसमाधी[9] राखूँ ॥ १० ॥
हैरत[10] हैरत हैरत होई ।
हैरत रूप धरा इक सोई ॥ ११ ॥
उन्मुनि रूप सदा वह रहता ।
उन्मुनि दशा सदा वहि बरता ॥ १२ ॥
वाकी गति कोई नहिं जाने ।
वह अपनी गति आप बखाने ॥ १३ ॥

१—गुणी । २—गुण । ३—गुप्त । ४—केशव । ५—वह । ६—कीर्तन । ७—सेव्य, सेवा करने योग्य । ८—अलख लोक के नीचे और सत्तलोक के ऊपर का लोक । ९—आश्चर्यकारी समाधी । १०—आश्चर्य ।

संत रूप होय जग में आया ।
अपना भेद आप उन गाया ॥ १४ ॥
आपहि आप न दूसर कोई ।
उठी मौज परघट सत सोई ॥ १५ ॥
तीन देश मौज ने रचे ।
अगम अलख सतनाम होय हँसे[1] ॥ १६ ॥
धुन धधकार उठी इक भारी ।
सात सुरत रचना उन धारी ॥ १७ ॥
साँचा[2] बन[3] जामन[4] पुनि दीन्हा ।
सुरत परस्पर रचना कीन्हा ॥ १८ ॥
सोहं सुरत आदि यों बोली ।
सोहं सोहं संपट[5] खोली ॥ १६ ॥
सहज[6] धीर[6] जामन तहँ दीन्हा ।
ओं सोहं गर्भ धुन चीन्हा ॥ २० ॥
मूल सुरत जहँ पर प्रगटाई ।
मूल द्वार पर बैठी आई ॥ २१ ॥
शांत सुरत जहँ कीन्ह बिलासा ।
हंस रचे कर दीप निवासा ॥ २२ ॥

१—बिकसित हुए, ज़ाहिर हुए। २—फ़रमा। ३—बनकर।
४—जमावन, जैसे दूध जमाने के लिये दही आदि
होता है। ५—संपुट। ६—दो
सुरतों के नाम।

दीपन शोभा क्या कहुँ भारी ।
हंस कुतूहल[1] करें अपारी ॥ २३ ॥
पुरुष दरस और लीला न्यारी ।
देख देख अनुभव गति धारी ॥ २४ ॥
जुग केते[2] और मुद्दत[3] केती ।
कही न जावे उनकी गिनती ॥ २५ ॥
रचना सत्य सत्य वह देशा ।
नहिं ब्यापे जहँ काल कलेशा ॥ २६ ॥
हंस सभा समरथ तहँ बैठे ।
लीला देखें रहें इकट्ठे ॥ २७ ॥
कँवल द्वार दल धारा निकसी ।
श्याम रूप अचरज होय दरसी ॥ २८ ॥
पुरुष देख अचरज लौलीना ।
सेत माहिं जस श्याम नगीना ॥ २९ ॥
सब हंसन मिल अर्ज़ी कीन्हा ।
कौन कला यह हम नहिं चीन्हा । ३० ॥
पुरुष कहा तुम करो बिलासा ।
यह कल रचिहै और तमाशा ॥ ३१ ॥

दोहा

हंसन मन अचरज भया, कहा[4] करे बिस्तार ।
पुरुष सेव नित ही करे, मन कुछ औरहि धार ॥ ३२ ॥

१—बिलास । २—कितने । ३—समय । ४—क्या ।

धारा वह बढ़ती चली, कला न रोकी ताहि ।
पुरुष मौज ऐसी हुई, बोली कला बनाय ॥ ३३ ॥

रचना रचूँ और मैं न्यारी ।
यह रचना मोहि लगे न प्यारी ॥ ३४ ॥
तीन लोक रचना मैं करूँ ।
राज पाय ध्यान तुम धरूँ ॥ ३५ ॥
पुरुष कला को दिया निकासी ।
निकस कला कीन्हा अति त्रासी[1] ॥ ३६ ॥
पुरुष दया कर जुगति बनाई ।
कला दूसरी और उपाई[2] ॥ ३७ ॥
पीत बरन[3] वह कला सिंगारी ।
दीन्ही आज्ञा पुरुष निहारी ॥ ३८ ॥
एक काल कुछ अंस दयाली ।
दोनों मिल कीन्हा कुछ ख़्याली ॥ ३९ ॥
आये मानसरोवर तीरा ।
अक्षर[4] की देखी वहँ लीला ॥ ४० ॥
लीला देख कला चित त्रासा[5] ।
तब अक्षर ने दिया दिलासा ॥ ४१ ॥

१—दुख या भय । २—उत्पन्न की । ३—पीले रंग की ।
४—अक्षर पुरुष । ५—कष्ट ।

दोहा

जोति निरंजन दोउ कला, मिलकर उत्पति कीन ।
पाँच तत्त और चार खान, रच लीन्हे गुन तीन ॥ ४२ ॥
गुन तीनों मिल जगत का, किया बहुत बिस्तार ।
ऋषी मुनी नर देव अदेव[1], रच बाढ़ोऽहंकार । ४३ ॥

सोरठा

ब्रह्मा विष्णु महेश, और चौथी जोती मिली ।
भर्मजाल की फाँस, जीव न पावे निज गली[2] ॥ ४४ ॥

आप निरंजन हुए नियारे ।
भार सृष्टि सब इन पर डारे ॥ ४५ ॥
दीप रचा इक अपना न्यारा ।
तामें कीन्हा बहु बिस्तारा ॥ ४६ ॥
पालँग आठ दीप परमाना ।
जोग आरम्भ कीन्ह बिधि नाना ॥ ४७ ॥
स्वाँस खैंच निज सुन्न चढ़ाये ।
धुन प्रगटी और बेद उपाये ॥ ४८ ॥
बेद मिले ब्रह्मा को आये ।
देख बेद ब्रह्मा हर्षाये ॥ ४९ ॥
मुख चारों से धुन उचारी ।
ताते बेद हुए पुनि चारी ॥ ५० ॥

१—दैत्य, दानव । २—राह ।

ऋषि मुनि मिल फिर किया पसारा ।
कर्म धर्म और भर्म सँभारा ॥ ५१ ॥
सिम्रित शास्तर बहु बिधि रचे ।
कर्म धर्म में सब मिल पचे ॥ ५२ ॥
खोज निरंजन किनहुँ[1] न पाया ।
बेदहु नेति नेति गुहराया[2] ॥ ५३ ॥

दोहा

दर्श निरंजन ना मिला, किया ज्ञान अनुमान[3] ।
फिर आगे सतपुरुष का, क्योंकर करें प्रमान ॥ ५४ ॥
ताते यह मत संत का, रहा गुप्त जग माहिं ।
गुन तीनों मानें नहीं, जीवहु मानें नाहिं ॥ ५५ ॥

सोरठा

संत पुकारें भेद, बेदपशू[4] मानें नहीं ।
अब क्या करें उपाव, जीव पड़े सब भर्म में ॥ ५६ ॥
तिरलोकी का नाथ कहाया ।
सो भी उनके हाथ न आया ॥ ५७ ॥
स्वर्ग नरक चौरासी फेरा ।
जन्म जन्म पड़े काल के घेरा ॥ ५८ ॥
कोइ कोइ चेतन माहिं समाने ।
सो भी फिर जनमे भौ[5] आने ॥ ५९ ॥

१—किसी ने । २—पुकार कर कहा । ३—क़यास । ४—वेद के विषय में पशु के समान अज्ञता से व्यवहार करने वाले यानी वेद के टेकी । ५—संसार में ।

चौथा लोक संत दरबारा।
निश्चय ताका काहु[1] न धारा ॥ ६० ॥
संत दया अपने चित धरें।
जीव न मानें तो क्या करें ॥ ६१ ॥
भेद बतावें बानी कहें।
देह धरें और जग में रहें ॥ ६२ ॥
जीव चितावें किरपा धार।
बहुत उठावें जीवन भार[2] ॥ ६३ ॥
तौ भी कोइ परतीत न लावे।
चौथा पद आसा नहिं धारे ॥ ६४ ॥
बारह मास बखान पुकारे।
कह कह कर अब हम भी हारे ॥ ६५ ॥
हार जीत कुछ हमरे नाहीं।
मूरख पर इक तान चलाई ॥ ६६ ॥
सत्य सत्य सत्य मैं कही।
अब कहने को कुछ नहिं रही ॥ ६७ ॥
राधास्वामी नाम उचारो।
भक्ति भाव अब मन में धारो ॥ ६८ ॥
संतन की जिन मन परतीत।
और धारी जिन सतसँग रीत ॥ ६९ ॥

१—किसी ने। २—जीवों के करमों का बोझ।

सतसँग करें निस जो आई।
उन प्रति[1] यह बानी हम गाई ॥ ७० ॥

मंगल

गुरु मेरे दीनदयाल करी किरपा घनी[2]।
सुनकर बानी सार (बारहमास) सुरत धुन में तनी[3] ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति चित धार दास शोभा बनी।
मैं औगुन की खान कहूँ कहँ लग गिनी ॥ २ ॥
शब्द भेद अति गूढ़ थके जहँ मुनिजनी।
कोइ न पावे भेद ज्ञान ऐसी छनी ॥ ३ ॥
सत्तनाम सतपुरुष अगम पूरन धनी।
संत बतावें भेद सार भाखें पुनी ॥ ४ ॥
जीव न माने नेक[4] काल बुधि उन हनी[5]।
प्रेमी सतसंगी कोई जिन खोई मान मनी[6] ॥ ५ ॥
नहिं बूझे संसार चाल मनमुख सनी।
जौहरी जाने कोय परख[7] मानिक मनी[8] ॥ ६ ॥
पोत[9] गहे जग मूढ़ छाँड़ हीरा कनी[10]।
क्योंकर कहूँ बुझाय बात ऐसी बनी ॥ ७ ॥

१—उनके लिये। २—बहुत। ३—खिंची। ४—ज़रा। ५—मारी है। ६—अहंकार। ७—पहिचान। ८—मणि की। ६—काँच के छोटे छोटे दाने। १०—बारीक टुकड़े।

सुरत हंसनी जाय शब्द मोती चुनी ।
कोइ बिरले गुरुमुख जीव ठान ऐसी ठनी ॥ ८ ॥
खोला अगम दुवार मर्म जाना जिनी[1] ।
गई रात अँधियार हुआ चाँदन दिनी ॥ ९ ॥
सतगुरु किरपा धार साख ऐसी भनी[2] ।
मार लिया मन खेत[3] सोई सूरा रनी ॥१०॥
आदि नाम को भूल हुई सबकी ऋनी[4] ।
ममत चदरिया पहिन कर्म ने जो बिनी ॥११॥
मंत्र दिया गुरुदेव काल मारा फनी[5] ।
राधास्वामी नाम चित्त दे अब सुनी ॥१२॥

२-शब्द २२१

दूसरा बारहमासा

आया मास असाढ़ बिरह के बादल घट छाये ।
नैनन झड़ता नीर मेघ ज्यों रिमझिम बरखाये ।
अन्न और पानी नहिं भावे ।
हर दम पिया की याद बिकल चित चहुँ दिस को धावे ।
खटक दरशन की हिये साले ।
बिन प्रीतम दीदार नहीं मन कोइ बिधि कर माने ॥ १ ॥
लागा सावन मास घुमँड घन चहुँ दिस रहा बरखाय ।
सुन सुन पपिहा बोल बिरहिनी रही जिय में घबराय ।

१—जिन्होंने । २—कही । ३—लड़ाई में । ४—ऋणी, कर्ज़दार । ५—नाग ।

तपन हिये में उठती भारी ।
ढूँढ़त रही पिया धाम खोज कर बैठी थक हारी ।
भेख और पंडित जग भरमान ।
निज घर सुद्ध न लाय रहे सब माया सँग अटकान ॥ २ ॥
तीजा भादौं मास बिरह की दौं लागी भारी ।
देखत अस अस हाल पिया आये संत रूप धारी ।
सहज में मोहि दरशन दीन्हा ।
घर का भेद बताय दया कर मोहि अपना कीन्हा ।
शब्द की घट में राह लखाय ।
सतगुरु चरन अधार सुरत मन धुन सँग देत चढ़ाय ॥ ३ ॥
आया मास कुआर सुरत गुरु चरनन में लागी ।
दिन दिन सेवा करत प्रीति हिये अंतर में जागी ।
रूप गुरु लागे अति प्यारा ।
सुनती चित से बचन अमी की ज्यों बरसे धारा ।
हिये के मैल भरम निकसे ।
मगन हुई मन माहिं फूल की कलियाँ ज्यों बिगसे ॥ ४ ॥
कातिक काया ताक सुरत मन घर की सुधि धारी ।
गुरु स्वरूप धर ध्यान शब्द धुन सुनती झनकारी ।
निरख घट अंतर उजियारी ।
अचरज लीला देख होत अब तन मन सुखियारी ।
गुरू की बढ़ती नित परतीत ।
छिन छिन दया निहार उमँगती नइ नइ भक्ती रीत ॥ ५ ॥

अघहन अघ सब कटे सुरत मन निरमल होय आये।
मेहर करी गुरुदेव तोड़ तिल नभ ऊपर धाये।
सुनी वहँ घंटा संख पुकार।
सहसकँवल के माहिं निरख रही निरमल जोति उजार।
हिये से गुरु महिमा गाती।
निरखत दया अपार चरन पर नित बलि बलि जाती॥ ६ ॥
माया जाड़ा लाग पूस में मुरझाया काला।
सुन धुन गगना पूर सुरत मन झट चढ़ गये बाला।
मेघ जहँ गरजत घोरंघोर।
बाजत धुन मिरदंग काल दल धर भागा घर छोड़।
सुरत गुरु दरशन कर हरखाय।
छूटे करम कलेश दया गुरु छिन छिन रही गुन गाय॥ ७ ॥
माघ महीना लाग खिलत रही चहुँ दिस फुलवारी।
बेनी तीर चढ़ाय सुरत गई तिरलोकी पारी।
खेल रही हंसन सँग कर प्यार।
मानसरोवर न्हाय सुनत रही किंगरी सारँग सार।
सिखर चढ़ गई महासुन पार।
सिंघ नाग को टार भँवर गढ़ पहुँची सतगुरु लार॥ ८ ॥
फागुन फाग रचाय पुरुष सँग खेलत स्रुत होरी।
मुरली बीन बजाय काल से कुल नाता तोड़ी।
मची सतपुर में अचरज धूम।
जुड़ मिल आये हंस हरख कर आरत गावें घूम।

प्रेम रँग भींज रहे सब कोय ।
अचरज शोभा पुरुष निहारत चरनन सुरत समोय ॥ ९ ॥
चैत महीना चेत अधर की सुधि ले सुत चाली ।
पुरुष दई दुरबीन अलखपुर पहुँची दरहाली ।
मगन हुई दरस अलख पुर्ष पाय ।
अरबन रबि उजियार पुरुष के इक इक रोम लजाय ।
ख़बर ले ऊपर को धाई ।
अगम पुरुष दरबार निरख छबि अद्भुत हरखाई ॥ १० ॥
आया मास बैसाख चित्त में बाढ़ा अनुरागा ।
अगम लोक के पार ध्यान राधास्वामी चरनन लागा ।
सुरत चली धीरे से पग धार ।
निरखा अजब प्रकाश द्वार पर रबि शशि नहीं शुमार ।
लखा जाय हैरत रूप अनाम ।
अकह अपार अनंत परम गुरु संतन का निज धाम ॥ ११ ॥
सब से जेठा धाम आदि में वहीं से सुत आई ।
काल जाल की फाँस फँसी तन मन सँग दुख पाई ।
मिलें कोई सतगुरु परम उदार ।
कर उनका सतसंग प्रेम से तब होवे निरवार ।
दीन दिल चरन सरन धारे ।
सुरत शब्द की राह अधर घर चढ़ जावे पारे ॥ १२ ॥
बारह मास पुकार संत की निज महिमा गाई ।
सूरत शब्द लगाय मिलन का रस्ता बतलाई ।

भाग बढ़ अपना क्या गाऊँ ।
मिल गये राधास्वामी दयाल दई मोहि निज चरनन ठाऊँ ।
जिऊँ मैं राधास्वामी आधारे ।
चरनन सुरत लगाय गाऊँ मैं धन धन स्वामी प्यारे ॥ १३ ॥

सावन, बसंत व होली

सावन

१–शब्द २२२

सावन मास आस हुई झूलन ।
गरजत गगन मगन मन फूलन ॥ १ ॥
सखियाँ सज सज आईं ढँढूलन[1] ।
प्रेम भरी सुख सहज अमूलन[2] ॥ २ ॥
कहा कहूँ बतियाँ नहिं खूलन ।
देख देख छबि मन सुधि भूलन ॥ ३ ॥
गर्जन घन और बिजली चमकन ।
श्याम घटा मानो अति गज हूलन ॥ ४ ॥
देखत सुरत चढ़ी पद मूलन[3] ।
झूलत शब्द हिंडोल अतूलन[4] ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन काटे सब सूलन[5] ।
मानसरोवर मोती रूलन[6] ॥ ६ ॥

१—देखने । २—अमूल्य । ३—अंतिम । ४—अनोखा । ५—शूल, कष्ट । ६—चुनना ।

राधास्वामी कहत सरस यह सावन ।
देख देख सब करत ममूलन[1] ॥ ७ ॥

१—शब्द २२३

सावन मास सुहागिन आईं ।
अपने पिया सँग झूलन धाईं ॥ १ ॥
श्याम घटा अब चहुँ दिस छाईं ।
गरज गगन अति धूम मचाईं ॥ २ ॥
नई रागनी तान सुनाईं ।
चमक धमक सँग खेल दिखाईं ॥ ३ ॥
अमी धार छिन छिन बरषाईं ।
सुषमन नदियाँ प्रेम भराईं ॥ ४ ॥
गगन हिंडोला झोका लाईं ।
सखियाँ सँग की उमँगत आईं ॥ ५ ॥
रस भर भर पिया संग लुभाईं ।
दामिन[2] चम चम अधिक सुहाईं ॥ ६ ॥
मोर पपीहा रटन लगाई ।
अचरज बानी घोर सुनाई ॥ ७ ॥
राधास्वामी छबि निरखत हर्षाईं ।
अजब समाँ सब देत बधाई ॥ ८ ॥

१—सुख चैन । २—बिजली ।

१-शब्द २२४

राधास्वामी झूलत आज हिंडोला ।
गगन मँडल धुन अद्भुत बोला ॥ १ ॥
सुरत निरत सखियाँ मिल आईं ।
झूमत घूमत रूप समाईं ॥ २ ॥
नैन निहारत दरस पुकारत ।
राधास्वामी राधास्वामी नाम दृढ़ावत ॥ ३ ॥
चाँद सुरज दोउ खंभ सजे रे ।
सुषमन चौकी लाल जड़े रे ॥ ४ ॥
चरन धार राधास्वामी बिराजे ।
प्रेम मगन सब प्रीतम गाजे ॥ ५ ॥
अजब समाँ अचरज यह औसर ।
हंस हंसनी छोड़ा सरवर ॥ ६ ॥
देख बिलास मगन हुए भारी ।
सुधि बुधि भूले देह बिसारी ॥ ७ ॥
धूम मची अब अमर नगर में ।
झूलत राधास्वामी बैठ अधर में ॥ ८ ॥

२-शब्द २२५

हिंडोला झूले सुर्त प्यारी ॥ टेक ॥
सतसंगी सब हिल मिल झूलें ।
सुरत शब्द धारी ॥ १ ॥

राधास्वामी महिमा सब मिल गावें।
चरन सरन वारी ॥ २ ॥
राधास्वामी दीनदयाल सबन पर।
मेहर दृष्टि डारी ॥ ३ ॥
पूरा काज बना इक इक का।
राधास्वामी चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥

२-शब्द २२६

सावन मास मेघ घिर आये।
गरज गरज धुन शब्द सुनाये ॥ १ ॥
रिमझिम बरषा होवत भारी।
हिये बिच लागी बिरह कटारी ॥ २ ॥
प्रीतम छाय रहे परदेसा।
बूझत रही नहिं मिला सँदेसा ॥ ३ ॥
रैन दिवस रहूँ अति घबराती।
कसक कसक मेरी कसके छाती ॥ ४ ॥
कासे कहूँ कोइ दरद न बूझे।
बिन पिया दरस नहीं कुछ सूझे ॥ ५ ॥
चमके बीज[1] तड़प उठे भारी।
कस पाऊँ पिया प्रानअधारी ॥ ६ ॥

१—बिजली।

रोवत बीते दिन और राती ।
दरद उठत हिये में बहु भाँती ॥ ७ ॥
ढूँढ़त ढूँढ़त बन बन डोली[1] ।
तब राधास्वामी की सुन पाई बोली ॥ ८ ॥
प्रीतम प्यारे का दिया सँदेसा ।
शब्द पकड़ जाओ उस देसा ॥ ९ ॥
सुरत शब्द मारग दरसाया ।
मन और सुरत अधर चढ़वाया ॥ १० ॥
कर सतसंग खुले हिये नैना[2] ।
प्रीतम प्यारे के सुने वहीं बैना ॥ ११ ॥
जब पहिचान मेहर से पाई ।
प्रीतम आप गुरू बन आई ॥ १२ ॥
दया करी मोहि अंग लगाया ।
दुक्ख दरद सब दूर हटाया ॥ १३ ॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ ।
तन मन वारूँ बलि बलि जाऊँ ॥ १४ ॥
भाग जगे गुरु चरन निहारे ।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी प्यारे ॥ १५ ॥

१—फिरी । २—नेत्र ।

बसंत

१–शब्द २२७

देखन चली बसंत अगम घर ।
देख देख अब मगन भई ॥ १ ॥
सखियन साथ चली नभ ऊपर ।
शब्द गुरू सँग लगन लगी ॥ २ ॥
कँवलन क्यारी फूल सँवारी ।
पेख पेख अब गगन रही ॥ ३ ॥
सतगुरु संध[1] परखती पहुँची ।
कर्म बीज को अगिन दई[2] ॥ ४ ॥
ममता मार अहँगता जारी ।
सुरत शब्द की सरन लई ॥ ५ ॥
अनहद राग सुने घट अंतर ।
नाम रसायन रसन रसी ॥ ६ ॥
सुषमन पार सुन्न घर पहुँची ।
भक्ति शिरोमनि[3] परन[4] गही ॥ ७ ॥
सतगुरु किरपा सतपद पाया ।
राधास्वामी धरन[5] धरी ॥ ८ ॥

१—संधि, मिलाप । २—जला दिया । ३—सबसे उत्तम ।
४—प्रण, प्रतिज्ञा । ५—धारणा ।

२–शब्द २२८

सखी देखो आज बहार बसंत ॥ टेक ॥
चलो घर श्याम धाम पारा ।
खिली जहँ नित फुलवार बसंत ॥ १ ॥
सखी सब आरत गाय रहीं ।
चरन में राधास्वामी पुरुष अचिंत ॥ २ ॥
करत रहीं दरशन दृष्टी जोड़ ।
हरख रहीं लख लख शोभा अनंत ॥ ३ ॥
अमी की धारा हुई जारी ।
धुनन का घट में शोर मचंत ॥ ४ ॥
जो जिव जग से उबरा चाहें ।
राधास्वामी नाम जपैं निज मंत[१] ॥ ५ ॥

२–शब्द २२९

आज आई बहार बसंत ।
उमँग मन गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥
दया धार गुरु जग में आये ।
भक्ती की फुलवार खिलाय ॥ २ ॥
प्रेम बदरिया बरषा लाई ।
नइ नइ धुन घट शब्द सुनाय ॥ ३ ॥
सभी सुहागिन खेलन आईं ।
गुरु सँग अचरज फाग रचाय ॥ ४ ॥

१—मंत्र ।

तन मन धन की धूल उड़ावत ।
प्रेम प्रीति का रंग घुलाय ॥ ५ ॥
गुरु चरनन पर बारंबारा ।
डार डार रँग हिये हरखाय ॥ ६ ॥
भक्ति दान फगुआ लिया गुरु से ।
इक इक अपना काज बनाय ॥ ७ ॥
राधास्वामी दीनदयाल कृपाला ।
सबको लिया निज चरन लगाय ॥ ८ ॥

२–शब्द २३०

ऋतु बसंत आये सतगुरु जग में ।
चलो चरनन पर सीस धरो री ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति करो उन चरनन में ।
अपने जीव का काज करो री ॥ २ ॥
काल करम दोउ अति बलवाना ।
बचो इनसे गुरु सरन गहो री ॥ ३ ॥
मन इंद्री सँग बहुत ठगाई ।
भूल भरम तज होश करो री ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन सुनो धर काना ।
मान मनी तज संग रलो री ॥ ५ ॥
उमँग अंग ले कर गुरु सेवा ।
दीन अधीन होय चरन पड़ो री ॥ ६ ॥

मेहर करें वे भेद लखावें ।
तब घट में धुन शब्द सुनो री ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल परम हितकारी ।
जीव काज निज धाम तजो री ॥ ८ ॥
मेहर करी मोहि चरन लगाया ।
अचरज भाग जगाय दियो री ॥ ९ ॥
पियत रहूँ नित धुन रस घट में ।
मन सूरत मेरे गगन चढ़ो री ॥ १० ॥
गुरु पद परस चढ़त ऊँचे को ।
सत्तलोक सतपुरुष मिलो री ॥ ११ ॥
अलख अगम का दरशन करके ।
प्यारे राधास्वामी धाम बसो री ॥ १२ ॥

२—शब्द २३१

ऋतु बसंत फूली जग माहीं ।
मिल सतगुरु घट खोज करो री ॥ १ ॥
दीन अधीन होय चरनन में ।
प्रेम उमँग हिये बीच धरो री ॥ २ ॥
सुरत शब्द मारग दरसावें ।
शब्द माहिं अब सुरत भरो री ॥ ३ ॥
दृढ़ परतीत धार हिये अंतर ।
दया मेहर ले गगन चढ़ो री ॥ ४ ॥

राधास्वामी दयाल जीव हितकारी ।
हित चित से उन सरन पड़ो री ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर निस दिन में ।
मन इंद्री के भोग तजो री ॥ ६ ॥
काज करें तेरा पूरा छिन में ।
भौसागर से आज तरो री ॥ ७ ॥

२–शब्द २३२

आज आया बसंत नवीन ।
सखी री खेलो गुरु सँग फाग रचाय ॥ १ ॥
भाँति भाँति के फूल खिलाने ।
नइ नइ डाल डाल लहराय ॥ २ ॥
जहँ तहँ खिल रही नई बहारा ।
पीत रंग रहा चहुँ दिस छाय ॥ ३ ॥
सखियाँ सब जुड़ मिल कर आईं ।
सतगुरु चरनन प्रेम जगाय ॥ ४ ॥
पीत रंग बस्तर पहिनाये ।
चमक दमक सँग साज सजाय ॥ ५ ॥
दरशन कर हिये में हरखाईं ।
अद्भुत शोभा बरनी न जाय ॥ ६ ॥
सतगुरु मुखड़ा छिन छिन निरखत ।
बार बार चरनन बलि जाय ॥ ७ ॥

उमँग उमँग गुरु चरनन लागीं।
हिये में नया नया भाव धराय ॥ ८ ॥
प्रेम भरी मुख आरत गावत।
तन मन की सब सुध बिसराय ॥ ६ ॥
समाँ बँधा इस औसर ऐसा।
हंस हंसनी रहे लुभाय ॥ १० ॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर।
सब को लीन्हा चरन लगाय ॥ ११ ॥
प्रेम दात दे हरख हरख कर।
इक इक का दिया भाग बढ़ाय ॥ १२ ॥
राधास्वामी महिमा को सके गाई।
बेद कतेब रहे शरमाय ॥ १३ ॥
जोगी ज्ञानी कहन न जानें।
जोति निरंजन भेद न पाय ॥ १४ ॥
प्यारे राधास्वामी परम दयाला।
हम नीचन को लिया अपनाय ॥ १५ ॥

होली

१–शब्द २३३

अब खेलत राधास्वामी सँग होरी।
धरन गगन बिच शोर मचो री ॥ १ ॥

चाँद सुरज तारागन मंडल ।
उतर उतर आये घर छोड़ी ॥ २ ॥
शेषनाग और कुरुम साज ले ।
चढ़ पताल आये कर जोड़ी ॥ ३ ॥
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन ।
चार दिशा सब भइ इक ठौरी ॥ ४ ॥
सुर नर मुनि जोगी बैरागी ।
धूम धाम कुछ भइ है न थोड़ी ॥ ५ ॥
सागर कूप भरे सब रँग से ।
मेरुदंड पिचकारी छोड़ी ॥ ६ ॥
भींज रहीं सखियाँ सब सँग की ।
बार बार रँग प्रेम निचोड़ी ॥ ७ ॥
समाँ बँधा लीला अति उमँगी ।
काल बली अब जात ठगो री ॥ ८ ॥
सुरत अबीर गुलाल शब्द का ।
अब सबके मुख जात मलो री ॥ ९ ॥
लोभ मोह अहंकार बिकारी ।
घर इनका सब आज जलो री ॥ १० ॥
धुन धधकार सुन्न की बरषा ।
मुख उनका अब जात न मोड़ी ॥ ११ ॥
अगम ख़ज़ाना मिला शब्द का ।
त्याग दिया धन लाख करोड़ी ॥ १२ ॥

सुन्न महल सतलोक अटारी ।
जाय चढ़ी और नाम लखो री ॥ १३ ॥
नइ नइ शोभा पुरुष पुराना ।
कहत न आवे बचन थको री ॥ १४ ॥
राधास्वामी खेल खिलाया ।
अनेक रूप यहँ एक भयो री ॥ १५ ॥

१—शब्द २३४

मेरे गुरु ने खिलाई प्रेम सँग होरी ।
मैं तो होय रही सब जग से बौरी ॥ १ ॥
सील गुलाल अबीर छिमा का ।
तासे मैं भर लई झोरी ॥ २ ॥
काम क्रोध दोउ खेलन आये ।
मार मार उनका मुख मोड़ी ॥ ३ ॥
सुरत निरत दोउ सखियाँ सँग ले ।
शब्द खोज को चाली दौड़ी ॥ ४ ॥
सुषमन नाका जाय हम घेरा ।
बंकनाल पिचकारी छोड़ी ॥ ५ ॥
त्रिकुटी शब्द जाय हम पकड़ा ।
धूम धाम कुछ भइ है न थोड़ी ॥ ६ ॥
हंस सभा जहँ मानसरोवर ।
प्रगट भई माया की चोरी ॥ ७ ॥

किंगरी नाद होत धुन भारी ।
सुरत तार अपना नहिं तोड़ी ॥ ८ ॥
राधास्वामी दया रंग घट भरिया ।
जनम मरन दुख दूर करो री ॥ ६ ॥

१—शब्द २३५

राधास्वामी घर बाढ़ो रंग ।
मैं तो खेलूँगी ऐसी होली उमंग ॥ १ ॥
सुरत निरत की ले पिचकारी ।
राधास्वामी पै भर भर डारी ॥ २ ॥
चाँद सुरज दोउ कुमकुम कीन्हे ।
प्रेम गुलाल से भर भर लीन्हे ॥ ३ ॥
सुषमन हौज़ भरा अब भारा ।
बंकनाल का छुटा फुहारा ॥ ४ ॥
सहस धार होय त्रिकुटी पारा ।
पहुँचा जाय सुन्न के द्वारा ॥ ५ ॥
हंसन से जाय खेली होरी ।
बहन लगी जहँ अमी की मोरी ॥ ६ ॥
अनहद बाजे अद्भुत बाजें ।
राधास्वामी खुल खुल गाजें ॥ ७ ॥

ऐसी होली खेलो मेरे भाई ।
सब संतन के यह मन भाई ॥ ८ ॥

१-शब्द २३६

आओ री सखी जुड़ होली गावें ।
कर कर आरत पुरुष मनावें ॥ १ ॥
तन मन कुमकुम भर भर मारें ।
छिड़क रंग राधास्वामी रिझावें ॥ २ ॥
लाल गुलाल वस्त्र पहिनावें ।
देख देख रँग रूप निहारें ॥ ३ ॥
सुरत अबीर थाल भर लावें ।
नैनन की पिचकार छुड़ावें ॥ ४ ॥
राधास्वामी अपने हिय बिच धारें ।
उन सँग निस दिन प्रेम बढ़ावें ॥ ५ ॥
धरन गगन बिच धूम मचावें ।
राधास्वामी अब ऐसी होली खिलावें॥ ६ ॥
चाँद सुरज[1] दोउ खैंच मिलावें ।
सुषमन नदियाँ रंग बहावें ॥ ७ ॥
सुरत चुनरिया रंग रँगावें ।
भींजत निरत खोज धुन पावें ॥ ८ ॥

१—इड़ा, पिंगला ।

दल बादल अब अधिक सुहावें ।
लाल लाल चहुँ दिश घिर आवें ॥ ६ ॥
रंग भरे रँग ही बरषावें ।
अचरज लीला आन दिखावें ॥ १० ॥
अस होली कहो कौन खिलावें ।
राधास्वामी भेद बतावें ॥ ११ ॥

२–शब्द २३७

सतगुरु प्यारे ने खिलाई,
अब के नइ होरी हो ॥ टेक ॥
काम क्रोध को मार हटावा ।
सील छिमा हिये माहिं बसावा ।
लोभ मोह सिर फोड़ी हो ॥ १ ॥
मान ईरखा भी दइ त्यागी ।
मन हुआ जग से सहज बैरागी ।
गुरु चरनन सुत जोड़ी हो ॥ २ ॥
प्रेम रंग घट माहिं भरावा ।
पँच इंद्री पिचकार बनावा ।
गुरु पर भर भर छोड़ी हो ॥ ३ ॥
दिन दिन प्रीति बढ़त गुरु चरना ।
उमँग उमँग हिये धारी सरना ।
जग से अब सुत मोड़ी हो ॥ ४ ॥

राधास्वामी दृष्टि मेहर की कीन्ही ।
प्रेम दात मोहि निज कर दीन्ही ।
कुल जग नाता तोड़ी हो ॥ ५ ॥

२–शब्द २३८

सतगुरु प्यारे ने मचाई,
जग बिच होरी हो ॥ टेक ॥
हेला मार कहा जीवन को ।
सतसँग कर रोको तन मन को ।
निज घर सुरत बहोरी हो ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति का रँग बरसाया ।
शब्द गुरू सँग फाग खिलाया ।
गुन गुलाल घट घोरी हो ॥ २ ॥
पाँच दूत को मार पछाड़ा ।
तीन गुनों का कूड़ा टारा ।
काल करम बल तोड़ी हो ॥ ३ ॥
सुन में जाय फिर फाग रचाया ।
हंसन संग अबीर उड़ाया ।
धूम मची नहिं थोड़ी हो ॥ ४ ॥
सतपुर जाय हुई स्रुत निर्मल ।
अलख अगम को निरखा चढ़ चल ।
राधास्वामी चरनन जोड़ी हो ॥ ५ ॥

२–शब्द २३६

आज मेरे आनँद बजत बधाई, नइ होली खेलन मन भाई ॥टेक॥
ऋतु बसंत आये सतगुरु प्यारे, तन मन धन सब उन पर वारे।
यासे रीझें पुरुष बिदेही, जगत बिच धूम मचाई ॥ १ ॥
घट घट प्रेम रंग भरवावें, अबिर गुलाल घोल घुलवावें।
अटक भटक सब ही तुड़वावें, काल दुष्ट को मार गिरावें।
बोल राधास्वामी की दुहाई ॥ २ ॥
कुमकुम बरषा चहुँ दिस होई, हरषत उमँगत मन सुत दोई।
सतगुरु पर रँग डारत सोई, भींजत बिगसत सज्जन लोई।
प्रेम रँग धार बहाई ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु सब धूल उड़ावें, करम धरम के धक्के खावें।
जम के दूत नित अधिक सतावें, बार बार मुख गारी लावें।
चौरासी में जाय खपाई ॥ ४ ॥
हमको सतगुरु लिया अपनाई, करम भरम सब फूँक जलाई।
दृढ़ परतीत और प्रीति जगाई, धुर घर का निज भेद लखाई।
सुरत मन अधर चढ़ाई ॥ ५ ॥
उमँग मेरे हिये में उठत करारी, लखूँ गुरु दरशन शोभा भारी।
मोहनी छबि पर जाउँ बलिहारी, करूँ मैं सेवा इक इक न्यारी।
चरन में हित चित से गठियाई ॥ ६ ॥
दया मेरे मन में अधिक समाई, यही जग जीवन आख सुनाई।
बचा चाहो दुक्खन से जो भाई, आओ राधास्वामी की सरनाई।
जतन कोइ और पेश नहिं जाई ॥ ७ ॥

खेल फिर सतगुरु सँग तू होली, सुनो और परखो घट की बोली।
काल के बिघन डाल सब रोली, दया गुरु मारो माया पोली।
हिये में छिन छिन राधास्वामी गाई ॥ ८ ॥

२–शब्द २४०

फागुन की ऋतु आई सखी।
मिल सतगुरु खेलो री होरी ॥ १ ॥
अनहद शब्द सुनो घट अंतर।
घंटा संख बजो री ॥ २ ॥
झाँझ मृदंग बाँसरी बाजे।
मधुर मधुर धुन बीन सुनो री ॥ ३ ॥
जगत जाल यह काल बिछाया।
बिरह प्रेम बल तोड़ चलो री ॥ ४ ॥
मान मनी की धूल उड़ाओ।
चरनन में चित जोड़ रहो री ॥ ५ ॥
ऐसा औसर फिर न मिलेगा।
हित चित से अब संग करो री ॥ ६ ॥
दृढ़ परतीत और प्रीति सँभारो।
जैसे चंद्र चकोरी ॥ ७ ॥
प्रेम रंग सतगुरु बरसावें।
भींज रहीं सखियाँ सरबोरी ॥ ८ ॥

ऐसी होली खेल सतगुरु सँग ।
राधास्वामी चरनन जाय मिलो री ॥ ६ ॥

२-शब्द २४१

होली खेलन ऋतु आई सखी री ।
क्या भूल रही संसारी ॥ १ ॥
काम क्रोध और मोह नशे में ।
लोभ संग मतवारी ॥ २ ॥
नरदेही फिर हाथ न आवे ।
धरमराय करे ख़्वारी ॥ ३ ॥
याते समझो बूझो अब ही ।
सतगुरु सरन उबारी ॥ ४ ॥
खोज लगाय पड़ो उन चरनन ।
प्रीति प्रतीति सँभारी ॥ ५ ॥
माया की फिर धूल उड़ाओ ।
देखो घट उजियारी ॥ ६ ॥
सुरत अबीर मलो गुरु चरनन ।
प्रेम का रंग बहा री ॥ ७ ॥
गुनन गुलाल उड़ाय सुनो धुन ।
मिरदँग बीन बजा री ॥ ८ ॥
जगमग जोति सूर चमका री ।
झलक चंद्र और नूर निहारी ॥ ९ ॥

गुरु दयाल काटें जम जाला ।
कर दें तुम छुटकारी ॥१०॥
मगन होय जाओ घर अपने ।
राधास्वामी चरन सिहारी ॥११॥

२-शब्द २४२

होली खेल न जाने बावरिया ।
सतगुरु को दोष लगावे ॥ १ ॥
जगत लाज मरजाद में अटकी ।
घूँघट खोल न आवे ॥ २ ॥
प्रेम रंग घट भरन न जाने ।
भरम गुलाल घुलावे ॥ ३ ॥
डगमग भक्ती चाल अनेड़ी ।
जग सँग झोके खावे ॥ ४ ॥
निंद्या धूल से उड़ उड़ भागे ।
सतसँग निकट न आवे ॥ ५ ॥
पाँच दुष्ट का रँग ले साथा ।
नित पिचकार छुड़ावे ॥ ६ ॥
आदर मान भरा मन भीतर ।
दीन अंग नहिं लावे ॥ ७ ॥
बचन सुने पर चित न समावे ।
छिन छिन काल भुलावे ॥ ८ ॥

मन माया ने जाल बिछाया ।
सब जिव नाच नचावे ॥ ६ ॥
दया करें सतगुरु मन मोड़ें ।
तो घर की राह पावे ॥ १० ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन ।
राधास्वामी चरन समावे ॥ ११ ॥

२-शब्द २४३

होली खेलन आये सतगुरु जग में ।
हिल मिल के अब सरन पड़ो री ॥ १ ॥
नरदेही तुम दुरलभ पाई ।
जैसे बने तैसे काज करो री ॥ २ ॥
प्रीति प्रतीति धरो चरनन में ।
हित चित से गुरु बचन सुनो री ॥ ३ ॥
गुरु का ध्यान धरो हिये अंतर ।
शब्द भेद ले गगन चढ़ो री ॥ ४ ॥
सतगुरु रूप निरख मन माहीं ।
प्रेम गुलाल अब जाय मलो री ॥ ५ ॥
पँच इंद्री पिचकारी छोड़ो ।
तन मन चरनन वार धरो री ॥ ६ ॥
निरमल होय चढ़ो ऊँचे को ।
राधास्वामी चरनन लाग रहो री ॥ ७ ॥

२-शब्द २४४

फागुन की ऋतु आई सखी ।
आज गुरु सँग फाग रचो री ॥ १ ॥
ऐसा समा मिले नहिं कबहीं ।
मनुआँ उमँग रहो री ॥ २ ॥
दृष्टि जोड़ ताको गुरु मूरत ।
अद्भुत रूप लखो री ॥ ३ ॥
सुरत अबीर की भर भर झोली ।
घट घट रंग भरो री ॥ ४ ॥
गुरु सँग खेल आज नइ होली ।
जग बिच धूम मचो री ॥ ५ ॥
ऐसी होली खेलो मेरे भाई ।
करम भरम सब दूर करो री ॥ ६ ॥
राधास्वामी चरन ध्यान धर हिये में ।
जग से आज तरो री ॥ ७ ॥
होय निहाल जाय जग पारा ।
चरनन सुरत धरो री ॥ ८ ॥

२-शब्द २४५

मैं तो होली खेलन को ठाड़ी ।
स्वामी प्यारे झटपट खोलो किवाड़ी ॥ १ ॥

प्रेम रंग की बरषा कीजे।
भींजे सुरत हमारी ॥ २ ॥
देर देर बहु देर भई है।
कहँ लग करूँ पुकारी ॥ ३ ॥
तड़प तड़प जिया तड़प रहा है।
दरशन देव दिखा री ॥ ४ ॥
सुंदर रूप लखूँ अद्भुत छबि।
होवे घट उजियारी ॥ ५ ॥
ऋतु फागुन अब आय मिली है।
नइ नइ फाग खिला री ॥ ६ ॥
राधास्वामी परम दयाला।
चरनन लेव मिला री ॥ ७ ॥
बिनती करूँ दोऊ कर जोड़ी।
कर लो प्रेम दुलारी ॥ ८ ॥

२—शब्द २४६

क्या सोय रही उठ जाग सखी।
आज गुरु सँग खेलो री होरी ॥ १ ॥
मोह नींद में बहु दिन बीते।
जागन चौंप धरो री ॥ २ ॥
सरधा भाव अबीर संग ले।
घट बिच रंग भरो री ॥ ३ ॥

बिरह भाव के बान चला कर ।
मन से आज लड़ो री ॥ ४ ॥
सुरत शब्द मारग ले गुरु से ।
धुन सँग गगन चढ़ो री ॥ ५ ॥
प्रीति प्रतीति बढ़ावत दिन दिन ।
सुन्न में सुरत भरो री ॥ ६ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
सतपुर जाय बसो री ॥ ७ ॥

२–शब्द २४७

होली खेलै सयानी ।
गुरू के रंग रँगानी ॥ टेक ॥
प्रेम प्रीति का रँग घट भर कर ।
गुरु पर दिया छिड़कानी ॥ १ ॥
दृढ़ बिश्वास धार गुरु चरनन ।
करम और भरम भुलानी ॥ २ ॥
जग ब्योहार लगा सब झूठा ।
सब से हुई अलगानी ॥ ३ ॥
ममत माया और दुबिधा छोड़ी ।
गुरु चरनन लिपटानी ॥ ४ ॥
जगत भोग तज चरन अमीरस ।
पीवत रहत अघानी ॥ ५ ॥

राधास्वामी सतगुरु मिले रँगीले ।
उन सँग फाग खिलानी ॥ ६ ॥

२-शब्द २४८

सोइ तो सुरत पिया की प्यारी ।
जो भींज रही गुरु रँग सारी ॥ १ ॥
सतगुरु प्रेम रहे मदमाती ।
अटल भक्ति का प्रन धारी ॥ २ ॥
जगत भाव तज गुरु चरनन में ।
प्रीति नई नई बिस्तारी ॥ ३ ॥
मगन होय गुरु आज्ञा माने ।
माया मन रहे दोउ हारी ॥ ४ ॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई ।
मेहर करी गुरु अति भारी ॥ ५ ॥
घंटा संख लगे घट बजने ।
सुन्न शिखर गई भौ पारी ॥ ६ ॥
मधुर मधुर धुन गुफा सुनाई ।
अमर लोक गई गुरु लारी ॥ ७ ॥
सत्तपुरुष से फगुआ लीन्हा ।
अलख अगम जा पग धारी ॥ ८ ॥
राधास्वामी दीनदयाला ।
गोद लिया मोहि बैठारी ॥ ९ ॥

२-शब्द २४६

आज सखि गुरु सँग खेलो री होरी ।
तेरा सुंदर ब्योंत बनो री ॥ १ ॥
सतगुरु भेंटे सतसँग मिलिया ।
अचरज भाग जगो री ॥ २ ॥
ऐसा दुरलभ औसर पाया ।
नरदेह सुफल करो री ॥ ३ ॥
अब नहिं चेतो तो फिर कब चेतो ।
फिर नहिं ऐसा समा मिलो री ॥ ४ ॥
जैसे बने तैसे अब ही चेतो ।
गुरु सँग प्रीति धरो री ॥ ५ ॥
प्रेम गुलाल घोल घट अंतर ।
गुरु पर ले छिड़को री ॥ ६ ॥
सुरत अबीर भरो हिये थाला ।
गुरु चरनन पर आन मलो री ॥ ७ ॥
प्रेम भरी सखियाँ सँग लेकर ।
भक्ति रंग बरसत भींजो री ॥ ८ ॥
अस आरत गुरु चरनन कीजे ।
धुन रस ले मन गगन चढ़ो री ॥ ९ ॥
परम गुरू राधास्वामी दयाला ।
उन चरनन में सुरत भरो री ॥१०॥

२–शब्द २५०

प्रेम रंग ले खेलो री गुरु से ।
आज पड़ा तेरा दाव री ॥ १ ॥
गुरु को सब बिधि समरथ जानो ।
लाओ पूरन भाव री ॥ २ ॥
दया करें तुझपर वे छिन छिन ।
दे दे मन को ताव री ॥ ३ ॥
अस्तुत कर महिमा कर उनकी ।
नित्त बढ़ाओ चाव री ॥ ४ ॥
गुरु से रोस करो मत कब ही ।
छिन छिन प्रेम बढ़ाव री ॥ ५ ॥
मौज निहार रज़ा में बरतो ।
मन मत दूर हटाव री ॥ ६ ॥
सुरत जगाय उमँग नई धारो ।
राधास्वामी चरन समाव री ॥ ७ ॥

२–शब्द २५१

होली खेलै रँगीली नार ।
सतगुरु से प्रेम लगाई ॥ टेक ॥
दान अधीन रली सतसँग में ।
घट अनुराग जगाई ॥

प्रीति प्रतीति बढ़त चरनन में ।
दिन दिन भक्ति सवाई ॥
मेहर से काल की अटक तुड़ाई ॥ १ ॥
प्रेम रंग घट भर भर लाई ।
उमँग उमँग गुरु पै छिड़काई ॥
सतसंगिन सतसंगी भाई ।
सबपै रंग अधिक बरसाई ॥
भीज भीज सब अति हरषाई ॥ २ ॥
अबिर गुलाल चहुँ देश उड़ाना ।
लाल सेत आकाश दिखाना ॥
सबके मुख झलकत अब नूरा ।
बाजत घट घट अनहद तूरा ॥
समाँ बँधा कुछ कहा न जाई ॥ ३ ॥
ऐसा अचरज फाग रचाई ।
जग बिच भारी धूम मचाई ॥
मन माया की धूल उड़ाई ।
काल करम दोउ गये ठगाई ॥
ऐसी दया राधास्वामी कराई ॥ ४ ॥
भक्ती रीति हुई अब जारी ।
प्रेम की घट घट बरषा भारी ॥
मोह और काम रहे सब हारी ।
जीवन का सहज होत उधारी ॥
जग में फिरी राधास्वामी की दुहाई ॥ ५ ॥

राधास्वामी नाम हुआ जग परघट ।
काल करम की मिट गइ खटपट ॥
मन के मते सब रह गये सटपट ।
सुरत शब्द कारज करे झटपट ॥
राधास्वामी २ सब मिल गाई ॥ ६ ॥
जीव रहे जग सबहि दुखारी ।
मेहर से सब अब हुए सुखारी ॥
राधास्वामी ऐसी दया बिचारी ।
मन माया दोउ बाज़ी हारी ॥
राधास्वामी सबको पार लगाई ॥ ७ ॥

४–शब्द २५२

खेलत फाग अपार पियारे (आज) ॥ टेक ॥
अकह अपार अनंत धाम से आये पुरुष अपारे ।
अगम अलख सत भँवर नगर होय कीनी जग उजियारे ॥
पिता मेरे प्रान अधारे ॥ १ ॥
जनम जनम की तपन बुझा कर सीतल अंग लगा रे ।
चरन सरन दे सुरत सँवारी दीनी दात अपारे ॥
गुरू मेरे परम दुलारे ॥ २ ॥
अकथ बियोग हटाया छिन में खोल दिये पट सारे ।
चटक चली स्रुत खेलन होली सहस गगन दस द्वारे ॥
महासुन पार सिधारे ॥ ३ ॥

परम जोग पद पाय मगन होय सत्त अलख दरसारे।
अगम अगाध अनाम धाम चढ़ मिल गया प्रेम भँडारे॥
गुरू गति कस कहूँ गा रे॥ ४॥
प्रेमबिलास मिला अब भारी घट घट रंग भरा रे।
अचरज शोभा अद्भुत लीला शब्दन की झनकारे॥
रची अस फाग नियारे॥ ५॥
जग बिच धूम मची अति भारी लीनी सबको तारे।
चहुँ दिस प्रीतम लीला दरसे हुई रचना सरशारे॥
मेहर का वार न पारे॥ ६॥
चरन सरन मिल जीव सुखारी काल करम सब हारे।
सतसँग भक्ती प्रेम लगन में तन मन धन दइ वारे॥
मिले मेरे राधास्वामी पियारे॥ ७॥

मिश्रित शब्द

१-शब्द २५३

गुरू सोई जो शब्द सनेही[1]।
शब्द बिना दूसर नहिं सेई[2]॥ १॥
शब्द कमावे सो गुरु पूरा।
उन चरनन की हो जा धूरा॥ २॥

१—प्रेमी। २—सेवन करे।

और पहिचान करो मत कोई।
लच्छ[1] अलच्छ[2] न देखो सोई ॥ ३ ॥
शब्द भेद लेकर तुम उनसे।
शब्द कमाओ तुम तन मन से ॥ ४ ॥

पहिचान सच्चे परमार्थी की

सोरठा

अनुरागी जो जीव, तिन प्रति[3] अब ऐसी कहूँ।
सुनो कान दे चीत[4], बचन कहूँ बिस्तार कर ॥ ५ ॥
बिषयन से जो होय उदासा।
परमारथ की जा[5] मन आसा ॥ ६ ॥
धन संतान प्रीति नहिं जाके।
जगत पदारथ चाह न ताके ॥ ७ ॥
तन इंद्री आसक्त[6] न होई।
नींद भूख आलस जिन खोई ॥ ८ ॥
बिरह बान जिन हिरदे लागा।
खोजत फिरे साध गुरु जागा ॥ ९ ॥
साध फ़क़ीर मिले जो कोई।
सेवा करे करे दिलजोई ॥ १० ॥

१—लक्षण। २—अलक्षण। ३—उनसे। ४—चित्त। ५—जिसके।
६—लिप्त।

भेष धार पाखंडी होई ।
साधू जानि करे हित सोई ॥ ११ ॥
भेष नेष्ठा[1] नित प्रति धारे ।
ले परशादी चरन पखारे[2] ॥ १२ ॥
ऐसी करनी जाकी देखें ।
आप आय सतगुरु तिस मेलें ॥ १३ ॥
सतगुरु बचन सुने जब काना ।
उमँगे हिरदा प्रेम समाना ॥ १४ ॥
सतगुरु से जब प्रीति लगावे ।
दया मेहर उनकी कुछ पावे ॥ १५ ॥

बिधि दर्शन की

नित प्रति दर्शन परसन[3] करे ।
रूप अनूप[4] चित्त में धरे ॥ १६ ॥
चरनामृत परशादी लेवे ।
मान मनी[5] तज तन मन देवे ॥ १७ ॥

बिधि सेवा की

सेवा कर तन मन धन अरपे ।
सत्तपुरुष सम सतगुरु थरपे[6] ॥ १८ ॥

१—निष्ठा यानी श्रद्धा-भक्ति, विश्वास । २—धोवे । ३—स्पर्श ।
४—अनोखा ।।५—अहंकार । ६—माने ।

प्रथम तन की सेवा

आरत सेवा नित ही करे।
काम क्रोध मद चित से हरे ॥ १९ ॥
चरन दबावे पंखा फेरे।
चक्की पीसे पानी भरे ॥ २० ॥
मोरी धो झाड़ू को धावे[1]।
खोद खदाना[2] मिट्टी लावे ॥ २१ ॥
हाथ धुला दातन करवावे।
काट पेड़ से दातन लावे ॥ २२ ॥
बटना[3] मल अशनान[4] करावे।
अंग पोंछ धोती पहिनावे ॥ २३ ॥
धोती धोय अँगोछा धोवे।
कंघा करे बाल बल[5] खोवे ॥ २४ ॥
वस्त्र पहिनावे तिलक लगावे।
करे रसोई भोग धरावे ॥ २५ ॥
जल अचवावे, हुक्का भरे।
पलँग बिछावे बिनती करे ॥ २६ ॥
पीकदान ले पीक करावे।
फिर सब पीक आप पी जावे ॥ २७ ॥

१—दौड़े। २—जहाँ से मिट्टी खोदी जाती है। ३—उबटन। ४—स्नान।
५—ऐंठन, मरोड़।

नाना बिधि की सेवा करे ।
नीच ऊँच जो जो आ पड़े ॥ २८ ॥
कोई टहल में आर[१] न लावे ।
जो गुरु कहें सो कार[२] कमावे ॥ २९ ॥

दूसरे धन की सेवा

धन की सेवा यह है भाई ।
गुरु सेवा में ख़र्च कराई ॥ ३० ॥
गुरु नहिं भूखा तेरे धन का ।
उनपै[३] धन है भक्ति नाम का ॥ ३१ ॥
पर तेरा उपकार करावें ।
भूखे प्यासे को दिलवावें ॥ ३२ ॥
उनकी मेहर मुफ़्त तू पावे ।
जो उनको परसन्न करावे ॥ ३३ ॥
उनका ख़ुश होना है भारी ।
सत्तपुरुष निज किरपा धारी ॥ ३४ ॥

तीसरे मन और बुद्धि की सेवा

दर्शन करे बचन पुनि सुने ।
फिर सुन सुन नित मन में गुने[४] ॥ ३५ ॥
गुन गुन छाँट लेय उन सारा ।
सार धार तिस करे अहारा[५] ॥ ३६ ॥

१—घृणा या लज्जा । २—काम, करनी । ३—उनके पास ।
४—विचारे । ५—हज़्म करे ।

कर अहार पुष्ट[1] हुआ भाई ।
जग भौ[2] लाज अब गई नसाई ॥ ३७ ॥
गुरुभक्ती जानो इश्क़ गुरू का ।
मन में धसा सुरत में पक्का ॥ ३८ ॥
पक पक घट में गाड़ा थाना[3] ।
थान गाड़ अब हुआ दिवाना[4] ॥ ३९ ॥
गुरु का रूप लगे अस प्यारा ।
कामिन पति, मीना जलधारा ॥ ४० ॥
सतसँग करना ऐसा चहिये ।
सतसँग का फल येही सही[5] है ॥ ४१ ॥

दोहा

जब सतगुरु परसन्न होय, देयँ नाम का दान ।
दीन होय हिरदे धरे, करे नाम पहिचान ॥ ४२ ॥

चौथे सुरत और निरत[6] की सेवा यानी अंतर अभ्यास

अंतरमुख बैठे एकान्त ।
अभ्यास करे पावे मन शान्त ॥ ४३ ॥
दो दल उलट गगन को धावे ।
मगन होय और नाद बजावे[7] ॥ ४४ ॥
जोति देख फिर देखे सूर[8] ।
चंद्र निहारे पावे नूर[9] ॥ ४५ ॥

१—दृढ़ । २—भय । ३—डेरा । ४—मग्न । ५—ठीक । ६—सुरत का निर्णय करने वाला अंग । ७—प्रकट करे । ८—सूर्य । ९—प्रकाश ।

सत्तलोक पहुँचे और बसे ।
सुन सुन धुन तब सूरत हँसे ॥ ४६ ॥
तब सतगुरु की जानी महिमा ।
जिन प्रताप बाजी धुन बीना ॥ ४७ ॥
अलख अगम और मिला अनामी ।
अब कहूँ धन धन राधास्वामी ॥ ४८ ॥

१–शब्द २५४

गुरू सँग जागन का फल भारी ॥ टेक ॥
सेवा मिले दरस पुनि पावे ।
बचन सुनत गुलज़ारी ॥ १ ॥
रोम रोम हर्षत चित मंदिर ।
अंदर खिलत कियारी ॥ २ ॥
शोभा अधिक सुगंधित बन बन ।
भँवर चक्र फुलवारी ॥ ३ ॥
इंद्री द्वार कँवल दल न्यारी ।
सूरत अग्र[1] चितारी ॥ ४ ॥
नैन बैन सतगुरु सुन निरखत ।
कँवल खिलत उजियारी ॥ ५ ॥
मारग छेक[2] झखत माया मन ।
निरत होत सुखियारी ॥ ६ ॥

१—आगे । २—रोक कर ।

सागर तोल बुंद[1] गति सिंधा[2] ।
अधर चढ़त पिउ प्यारी ॥ ७ ॥
कोमल धाम कँवल रवि[3] भूमी ।
भावन भार निकारी ॥ ८ ॥
श्यामा सरस नील गिरि सारी ।
धारी धरन उठा री ॥ ९ ॥
गुरु पद नाम अगम गम प्यारी ।
को कह सकत पुकारी ॥ १० ॥
सूरत चढ़ी अधर पद डंडा ।
अंडा फोड़ निहारी ॥ ११ ॥
मैं तो अजान मर्म नहिं जाना ।
राधास्वामी कीन दया री ॥ १२ ॥

१—शब्द २५५

भरमी मन को लाओ ठिकाने ।
प्रीति लगे गुरु चरन समाने ॥ १ ॥
दुबिधा[4] छूटे मति बदलाने ।
सुमिरन टेक तुम्हारी आने ॥ २ ॥
तुम बिन भर्म भुलाना भारी ।
जहाँ तहाँ की अटक सँभारी ॥ ३ ॥

१—सुरत । २—सिन्धु । ३—सूर्य । ४—संशय ।

बिन सतसंग बूझ नहिं आवे।
भाग बिना सतसंग न पावे ॥ ४ ॥
क्योंकर कहूँ ब्योंत[1] नहिं कोई।
तुम दयाल कुछ कहो बिलोई[2] ॥ ५ ॥
चरनामृत परशादी देना।
और उपाव नहीं क्या कहना ॥ ६ ॥
इतना काम सदा तुम करना।
तो कारज उसका भी सरना[3] ॥ ७ ॥
उसकी तरफ़ से आरत करो।
प्रीति प्रतीति चित्त में धरो ॥ ८ ॥
तब कुछ फल पावेगा थोड़ा।
तो मनमत जावे चित मोड़ा ॥ ९ ॥
राधास्वामी कहें समझाई।
करो आरती प्रीति लगाई ॥ १० ॥

२–शब्द २५६

यह सतसंग और राधास्वामी है नाम।
सरन आओ हे करमियों तुम तमाम ॥ १ ॥
जो सतगुरु से चाहो दया की नज़र।
सुरत और मन और मत भेट कर ॥ २ ॥

१—उपाय, अवसर। २—मथ कर यानी छाँट कर। ३—बनेगा।

ख़राब हैगी हालत सबों की यहाँ।
बचा चाहो सतगुरु सरन लो मियाँ ॥ ३ ॥
हटा करके संसै सरन में तू आ।
प्रीति और परतीत दृढ़ कर सदा ॥ ४ ॥
तू सतगुरु के दरवाज़े पर कर पुकार।
और उनके भक्तों का रस्ता बुहार ॥ ५ ॥
पतंगा सा सतगुरु पै आपे को वार।
सिंघासन की धूल अपने पलकों से झाड़ ॥ ६ ॥
कभी मेहर से शहद देवें तुझे।
मुनासिब समझ ज़हर देवें तुझे ॥ ७ ॥
तू चुप होके ले और सिर पर चढ़ा।
तू ख़ुश होके पी और कह यह सदा ॥ ८ ॥
कि धन धन हैं धन धन हैं सतगुरु मेरे।
उतारेंगे भौजल से बेशक परे ॥ ९ ॥

२–शब्द २५७

सुरतिया रटत रही।
पिया प्यारा नाम सही ॥ १ ॥
उमँग भरी सतसँग में आई।
मान लाज दोउ त्याग दई ॥ २ ॥
समझ बूझ गुरु बचन सँभारे।
गुरु चरनन की टेक गही ॥ ३ ॥

सार भेद ले करत कमाई।
शब्द अमी रस चाख रही ॥ ४ ॥
गुरु चरनन में किया बिस्वासा।
दिन दिन जागत प्रीति नई ॥ ५ ॥
गुरु दरशन अस प्यारा लागे।
जस माता को पुत्र कही ॥ ६ ॥
बिन दरशन ब्याकुल रहे तन में।
दरस पाय जब मगन भई ॥ ७ ॥
ऐसी लगन देख गुरु प्यारे।
निज चरनन की सरन दई ॥ ८ ॥
सरन पाय अब हुई अचिंती।
दिन दिन प्रेम जगाय रही ॥ ९ ॥
गुरु परताप सुरत अब चेती।
शब्द संग चढ़ अधर गई ॥ १० ॥
राधास्वामी चरनन जाय मिली अब।
महिमा उसकी कौन कही ॥ ११ ॥

२—शब्द २५८

सजन प्यारे मन की कहन न मान ॥ टेक ॥
यह जग में तोहि बहु भरमावे।
गुरुभक्ती में करता हान ॥ १ ॥

डाँवाँडोल रखे तेरे चित को।
दुख सुख चिंता संग भुलान ॥ २ ॥
कारज मात्र रखो जग आसा।
मान ईरषा तजो निदान ॥ ३ ॥
गहिरी प्रीति करो गुरु चरनन।
सुरत शब्द में नित्त लगान ॥ ४ ॥
गुरु का भय और भाव बसाओ।
गुरु सरूप का धारो ध्यान ॥ ५ ॥
सहज सहज तब मन बस आवे।
दीन ग़रीबी चित्त बसान ॥ ६ ॥
सुरत रँगीली प्रेम सिंगारी।
चढ़े अधर करें अमृत पान ॥ ७ ॥
राधास्वामी मेहर करें फिर अपनी।
चरनन में दें ठौर ठिकान ॥ ८ ॥

२–शब्द २५६

भाव धर करत सुरत गुरु सेव ॥ टेक ॥
या जग में कोइ मीत न साँचा।
याते सरन गही गुरुदेव ॥ १ ॥
दूर करें गुरु अपनी मेहर से।
संसै भरम और अहमेव ॥ २ ॥

मैं अति दीन नीच करमन की ।
हे गुरु चरन सरन मोहि देव ॥ ३ ॥
भौजल धार बहे अति गहिरी ।
तुम बिन को मेरी नइया खेव ॥ ४ ॥
राधास्वामी दयाल बचाय काल से ।
मोहि निरबल अपना कर लेव ॥ ५ ॥

२–शब्द २६०

बढ़त सतसंग अब दिन दिन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ १ ॥
जीव बहु लागे अब तरनन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ २ ॥
दया राधास्वामी क्या बरनन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ३ ॥
पड़े जो जीव उन चरनन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ४ ॥
छूट गया जन्म और मरनन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ५ ॥
परस गुरु पद हुए तारन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ६ ॥
सत्तपुर हंस गति धारन ।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ७ ॥

सरन में राधास्वामी निज धावन।
अहा हा हा ओहो हो हो ॥ ८ ॥

२–शब्द २६१

अतोला तेरी कर न सके कोइ तोल ॥ टेक ॥
जिन पर मेहर मिले सतगुरु से।
सतसँग में उन बनिया डौल ॥ १ ॥
उमँग सहित लागे अब घट में।
सुनत रहे नित अनहद बोल ॥ २ ॥
सुन सुन धुन स्रुत चढ़त अधर में।
काल करम का छूटा हौल ॥ ३ ॥
चढ़ चढ़ पहुँची सत्तलोक में।
दूर हुए सब माया खोल ॥ ४ ॥
राधास्वामी दरस मेहर से मिलिया।
पाय गई पद अगम अडोल ॥ ५ ॥

२–शब्द २६२

गुरु प्यारे की निंदा मत कर यार ॥ टेक ॥
निंदा कर क्यों पाप बढ़ावे।
बृथा उठावे करमन भार ॥ १ ॥

यह करतूत न जावे ख़ाली ।
दुक्ख सहे तू बारंबार ॥ २ ॥
जो कुल जीवन के हितकारी ।
तिन को औगुन धरे गँवार ॥ ३ ॥
अंत समय तेरे वे ही रच्छक ।
जस तस उन में लाओ प्यार ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर ले अबके ।
राधास्वामी लें फिर तोहि सँभार ॥ ५ ॥

२-शब्द २६३

गुरु प्यारे से प्यारी मत कर रोस ॥ टेक ॥
तू अनसमझ चेत नहिं लावे ।
भोगन संग रहे बेहोश ॥ १ ॥
गुरु हर दम तेरी दया बिचारें ।
हँगता ममता लेवें खोस ॥ २ ॥
मसलहत उनकी तू नहिं समझे ।
उनको लगावे उलटा दोष ॥ ३ ॥
अब ही चेत प्रीति करो उनसे ।
काम न आवे फिर अफ़सोस ॥ ४ ॥
धर परतीत सरन गहो दृढ़ कर ।
राधास्वामी करें तेरा सब बिधि पोष ॥ ५ ॥

२–शब्द २६४

गुरु प्यारे का ले तू नाम सँभार ॥ टेक ॥
राधास्वामी धाम का बाँध निशाना ।
राधास्वामी नाम सुमिर हर बार ॥ १ ॥
यही नाम निज नाम पिछानो ।
और नाम सब तज दो झाड़ ॥ २ ॥
इसी नाम का लेकर भेदा ।
सुन सुन धुन घट में चढ़ यार ॥ ३ ॥
प्रीति प्रतीति धार अब मन में ।
राधास्वामी नाम का कर आधार ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया संग ले अपने ।
सहज चलो भौसागर पार ॥ ५ ॥

२–शब्द २६५

गुरु प्यारे की सेवा लाग रहूँ ॥ टेक ॥
अचरज सतसँग मिला भाग से ।
प्रीति सहित गुरु बचन सुनूँ ॥ १ ॥
भेद पाय गुरु जुगत कमाऊँ ।
घट में नित धुन शब्द गुनूँ ॥ २ ॥
सतगुरु सेवा दुरलभ कहिये ।
उमँग उमँग में सेव करूँ ॥ ३ ॥

ध्यान धरत घट हुआ उजियारा ।
शब्द डोर गह गगन चढ़ूँ ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया मेहर मैं पाई ।
चरन सरन गह शांति धरूँ ॥ ५ ॥

२–शब्द २६६

काहे री चरन गुरु
भूली री सुरतिया ॥ टेक ॥
बिन गुरु चरन आसरा नाहीं ।
क्यों नहिं उन उर धारो री सुरतिया ॥ १ ॥
चेत सुनो अब सतसँग बचना ।
प्रीति लाय उन मानो री सुरतिया ॥ २ ॥
सेवा कर आरत कर गुरु की ।
सत्तपुरुष सम जानो री सुरतिया ॥ ३ ॥
दरशन कर उनका हित चित से ।
दृष्टि जोड़ स्रुत तानो री सुरतिया ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन बल हिये धर ।
काल करम को जारो री सुरतिया ॥ ५ ॥

२–शब्द २६७

करो री सुरत गुरु चरन अधारा ॥ टेक ॥
गुरु सम कोइ हितकारी नाहीं ।
उनकी दया का लेओ री सहारा ॥ १ ॥

बचन सुनाय सुधारें तुझको ।
भेद बतावें धुर दरबारा ॥ २ ॥
घर चालन की जुगत बतावें ।
सुरत शब्द का मारग सारा ॥ ३ ॥
भक्ती रीति सिखावें तुझको ।
जगत जाल से करें नियारा ॥ ४ ॥
परम पुरुष राधास्वामी चरनन में ।
मेहर से दें तोहि प्रेम करारा ॥ ५ ॥

२–शब्द २६८

जगत बिच भूल पड़ी ।
जिव कैसे के उतरे पार ॥ १ ॥
मन माया का ज़ोर घनेरा ।
जीव निबल कस करे सँभार ॥ २ ॥
अनेक भोग खैंचें वाहि चहुँ दिस ।
भरम रहा इंद्रियन की लार ॥ ३ ॥
कुटुँब जगत का बंधन भारी ।
कस निकसे जिव हुआ लाचार ॥ ४ ॥
बिना दया सतगुरु पूरे के ।
कभी न जग से होय उबार ॥ ५ ॥
वे दयाल जब जुगत बतावें ।
आप होयँ इसके रखवार ॥ ६ ॥

मन इंद्री तब सीधे चालें ।
जुगत कमावें हिये धर प्यार ॥ ७ ॥
तब निरमल होय चढ़े अधर में ।
राधास्वामी चरन निहार ॥ ८ ॥

२-शब्द २६९

गुरु बचन सँभारो,
क्यों मन सँग भरमइयाँ हो ॥ टेक ॥
मन की कहन ज़रा मत मानो ।
उसको पूरा बैरी जानो ॥
दृष्टि जोड़ स्रुत घट में तानो ।
अनहद शब्द सुनइयाँ हो ॥ १ ॥
सतगुरु हैं तेरे साँचे मीता ।
उन सँग काल करम दोउ जीता ॥
शब्दारस नित घट में पीता ।
चरनन सुरत धरइयाँ हो ॥ २ ॥
राधास्वामी दाता हुए सहाई ।
मेहर से मेरी सुरत जगाई ॥
चरनन में लिया जकड़ लगाई ।
उन सँग काज बनइयाँ हो ॥ ३ ॥

२—शब्द २७०

राधास्वामी सतगुरु पूरे ।
मैं आया सरन हज़ूरे ॥ १ ॥
मैं औगुनहारा भारी ।
तुम बख़्शो भूल हमारी ॥ २ ॥
मैं जग में बहु भरमाया ।
कहीं घर का पता न पाया ॥ ३ ॥
तुम कीन्ही दात अपारी ।
निज घर का भेद दिया री ॥ ४ ॥
स्रुत शब्द जुगत समझाई ।
सुमिरन और ध्यान बताई ॥ ५ ॥
जो करे कमाई हित से ।
और बचन सुने जो चित से ॥ ६ ॥
वह छिन छिन घट में धावे ।
और शब्द अमीरस पावे ॥ ७ ॥
गुरु मेरा भाग जगाया ।
मन सूरत शब्द लगाया ॥ ८ ॥
अब मन में रहूँ मगन मैं ।
शब्दारस पिऊँ अपन में ॥ ९ ॥
गुरु बचन लगें मोहि प्यारे ।
सुन सुन हुआ जग से न्यारे ॥ १० ॥

मेरे औगुन चित न बिचारे ।
गुरु कीन्ही दात अपारे ॥ ११ ॥
सतसंगत में जब रलिया ।
गुरु प्रेमी जन सँग मिलिया ॥ १२ ॥
गुरु भक्ती रीति पिछानी ।
निश्चय कर मन में मानी ॥ १३ ॥
सोई जन है बड़भागी ।
जिन हिरदे भक्ती जागी ॥ १४ ॥
राधास्वामी से करूँ पुकारी ।
मोहि दीजे भक्ति करारी ॥ १५ ॥
नित सुरत शब्द में भरना ।
चित रहे तुम्हारे चरना ॥ १६ ॥
माया से लेव बचाई ।
राधास्वामी नाम धियाई ॥ १७ ॥
गुरु आरत निसदिन गाऊँ ।
राधास्वामी चरन समाऊँ ॥ १८ ॥

२–शब्द २७१

पूरन भक्ति देव गुरु दाता ।
सुरत रहे तुम चरनन साथा ॥ १ ॥
मन बिच प्रीति बढ़ाओ दिन दिन ।
गुन गाऊँ राधास्वामी छिन छिन ॥ २ ॥

जग बिच दुख पाये बहुतेरे ।
हार पड़ा होय चरनन चेरे ॥ ३ ॥
काल करम मोहि नित भरमावत ।
मन इंद्री भोगन सँग धावत ॥ ४ ॥
तुम बिन और न रच्छक मेरा ।
लीजे मोहि बचाय सबेरा ॥ ५ ॥
भेद तुम्हारा अगम अपारा ।
सुरत शब्द मारग अति सारा ॥ ६ ॥
सो किरपा कर दिया मोहि दाना ।
घट में पाया नाम निशाना ॥ ७ ॥
अब यह बिनय सुनो मेरे साईं ।
राखो मन चरनन की छाईं ॥ ८ ॥
कर जल्दी खोलो घट द्वारा ।
देखूँ नभ में जोति उजारा ॥ ९ ॥
बंकनाल धस त्रिकुटी फोड़ूँ ।
काल करम का बल सब तोड़ूँ ॥१०॥
सुन्न शिखर चढ़ तन मन वारूँ ।
चंद्र चाँदनी चौक निहारूँ ॥११॥
गुरु बल जाउँ महासुन पारा ।
सुनूँ गुफा धुन सोहँग सारा ॥१२॥
सतपुर दरस पुरुष का पाऊँ ।
अलख अगम के पार चढ़ाऊँ ॥१३॥

राधास्वामी चरन निहारूँ ।
उमँग सहित उन आरत धारूँ ॥ १४ ॥
पूरन सरन प्रसादी पाऊँ ।
प्रेम सहित नित चरन धियाऊँ ॥ १५ ॥
उलट जगत में फिर चल आऊँ ।
जीवन को निज नाम सुनाऊँ ॥ १६ ॥
चरन ओट ले राधास्वामी गाओ ।
भाग आपना आज जगाओ ॥ १७ ॥
फिर औसर ऐसा नहिं पाओ ।
चौरासी का फेर बचाओ ॥ १८ ॥
जो कहना नहिं मानो मेरा ।
जन्म जन्म दुख सहो घनेरा ॥ १९ ॥
यासे आजहि काज बनाओ ।
राधास्वामी २ छिन छिन गाओ ॥ २० ॥
बड़े भाग पाई राधास्वामी सरना ।
भौसागर से सहजहि तरना ॥ २१ ॥

२–शब्द २७२

भर्म की ठेंठी निकालो कान से ।
तब लगाओ ध्यान अनहद तान से ॥ १ ॥
सुर्त के कानों से फिर तू शब्द सुन ।
शब्द कहो चाहे कहो अंतर बचन ॥ २ ॥

घट में जो उठती है रागों की सदा।
जो कहूँ मैं तुझसे हाल उसका ज़रा ॥ ३ ॥
जान मुरदों की उठें क़बरों से भाग।
ऐसा अंतर का है बाजा और राग ॥ ४ ॥
कान से चित दे सुनो आवाज़ को।
पर सुनाते हैं नहीं इस राज़ को ॥ ५ ॥
लाओ पाओं के तले तू आस्माँ।
शब्द ऊँचे देस का सुन सूरमाँ ॥ ६ ॥
जो निदा खैंचे है ऊँचे को तुझे।
जान वह धुन आई ऊँचे से तुझे ॥ ७ ॥
सुन के जो आवाज़ जागे कामना।
काल की आवाज़ है घर घालना ॥ ८ ॥
देख ले तू यों पयम्बर ने कहा।
आती है आवाज़ हक़ मुझको सदा ॥ ९ ॥
मुहर कानों पर तुम्हारे है लगी।
सुन नहीं सकते हो अनहद धुन कभी ॥ १० ॥
सुनता हूँ आवाज़े हक़ घट में सदा।
दिल को मेरे करती है पाक और सफ़ा ॥ ११ ॥
काटते और खोदते रस्ता रहो।
मरते दम तक एक दम ग़ाफ़िल न हो ॥ १२ ॥

२-शब्द २७५

आज हंगामये शादी का गरम हो रहा देखो हर जा ।
राधास्वामी की दया का करो सब शुक्र अदा ॥ १ ॥
हंस और हंसिनी खुश होके बधाई देते ।
अर्श से भी चली आती है खुशी की यह सदा ॥ २ ॥
राधास्वामी की दया से यह मुबारक जोड़ा ।
खुश रहे याद में चरनों के करे मन को फ़िदा ॥ ३ ॥

२-शब्द २७६

आज गुरु प्यारे के चरनों में झलकती है
अजब मेंहदी की लाली ॥ टेक ॥
देखो गुरु प्यारे के चरनों में अजब मेंहदी की लाली ।
हाथ भी सुर्ख़ हैं और मुखड़े की छबि देखी निराली ॥ १ ॥
हार और फूल लिये आती हैं सखियाँ घर से ।
मेंहदी हाथों में लगाती हैं सरब सूरत वाली ॥ २ ॥
लाल रँग छाय रहा गुरु के महल में चहुँ दिस ।
देख परकाश तले रह गई माया काली ॥ ३ ॥
सुर्त बन्नी का मिला भाग से गुरु बन्ने से जोड़ा ।
राधास्वामी की दया पाय के निज घर चाली ॥ ४ ॥

२-शब्द २७७

जुड़ मिल के हंस सारे दर्शन को गुरु के आये ।
बँगला अजब बनाया शोभा कही न जाये ॥ १ ॥

जब आरती सँवारी हुई धूमधाम भारी ।
निज भाग सब सरावत औसर अधिक सुहाये ॥ २ ॥
सब मिल के शब्द गावत भर भर पिरेम लावत ।
नइ नइ उमँग जगावत चहुँ दिस हरष समाये ॥ ३ ॥
घंटा और संख गाजें मिरदंग ढोल बाजें ।
सारँग सितार बीना धुन बाँसुरी जगाये ॥ ४ ॥
हुये गुरु दयाल परसन सब को लगाया चरनन ।
वारत रहे हैं तन मन राधास्वामी ओट आये ॥ ५ ॥

२–शब्द २७८

जो मेरे प्रीतम से प्रीति करे मोहि प्यारा लागे री ॥ १ ॥
जो मेरे प्रीतम की सेवा धारे वहि दिन दिन जागे री ॥ २ ॥
जो मेरे प्रीतम की महिमा गावे मोहि अधिक सुहावे री ॥ ३ ॥
जो मेरे प्रीतम के चरनन लागे वहि जग से भागे री ॥ ४ ॥
जो मेरे प्रीतम का रूप निहारे वहि छबि ताके री ॥ ५ ॥
जो मेरे प्रीतम का शब्द सँभारे गुरु दर झाँके री ॥ ६ ॥
जो मेरे प्रीतम की सरन सँभारे वहि घर जावे री ॥ ७ ॥
जो मेरे प्रीतम का नाम पुकारे सोइ निज धाम सिधारे री ॥ ८ ॥
भौजल से जो तरना चाहे राधास्वामी २ गावे री ॥ ९ ॥

३–शब्द २७९

चौपाई

निज गुन भाट जगत बहुतेरे ।
पर गुन ग्राहक नर न घनेरे ॥ १ ॥

जो छिन छिन निज गुन उच्चरहीं।
समय परे पर कछु नहिं करहीं ॥ २ ॥
ममता त्यागि करे जो करनी।
सपने अहँग चित्त नहिं धरनी ॥ ३ ॥
पर गुन जिन रवि उदय समाना।
निज आचरन खद्योत निमाना ॥ ४ ॥
सत्य साधु करनी तिन केरी।
ज्ञानमूरमय सुखद घनेरी ॥ ५ ॥
शशि सम सीतल बैन सुबैनू।
श्रवन परत उर पावत चैनू ॥ ६ ॥
बड़े भाग अस साध सुसंगू।
कलमल हरन मोह मद भंगू ॥ ७ ॥
अविरल भक्ति प्रेम मन लावन।
गुरु चरनन चित उमँग बढ़ावन ॥ ८ ॥

दोहा

बाचक ज्ञानी की सभा, जस खद्योत समाज।
क्रोध लोभऽहंकार मद, निंदा निश की साज ॥ ९ ॥
पक्षपात घन नीर कण, करत सदा आहार।
पर परकाश कुशल नित, स्वयं घोर अँधकार ॥ १० ॥

सोरठा

सत्य ज्ञान रवि तेज, उदय होतऽहँग रहित सो।
कृमिवत् तुच्छ अतेज, कुटिल कुमति कुत्सित गए ॥ ११ ॥

४-शब्द २८०

ऐसी चतुरता बलिहार ॥ टेक ॥
करत सेवा वारि तन मन तजत भोग बिकार ।
नित्य प्रीतम प्रेम राता दीन गुरु आधार ॥ १ ॥
तात मात असत्य जानत जानता जग जार[1] ।
देह गेह[2] असार मानत होत सबसे न्यार ॥ २ ॥
गुरु प्रसाद सप्रेम पावत जारि लोकाचार ।
चरन गुरु का धाय चूमत पियत अमृत धार ॥ ३ ॥
संत जन से नेह राखत नात जगत बिसार ।
साध ऐसे प्रेमी जन से धाय कीजे प्यार ॥ ४ ॥

४-शब्द २८१

जिनको प्रिय न परम गुरु प्यारे ॥ टेक ॥
तजिये तिनहिं कोटि बैरी सम यद्यपि प्रान अधारे ।
तिनके संग हानि जानि निज होइये तुरत नियारे ॥ १ ॥
पिता मातु बंधू सुत बनिता भक्ति बिघ्न जिन डारे ।
तिनहिं आदि से सबहिन तजिया जो जो गुरु आधारे ॥ २ ॥

४-शब्द २८२

परम गुरु परम पितु परम प्रिय नाथ मम
आदि पुरुष आदि हितु आनि जग तारिये ॥ १ ॥

१—जाल । २—घर ।

जुगन जुग भूलि तुम चरन प्रभु बाल सब।
हुये बेहाल जंजाल जग जारिये ॥ २ ॥
रहा जब अंध घोर सूझा नहिं कहीं ठौर।
अब तो मिले नाथ मोर देर क्यों धारिये ॥ ३ ॥
सार सिंध सत्य सूर अद्भुत अपार नूर।
कीनी जब जग ज़हूर दासन उबारिये ॥ ४ ॥
चरनन में सुरत जोड़ तन मन धन तोड़ फोड़।
देकर मोहि प्रेम डोर काज ही सँवारिये ॥ ५ ॥
सतसँग का परम चैन पाऊँ अब दिवस रैन।
हरखूँ सुन प्रेम बैन दया से निहारिये ॥ ६ ॥
पिंड जाल छोड़ इधर दौड़ें मन सुर्त अधर।
सहस गगन सुन्न सिखर सरवर चढ़ाइये ॥ ७ ॥
अटकूँ नहिं सिंध अंध काटो वह परम फंद।
भँवर देइ प्रेम पेंग सतपुर पहुँचाइये ॥ ८ ॥
अलख अगम अकह हुलास निरखूँ अद्भुत बिलास।
पाऊँ निज पद निवास महिमा क्या गाइये ॥ ९ ॥
माता पितु प्रान प्रिय प्रीतम सतगुरु दयाल।
राधास्वामी सद कृपाल आस सब पुराइये ॥१०॥

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२	१६	गगुरु	सतगुरु
८०	५	ोग	लोग
८५	६	ारा	भारी
१५१	१९	ापे	मोपै
१८४	८	लवार	फुलवार
१९८	२	ही	रही
२१७	३	लाया	फैलाया
३३६	१८	ोइ	कोइ
३६७	१९	ान	दीन